हुकुम सिंह बोरा राजकीय महाविद्यालय सोमेश्वर (अल्मोड़ा)

कौशिकी- एक जीवनधारा

वर्ष- 02 अंक- 02

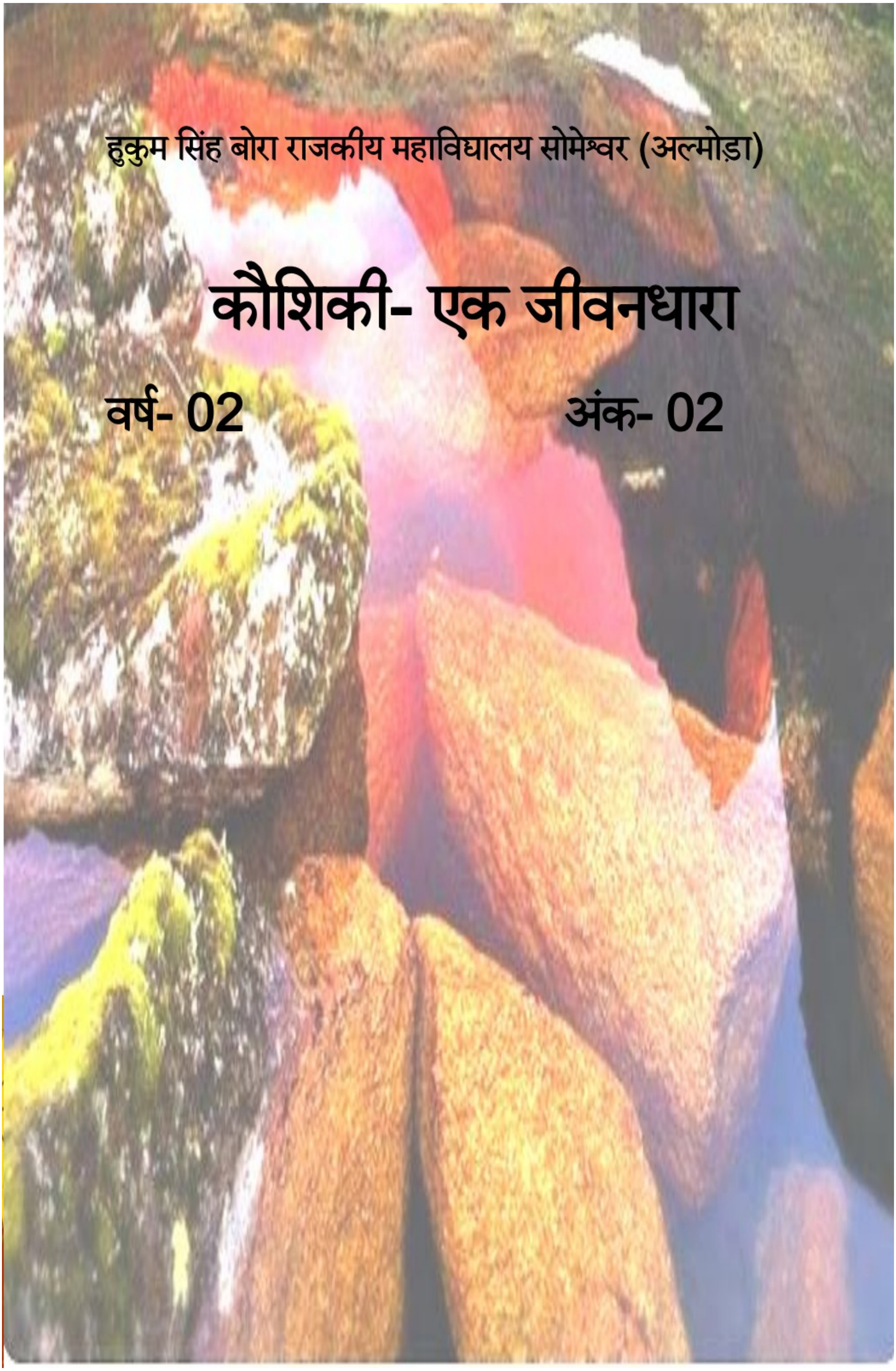

डा. धन सिंह रावत
मंत्री
उच्च शिक्षा, सहकारिता, प्रोटोकाल,
चिकित्सा स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा,
आपदा प्रबन्धन एवं पुनर्वास

उत्तराखण्ड सरकार

विधान सभा भवन
देहरादून
कक्ष सं. - 23
फोन : (0135) 2666410
फैक्स : (0135) 2666411

शुभकामना संदेश

प्रसन्नता का विषय है कि हुकुम सिंह बोरा, राजकीय महाविद्यालय सोमेश्वर (अल्मोड़ा), ई.मैग्जीन "कौशिकी, एक जीवन धारा" का प्रकाशन करने जा रहा है।

कोविड–19 के इस दौर में यह एक सराहनीय कदम है। महाविद्यालय पत्रिका जहां एक ओर विद्यार्थियों और शिक्षकों को रचनात्मक अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करती है, वहीं दूसरी ओर महाविद्यालय के बौद्धिक उन्नयन, चहुंमुखी विकास एवं पाठ्येत्तर क्रियाकलापों का भी प्रतिबिंब होती है।

मैं अपेक्षा करता हूँ कि यह ई. पत्रिका अभिभावकों, प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों तथा समाज के सभी वर्गों के लिए पठनीय एवं विचारणीय सामग्री प्रस्तुत करने में सहायक होगी।

मैं इस ई. पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े महाविद्यालय के प्राचार्य, प्राध्यापकों एवं छात्र–छात्राओं को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा इस ई.मैग्जीन के सफल प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनाएं ज्ञापित करता हूँ।

आपका,

(डॉ0 धन सिंह रावत)

(डॉ0 योगेश कुमार शर्मा)
प्राचार्य,
हुकुम सिंह बोरा,
राजकीय महाविद्यालय, सोमेश्वर,
जनपद अल्मोड़ा

रेखा आर्या
मंत्री
महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास,
पशुपालन, दुग्ध विकास एवं मत्स्य विकास

उत्तराखण्ड सरकार

विधान सभा भवन, देहरादून ।
कक्ष सं. 113, 114
फोन : 0135-2665111 (का.)
0135-2530151 (आवास)
फैक्स : 0135-2665880
मो. : 8395889380

पत्रांक 1711 कै.म./V/1/1/21
दिनांक 23/08/21

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हुकुम सिंह बोरा राजकीय महाविद्यालय सोमेश्वर, (अल्मोड़ा) द्वारा कोरोना वायरस (कोविड-19) के इस पैनडेमिक में छात्र-छात्राओं के सक्रियता हेतु ई-मैग्जीन **"कौशिकी – एक जीवनधारा"** का ऑनलाइन प्रकाशन किया जा रहा है।

मैं, हुकुम सिंह बोरा राजकीय महाविद्यालय सोमेश्वर, (अल्मोड़ा) द्वारा कोरोना वायरस (कोविड-19) के इस पैनडेमिक में छात्र-छात्राओं के सक्रियता हेतु महाविद्यालय ई-मैग्जीन **"कौशिकी – एक जीवनधारा"** के सफल प्रकाशन हेतु महाविद्यालय के प्राचार्य एवं आयोजकों को अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करती हूं। साथ ही मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि **"कौशिकी – एक जीवनधारा"** छात्र-छात्राओं के उत्कृष्ट भविष्य निर्माण में मील का पत्थर साबित होगी।

पुनः शुभकामनाओं सहित –

श्री योगेश कुमार शर्मा,
प्राचार्य,
हुकुम सिंह बोरा राजकीय महाविद्यालय,
सोमेश्वर (अल्मोड़ा)

शुभेच्छु
(रेखा आर्या)

अजय टम्टा
(पूर्व राज्य मंत्री भारत सरकार)
संसद सदस्य (लोक सभा)
03 अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)

1, जन्तर मन्तर रोड
नई दिल्ली-110 001
दूरभाष: 011-23721566
ई.मेल: ajaytamtamp03@gmail

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि हुकुम सिंह बोरा राजकीय महाविद्यालय सोमेश्वर अल्मोड़ा पैनडेमिक कोविड-19 में छात्र-छात्राओं के सकियता हेतु सतत प्रयत्नशीलता के कम में अपनी ई-मैग्जीन "कौशिकी-एक जीवनधारा" को ऑनलाइन प्रकाशित करने जा रहा है।

उपरोक्त ई-मैग्जीन के ऑनलाइन सफल प्रकाशन की कामना करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य, सभी शिक्षकों कर्मचारियों और छात्र-छात्राओं को ई-मैग्जीन के सफल प्रकाशन पर मेरी हार्दिक शुभकामनायें एवं बहुत-बहुत बधाई।

(अजय टम्टा)

डॉ0 योगेश कुमार शर्मा (प्राचार्य)
हुकुम सिंह बोरा राजकीय महाविद्यालय
सोमेश्वर अल्मोड़ा

कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल
स्लीपी हौलो, नैनीताल– 263001, उत्तराखण्ड, (भारत)
Kumaun University, Nainital,
Sleepy Hollow, Nainital- 263001, Uttarakhand, (India)
(Accredited "A" Grade by NAAC)

प्रो0 एन0के0 जोशी
कुलपति
Prof. N.K. Joshi
Vice- Chancellor

e-mail : vc@kunainital.ac.in
Tel : +91-5942-235068
Resi : +91-5942-236855
Mob.: +91-9411101144
Fax : +91-5942-235576

KU Nainital

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता है कि हुकुम सिंह बोरा, राजकीय महाविद्यालय, सोमेश्वर (अल्मोड़ा) द्वारा महाविद्यालय की ई-मैग्जीन **"कौशिकी – एक जीवनधारा"** का ऑनलाइन प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालय स्तर पर प्रकाशित होने वाली पत्रिका (Magazine) का मुख्य उद्देश्य शिक्षण संस्थान के विभिन्न घटकों - विद्यार्थियों, शिक्षकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों, भूतपूर्व छात्रों एवं समाज के लोगों को महाविद्यालय द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों के बारे में अवगत कराना, उन्हें प्रेरित करना तथा समाज में सौहार्दपूर्ण वातावरण का निर्माण करना है।

आज ऐसे विशिष्ट दौर में जब ज्ञान-विज्ञान की नित नई-नई शाखाएं जन्म ले रही हों, हमारे नौजवान छात्र-छात्राओं को भी तदनुरूप तैयारी करनी होगी। छोटे-छोटे आलेख ही सही, युवा कलम से निकले विचार निश्चित ही उनके बहुआयामी विकास में सहायक सिद्ध होंगे और उनकी वैचारिक सोच में वृद्धि होगी।

इस शुभ अवसर पर मैं महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित ई-मैग्जीन **"कौशिकी – एक जीवनधारा"** के सफल प्रकाशन के लिए महाविद्यालय परिवार एवं प्रकाशन मंडल के सभी सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

प्रो0 एन0 के0जोशी
कुलपति

सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा, उत्तराखंड

प्रो. नरेंद्र सिंह भंडारी
कुलपति

मो0– +91 9410501355
ईमेल– vcssju@gmail.com

संदेश

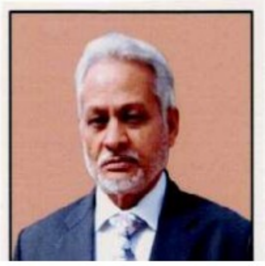

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हुकुम सिंह बोरा राजकीय महाविधालय, सोमेश्वर (अल्मोड़ा) द्वारा ई-मैग्जीन पत्रिका **"कौशिकी – एक जीवनधारा"** का प्रकाशन किया जा रहा है।

पत्रिकाएं विधार्थियों को रचनात्मक दिशा में ले जाने के लिए मूल्यवान साबित होती हैं। इसके माध्यम से वह समाज, भाषा-संस्कृति, साहित्य, इतिहास, पुरातत्व, पर्यावरण आदि के संदर्भ में अपने विचारों को प्रस्तुत करते हैं।

कोविड-19 के इस कठिन दौर में छात्रों को सकारात्मक दिशा देने के लिए रचनात्मक कार्य किये जाने महत्वपूर्ण हैं। **"कौशिकी –एक जीवनधारा"** ई –पत्रिका के माध्यम से उनमें सृजनात्मक क्षमता विकसित होगी और वह देश एवं समाज के उत्तरोत्तर विकास के लिए अपनी सक्रिय सहभागिता को सुनिश्चित कर सकेंगे,ऐसी मेरीआशा है।

मैं इस ई – पत्रिका के माध्यम से हुकुम सिंह बोरा राजकीय महाविधालय, सोमेश्वर (अल्मोड़ा) के प्राचार्य डॉ॰योगेश कुमार शर्मा, महाविधालय परिवार एवं पत्रिका के समस्त सदस्यों के प्रयासों की सराहना करता हूँ और स्मारिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

प्रो. (डॉ0) नरेंद्र सिंह भंडारी
कुलपति

उच्च शिक्षा निदेशालय, उत्तराखण्ड
हल्द्वानी – 263139 (नैनीताल)

Mail-Higherducation.director@gmail.com

डा0 कुमकुम रौतेला
निदेशक (उच्च शिक्षा)

अर्द्धशासकीय पत्रांक 1474/2020–21
दिनांक 31 जुलाई 2021

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि हुकुम सिंह बोरा राजकीय महाविद्यालय सोमेश्वर (अल्मोड़ा) उत्तराखंड द्वारा महाविद्यालय की ई-मैग्जीन "कौशिकी एक जीवनधारा" का ऑनलाइन प्रकाशन करने जा रहा है।

मुझे विश्वास है कि उक्त पत्रिका में शिक्षाविदों , विषय विशेषज्ञों एवं शोधार्थियों और छात्र-छात्राओं द्वारा उक्त विषय पर जो लेख एवं पत्र प्रस्तुत किए जाएंगे तथा महत्वपूर्ण सुझाव प्राप्त होंगे उनका उच्च शिक्षा के उन्नयन एवं विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहेगा।

मैं उक्त पत्रिका के प्रकाशन हेतु महाविद्यालय के प्राचार्य , संपादक मंडल , प्राध्यापकों, कर्मचारियों, शोधार्थियों एवं छात्र -छात्राओं को हार्दिक शुभकामनाएं देती हूं।

मंगलकामनाओं सहित

प्रोफे0 कुमकुम रौतेला

निदेशक {सेवानिवृत्त}

उच्च शिक्षा निदेशालय, उत्तराखण्ड
हल्द्वानी – 263139 (नैनीताल)

Mail-Higherducation.director@gmail.com

डा0 पी0के0पाठक
निदेशक (उच्च शिक्षा)

अर्द्धशासकीय पत्रांक 2083/2021–22
दिनांक 23 अगस्त 2021

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि हुकुम सिंह बोरा राजकीय महाविद्यालय सोमेश्वर,(अल्मोड़ा) मैग्जीन "कौशिकी एक जीवनधारा" का ऑनलाइन प्रकाशन करने जा रहा है। कोरोना वायरस के इस भयावह दौर में महाविद्यालय का यह प्रयास छात्र-छात्राओं को क्रियाशील बनाए रखने की सार्थक पहल है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि महाविद्यालय की यह ई-पत्रिका छात्र-छात्राओं के ज्ञानवर्धन एवं मार्गदर्शन के लिए साथ ही उनकी रूचि में गुणात्मक अभिवृद्धि करेगी। साथ ही शिक्षा से जुड़े सभी महत्वपूर्ण विषय जो उच्च शिक्षा के उन्नयन में योगदान दे सकें ऐसे समस्त विषयों का समावेश किया गया होगा।

"कौशिकी-एक जीवनधारा" के ऑनलाइन प्रकाशन के लिए महाविद्यालय के प्राचार्य, संपादकमंडल, प्राध्यापकों, कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

मंगलकामनाओं सहित

(डा0 पी0के0पाठक)

संरक्षक - प्रो0 योगेश कुमार शर्मा

प्राचार्य

परामर्श मंडल- डा0 बलदेव राम

श्री जगदीश प्रसाद

वरिष्ठ संपादक - डा0 सी पी वर्मा

संपादक - डा0 अमिता प्रकाश

संपादन सहयोग - श्री संजू

डा0 राकेश पांडे

अपर्णा सिंह

सुश्री पूजा आर्या

डा0 विपिन चंद्र

सुश्री हिमाद्रि आर्या

सामग्री सहयोग - डा0 कंचन वर्मा

डा0 पुष्पा भट्ट

डा0 आंचल सती

डा0 भावना

डा0 नीता टम्टा

तकनीकी सहयोग- डा0 शालिनी टम्टा

डा0 भानुप्रताप दुर्गापाल

श्री विनोद मेहरा

श्री रजनीश कुमार

साज-सज्जा सहयोग- डा0 अर्चना जोशी

डा0 प्राची टम्टा

डा0 जी एस धामी

श्रीमती मीना नेगी

विषय -सूची

1- प्राचार्य की कलम से *प्रोफेसर योगेश कुमार शर्मा* 1-3

2- संपादकीय *डा0 अमिता प्रकाश* 4-6

3-अदम्य साहस और संघर्ष की प्रतिमूर्ति- हुकुम सिंह बोरा *पवन पांडे* 7-9

4- कोरोना महामारी के दौरान शिक्षा व्यवस्था *कुमारी आंचल* 10-11

5-पहाड़ों की हसीन वादियां (कविता) *निधि भंडारी* 12

6- ग्रामीण धर्म का बदलता स्वरू *डॉo पुष्पा भट्ट* 13-15

7-मजदूर औरतें कविता नही लिखतीं (कविता) *अपर्णा सिंह* 16-17

8- नशाखोरी तथा युवा वर्ग *ज्योति बोरा* 18-21

9- तुम भी बदल जाओ (कविता) *गुंजा मिराल* 22

10- शिक्षा का महत्व *डॉ0 गोविंद सिंह धामी* 23-24

11- सोच (कविता) *दीपिका बिष्ट* 25

13-आस्था का केंद्र गणनाथ मंदिर *नेहा बजेठा* 26-28

14- निखरने का वक्त आ रहा है (कविता) *मेघा भाकुनी* 29

15- बी कॉम के बाद क्या करें' *डॉ0 शालिनी टम्टा* 30.32

16. पहला दिन *डॉ0 विपिन चन्द्र* 33-36

17- रमणीय घाटी सोमेश्वर *संदीप* 37-38

18. गाथा एक स्वतंत्रता सेनानी की डा0 कंचन वर्मा 39

19 .माता पिता की सेवा *दीपा नेगी* 40-41

20- प्रकृति और हम *दीपा राना* 42

21- जैव विविधता एवं संरक्षण *श्री संजू* 43-50

22- भय *धीरज चंद जोशी* 51-53

23- खुश हूं (कविता) *गुंजा मिराल* 54

24- भूगोल में रोजगार की संभावनाएं *डॉ0सी0पी0वर्मा* 55.60

25- कैसी महामारी आई *विपेंद्र कुमार* 61

26- महिलाओं के विरुद्ध अपराध सम्बन्धी कानून *डा0 अर्चना जोशी* 62- 72

27- कोरोना का साया कविता पाटनी 73

28- ग्रामीण भारत में रोजगार के अवसर *विपेंद्र कुमार* 74-79

29- मां (कविता) *लीला राना* एवं *पुष्पा राना* 80

30- भारतीय अर्थव्यवस्था पर कोरोना संक्रमण का प्रभाव

श्रीमती नीता टम्टा 81- 86

31- पर्यावरण संरक्षण (कविता) *मंजू राणा* 87

32- सकारात्मक सोच *प्रीति* 88-90

33- मेरा गांव मेरा बचपन (कविता) *निधि भण्डारी* 91

34- बस एक कदम और... (कविता) *मोनिका* 92

35- पौल्ट लगाना *डॉ0 भावना उपाध्याय* 93-95

36- जो भी है चलता जाता है (कविता) *आशा भाकुनी* 96

37- मोदी सरकार का मंत्रालय *विनीता गोस्वामी* 97-102

38- उत्तराखंड- वर्तमान मंत्रीमंडल *विनीता गोस्वामी* 103-104

39- काश जिंदगी सचमुच एक किताब होती (कविता) *अनीता भाकुनी*

105

40- कॉलेज का पहला दिन *रुपाली रावत* 106-107

41- मेरी क्लास (कविता) *तनुजा पांडे* 108-109

42- पर्यावरण संरक्षण का संदेश देता लोक पर्व हरेला *सूरज सिंह नयाल*

110-113

43- महिला सशक्तिकरण एवं विभिन्न योजनाएं *तनुजा पांडे* 114-117

44- Creativity and Career Guidance *Dr Rakesh Pandey* 118-122

45- Days of my Childhood (Poem) *Deepak Singh Bajeli* 123

46- Quantum Computing *Dr. Anchal Sati* 124-128

47- Books Are Our Best Friends (Poem), *Rupali Rawat* 129

48- RELEVANCY OF SWAMI VIVEKANANDA IDEOLOGY FOR YOUTH IN MODERN INDIA *Himadri Arya* 130-136

49-IMAGINATION (Poem) *Deepak Singh Bajeli* 137

50- INSECT AS A POLLINATOR *Dr.Prachi Tamta* 138- 139

51- Positive Life *Kanchan Bhakuni* 140

52- बच्चों का रचनासंसार 141-143

53- महाविघालय की झलकियां- कैमरे की नजर से 144-148

54- महाविद्यालय द्वारा आयोजित वेबिनार 149

55- RUSA Inspection 150

56- महाविद्यालय समाचारों के झरोखे से 151-153

57- छपते-छपते 154

प्राचार्य की कलम से

सृजनात्मकता मानव की मूलभूत प्रवृत्तियों में से एक है। वृहद् रूप से देखा जाए तो हर व्यक्ति अपने संदर्भों एवं अपने अर्थों में सृजनशील होता है। सृजनशीलता का अक्षर ज्ञान से बहुत अधिक लेना देना नहीं है। निरक्षर व्यक्ति भी अपने संदर्भों में उतना ही सृजनशील हो सकता है जितना कि एक साक्षर व्यक्ति। सर्जनशीलता दरअसल एक मानसिक शक्ति है जो सभी मनुष्यों में कम या अधिक रूप से पाई जाती है। जिनमें यह शक्ति अधिक विकसित होती है वे मानव इतिहास में कुछ अनूठा रचकर समाज का कल्याण करते हैं। इस सृजनशीलता को यदि पल्लवित- पुष्पित होने के लिए अनुकूल वातावरण और अवसर प्रदान किये जाएं तो वह समाज में परिवर्तन को जन्म दे सकती है। महाविद्यालयों में जिस आयु वर्ग का युवा आता है वह अपनी शक्तियों के चरम पर होता है। यही वह समय है जब उसकी कच्ची मिट्टी, जो कुछ-कुछ आकार ग्रहण कर चुकी होती है उस पर प्रयास की एक अंतिम चोट कर उसे सही मार्ग पर ले जाया जाए। यह भी सभी भली भांति जानते हैं कि युवा शक्ति का भंडार होता है ,और यदि उस शक्ति को 'चैनेलाइज' कर दिया जाए तो वह मानव कल्याण के कई द्वार खोल देती है, किंतु यदि वह विश्रृंखलित हो गई तो विनाश के तूफान को लाने की भी क्षमता रखती है।

कोविड-19 के इस भयावह दौर में जब जीवन पर चारों ओर से संकट गहराता जा रहा है, और जीवन रक्षा का एकमात्र उपाय किसी सरीसृप की भांति अपने- अपने गृह- बिलों में छुपे रहना हो गया है, तब हमारा युवा बहुत असहज, हताश और विवश नजर आ रहा है। उसकी ऊर्जा जो मौजमस्ती के अतिरिक्त इस समय अपने भविष्य निर्माण की योजनाओं में व्यय होती थी वह इन विकट परिस्थितियों में सिर्फ और सिर्फ चिंताओं पर व्यय हो रही है। दीन-दुनिया से कटा हुआ युवा "कल क्या होगा?" की अबूझ पहेली से जूझता नजर आ रहा है। ऐसे समय में उसकी ऊर्जा को उसकी सोच को एवं उसकी क्षमता को एक सही दिशा में मोड़ने की जिम्मेदारी जितनी माता पिता एवं परिवार पर है उतनी ही शिक्षकों एवं महाविघालय पर भी, क्योंकि इस उम्र में हमारा छात्र परिवार व मित्रों के अतिरिक्त यदि किसी से सर्वाधिक लगाव महसूस करता है तो वह है उसका महाविघालय परिवार। एक जिम्मेदार एवं जागरूक अभिभावक की भांति महाविघालय परिवार अपने छात्र छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु प्रतिबद्ध है। इसी प्रतिबद्धता को ध्यान में रखते हुए महाविघालय ने कोशिश की है कि ऑनलाइन शिक्षण के अतिरिक्त वह छात्र छात्राओं को संभाषण और सीखने के विभिन्न अवसर प्रदान करे। इसके लिए महाविघालय समय-समय पर विभिन्न कार्यक्रम जैसे - विषय आधारित साप्ताहिक वेबिनार, विभिन्न विषयों में राष्ट्रीय वेबीनारों का आयोजन, विभिन्न राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय दिवसों जैसे पर्यावरण दिवस, योग

दिवस, हरेला एवं प्रेमचंद जयंती आदि पर अनेकों प्रतियोगिताओं का आयोजन कर उनके ज्ञानात्मक विकास के साथ-साथ संवेगात्मक विकास के अवसर प्रदान कर रहा है। इसी क्रम में महाविद्यालय ने ऑनलाइन ई-मैग्जीन के प्रकाशन का कदम उठाया है। मेरा मानना है कि महाविद्यालय का यह प्रयास छात्र छात्राओं को जहां एक ओर जीवन के इस संघर्ष से जूझने की क्षमता प्रदान करेगा, वहीं उनमें जीवन के प्रति आशा और उत्साह का संचार भी करेगा। पत्रिका सभी विद्वज्जनों को पसंद आएगी ऐसी आशा है। 'निरंतर सुधार के साथ विकास' हमारा उद्देश्य है, और इस उद्देश्य की प्राप्ति में आपके सुझाव एवं मार्गदर्शन की अपेक्षा रहेगी।

प्रोफेसर योगेश कुमार शर्मा

प्राचार्य

हुकुम सिंह बोरा राजकीय

महाविद्यालय सोमेश्वर (अल्मोड़ा)

संपादकीय

रचनाधर्मिता मनुष्य को जीवन व सत्य के कटु यथार्थ से उठाकर शिवम् व सुंदरम् की भाव भूमि पर ले जाने का कार्य करती है। मनुष्य ने आदिम युग से अपनी रचनाधर्मिता का परिचय देते हुए इस पृथ्वी को जीवन जीने लायक बनाया है। आदम युगीन उसके पाषाण उपकरण रहे हों या नवीनतम 'सोफिस्टिकेटेड' उपकरण, सब मनुष्य की रचनाधर्मिता के ही परिचायक हैं। मनुष्य की यह रचनाधर्मिता उसकी मूलभूत आवश्यकताओं से लेकर विलासिता के क्षेत्र में हुए क्रांतिकारी परिवर्तनों में परिलक्षित होती है।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य बड़ा भयावह है और मनुष्य की जिजीविषा के दुर्दम पक्ष ने अपना वीभत्स रूप दिखाना शुरू कर दिया है। जीने के लिए आवश्यकताओं को जुटाते, सजाते, संवारते मनुष्य कब प्रकृति के अपने अन्य सहचरों के लिए खतरा बन गया, उसे स्वयं भी एहसास नहीं हुआ। जब एहसास हुआ तब स्वार्थ के दलदल में धंसा वह, वहां से बाहर निकलने की सारी आशाएं खो सा चुका है। एक ओर ग्लोबल वार्मिंग के बढ़ते खतरे सिर पर धमक पड़े हैं तो, वहीं दूसरी ओर कोरोना वायरस ने मनुष्य को उसकी सीमाएं दिखाने का कार्य भी किया है। मनुष्य सीमाओं से बाहर होता जा रहा है और अपनी मनुष्यता को छोड़कर सर्वशक्तिमान

होने का भाव उसमें गहराने लगा है। ऐसे समय में यह आवश्यक हो जाता है कि हम स्वयं संभलते हुए, अपनी आने वाली पीढ़ी को इस भाव से बचाने के लिए उचित मार्ग दिखाएं। आने वाली पीढ़ी को मार्ग दिखाने के अनेकों रास्ते हो सकते हैं, और एक रास्ता है उनमें सुकोमल भावनाओं का विकास, सहृदयता का विकास, यांत्रिकता से परे मानवीय गुणों का विकास तथा मानव जाति के समस्त कल्याणकारी संवेगात्मक पक्षों से उनका परिचय करवाते हुए, दबे हुए उनके कल्याणकारी संवेगों को उभारना। इन सब लक्ष्यों की पूर्ति हेतु 'सृजना' एक प्रभावशाली उपकरण हो सकती है। सृजन करना अपने आप को दोहराने जैसा ही होता है। यांत्रिकी सृजन को छोड़कर यदि मानवीय सृजन की बात की जाए तो, उसमें सृजक का व्यक्तित्व निश्चित रूप से झलकता है। इस अर्थ में सृजना को व्यक्तित्व का दर्पण भी कहा जा सकता है। सृजना का यह दर्पण मनुष्य को उसके गुणों के साथ साथ अवगुणों को भी दिखाता है। यह जरूर है कि आत्ममुग्धता इस दर्पण के अवलोकन में भी वैसे ही बनी रहती है जैसे सामान्य दर्पण को देखते समय। किंतु, फिर भी एक प्रयास तो किया जाना ही चाहिए। इसी प्रयास के तहत हुकुम सिंह बोरा राजकीय महाविद्यालय सोमेश्वर ने ऐसे समय में ही मैगजीन प्रकाशन के बारे में सोचा जब छात्र छात्राओं के मन में अनिश्चय की धुंध गहराने लगी है। इस गहरी धुंध की घुटन से बचने का एकमात्र तरीका है मस्तिष्क को रचनात्मक कार्यों में लगाकर

नकारात्मकता से दूर रखा जाए। मस्तिष्क रचनात्मक रूप से क्रियाशील रहता है तो कई समस्याओं पर विजय प्राप्त कर ही लेता है।

महाविघालय की पत्रिका "कौशिकी-एक जीवन धारा" का प्रवेशांक विगत सत्र में ही प्रकाशित हुआ है। सृजन की इसी जीवनधारा को आगे बढ़ाते हुए तथा परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए वर्तमान में इसके द्वितीय अंक को फिलहाल ई-मैग्जीन के रूप में आपके समक्ष रखते हुए महाविघालय परिवार गौरवान्वित महसूस कर रहा है। पूरा प्रयास रहा है कि छात्र-छात्राओं को सक्रिय कर कुछ ना कुछ लिखने या रचने को प्रेरित किया जाए और इस बहाने निरंतर संवाद कायम करते हुए उन्हें भावात्मक संबल प्रदान किया जाए। पत्रिका में समाहित विषय छात्र छात्राओं के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए व्यक्तित्व के लगभग सभी पक्षों पर केंद्रित हैं। भावात्मकता व रचनाधर्मिता को प्रदर्शित करती कविताएं व कहानियां हैं तो ज्ञानात्मक पक्ष के संवर्धन हेतु विभिन्न तथ्यात्मक जानकारियां भी इसमें समेटने का प्रयास किया गया है। विवेकानंद एवं मंगल पांडे जैसे युगदृष्टा-युग सृष्टा युवकों के बारे में लेख जहां युवाओं के चारित्रिक विकास में योगदान देंगे वहीं "बीकॉम के बाद क्या करें?" या "भूगोल विषय में आगे की राहें" जैसे लेख छात्र छात्राओं को उनके करियर के प्रति भी सचेत करेंगे।

डा0 अमिता प्रकाश

असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी

"अदम्य साहस और संघर्ष की प्रतिमूर्ति- हुकुम सिंह बोरा"

उत्तराखंड की भूमि रत्नगर्भा है। इसके गर्भ से अनेकों रत्नों ने जन्म लेकर समय-समय पर इसके मस्तक को अपने उज्ज्वल कार्यों से ऊंचा किया है। उत्तराखंड में उत्पन्न ऐसे ही रत्नों में से एक हैं-हुकुम सिंह बोरा। अल्मोड़ा जनपद के ऐतिहासिक, पौराणिक एवं प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर छोटे से कस्बे सोमेश्वर में जन्मे स्वर्गीय श्री हुकुम सिंह बोरा का नाम

देश के स्वतंत्रता आंदोलन में सम्मिलित स्वतंत्रता सेनानियों में आदर से लिया जाता है ।सोमेश्वर के ग्राम फल्या, मल्ला खोली मे सन् 1917 को स्वर्गीय श्री प्रेम सिंह बोरा जी के घर में जन्में हुकुम सिंह बोरा जी का बचपन बड़ा ही संघर्षशील रहा। आप बचपन से ही संघर्षशील, ओजस्वी एवं स्वतंत्रता के विचारों से ओतप्रोत रहे। आप की प्रारंभिक शिक्षा सोमेश्वर से ही हुई। प्रारंभिक शिक्षा के पश्चात आपने 6 जनवरी 1938 को तत्कालीन 419 हैदराबाद डिविजन को सैनिक के रूप में ज्वाइन किया। इसके पश्चात् द्वितीय विश्व युद्ध में ब्रिटिश सेना की ओर से लड़ते हुए आपने अदम्य साहस एवं

वीरता के बल पर एक अलग पहचान बनाई। देश की उथल-पुथल एवं हालातों से आप परिचित ही नहीं थे, बल्कि विचलित भी रहते थे। इसी बीच जब नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने "आजाद हिंद फौज" का गठन किया तो राष्ट्र के प्रति अपने प्रेम एवं कर्तव्य की आवाज सुनकर आप ब्रिटिश सेना को छोड़कर आजाद हिंद फौज में सम्मिलित हो गए। यहीं से आपका स्वतंत्रता के लिए संघर्ष शुरू होता है। "तुम मुझे खून दो,मैं तुम्हें आजादी दूंगा" के ओजस्वी नारे से प्रेरित होकर स्वतंत्रता संग्राम के आंदोलन में अपने सक्रिय योगदान के लिए हुकुम सिंह बोरा जी कई बार जेल गए। 1943 से 1945 तक 2 वर्ष का कठोर कारावास आपने कोलकाता जेल में झेला। सन 1946 में आपको कोलकाता के कैंप जेल से निर्वस्त्र रिहा किया गया। जेल की कठोर यातनाओं एवं मानसिक प्रताड़नाओं के कारण आपकी मानसिक स्थिति पर बुरा प्रभाव पड़ा। सन 1938 से 40 तक अपने संबंधियों और परिजनों से किसी भी प्रकार का संपर्क न हो पाने के कारण आपके परिवार ने आप को मृत मान लिया था, किंतु जब सन 1946 में रिहा होने के पश्चात आप सोमेश्वर स्थित अपने गांव मल्ला खोली पहुंचे तो परिवार वाले भी यकायक आप को पहचान नहीं पाए। वास्तविकता से अवगत होने के बाद परिवार जनों द्वारा आपकी देखभाल की गई और प्रेम तथा सौहार्द के साथ आपको वापस जीवन में लाया गया। देश प्रेम का

जुनून, जीवन के अंतिम दिनों तक आपमें बना रहा। अपने क्षेत्र के बच्चों में आजादी की अलख आप जगाते रहे। स्कूलों में जा-जाकर बच्चों को आजादी के महत्व से अवगत कराने वाला यह स्वतंत्रता संग्राम सेनानी 28 दिसंबर 1989 को रानीखेत के समीप हुए बस अग्निकांड की वजह से हमसे हमेशा के लिए विदा हो गया।

"शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले,

वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा"

निश्चित रूप से हुकुम सिंह बोरा न सिर्फ सोमेश्वर या उत्तराखंड की बल्कि देश की विभूति हैं, जिन्होंने इस देश के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया। ऐसे महापुरुष को हम अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं।

नाम-पवन पांडे

कक्षा-बी.ए.पंचम सेमेस्टर

कोरोना महामारी के दौरान शिक्षा व्यवस्था

दुनिया भर में शिक्षा पर महामारी के बढ़ते प्रभाव को मापने के लिए संयुक्त राष्ट्र ने एक नया ट्रैकर जारी किया है, जिसे जॉन्स हापकिंस यूनिवर्सिटी, वर्ल्ड बैंक और यूनिसेफ के आपसी सहयोग से बनाया गया है। यदि पिछले 1 साल की बात करें, तो कोरोना महामारी के कारण लगभग 160 करोड़ बच्चों की शिक्षा पर सीधे सीधे असर पड़ा है। यदि महामारी से पूर्व के परिदृश्य को देखें तो हम पाते हैं कि, शिक्षा पर संकट तो इस महामारी से पहले भी काफी विकट था। इस महामारी से पहले भी दुनिया भर में शिक्षा की स्थिति बहुत ज्यादा बेहतर नहीं थी। उस समय भी प्राथमिक और माध्यमिक स्कूल जाने योग्य 35. 8 करोड बच्चे स्कूल से बाहर थे । वहीं मध्यम आय वाले देशों में करीब 53 फ़ीसदी बच्चों को शिक्षा नहीं मिल रही थी। जिसका मतलब है कि 10 वर्ष से बड़े करीब आधे बच्चे सामान्य सी चीजों को भी लिख पढ़ नहीं सकते थे। इस महामारी ने शिक्षा पर छाए इस संकट को और भी अधिक बढ़ा दिया है, जिसका असर हमारी आने वाली पीढ़ी पर लंबे समय तक रहने की संभावना है। अप्रैल 2020 में जब महामारी और उसके कारण हुए लॉकडाउन के

चलते स्कूलों को बंद किया गया था तब उसका असर 94 फ़ीसदी छात्रों पर पड़ा था जिनकी संख्या करीब 160 करोड़ थी। अनुमान है अभी भी करीब 70 करोड़ बच्चे अपने घरों से ही शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

यूनिसेफ के चीफ ऑफ एजुकेशन रॉबर्ट जेनकिंस के अनुसार -"दुनिया भर में वैक्सीन देने की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है, अभी भी दुनिया के लाखों करोड़ों बच्चे इस महामारी की समस्या से ग्रस्त हैं ऐसे में यह जरूरी है कि स्कूलों को जल्द से जल्द खोलने के प्रयास किए जाएं।"

किंतु स्कूलों को खोलने से पहले यह देखना जरूरी है कि यदि एक बार स्वास्थ्य कर्मियों और उच्च जोखिम वाली आबादी को टीका लगा दिया जाए तो शिक्षकों को भी वैक्सीन देने में प्राथमिकता देनी चाहिए। जिससे हम अगली पीढ़ी के भविष्य को सुरक्षित कर सकें ।

नाम-कुमारी आंचल

कक्षा-बी.ए.प्रथम सेमेस्टर

पहाड़ों की हसीन वादियां

पहाड़ों की हसीन वादियां
किसी जन्नत से कम नहीं,
पहाड़ों की ये ऊंचाइयां
किसी मन्नत से कम नहीं।।
नदियों का कलकल बहना
किसी गुंजन से कम नहीं।
गर्मियों मे हवा का बहना
किसी भी सुकून से कम नहीं।
बर्फीली चादर में पेड़ों की पंक्तियां
हमारी अभिलाषाओं से कम नहीं।
धारे-नौलों का ठंडा पानी,
किसी अमृत से कम नहीं ।
बारिश के बाद धूप में नहाई किरनें
किसी भी जन्नत से कम नहीं।।

नाम- निधि भंडारी
कक्षा- एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर

"ग्रामीण धर्म का बदलता स्वरूप"

परिवर्तन चिरंतन है। परिवर्तन सीमाओं से बंधा नहीं है। वर्तमान में ग्रामीण समाज की संरचना ,व्यवस्था ,संगठन ,संस्थाएं आदि अपने मूल स्वरूप से हटती जा रही हैं । इसका मुख्य कारण ग्रामीण समाज में नगरीय सभ्यता एवं भौतिक संस्कृति का तीव्रता से प्रवेश होना है। गांवों में

शिक्षा का विकास हो रहा है । प्रौद्योगिकी और विज्ञान से निर्मित वस्तुएं कृषि कार्य में प्रयोग की जाने लगी है, औद्योगीकरण का भी गहरा प्रभाव गांव में दिख रहा है, वास्तविकता तो यह है कि नगर गांव में प्रवेश कर गए हैं। इन सभी चीजों का प्रभाव ग्रामीण धर्म पर पड़ा है। ग्रामीण धर्म लोक धर्म का ही दूसरा नाम है । लिखित रूप में ग्रामीण धर्म की कोई आचार संहिता नहीं है और न ही इसकी कोई व्याख्या की गई है। ग्रामीण धर्म लोक आचरण में झलकता है। ग्रामीण मान्यताएं ,विश्वास एवं रीति-रिवाज ग्रामीण धर्म की आधारशिला है । ग्रामीण धर्म या लोक धर्म लोक संस्कृति से बना हुआ है और लोक संस्कृति भारतीय संस्कृति की पहचान को जीवित रखती है । किसी भी देश की लोक संस्कृति को देखकर यह

अनुमान लगाया जा सकता है कि उस देश के मूल्य ,विश्वास, रीति-रिवाज आदि क्या है। धर्म का मूल स्रोत ग्रामीण समाज है। और यह लोक संस्कृति के कण-कण में व्याप्त है । ग्रामीण समाज में छोटे-बड़े उत्सवों में लोक धर्म की झलक सहज ही दिखलायी पड़ती है । इस प्रकार लोक संस्कृति की अनंत अमर बेल ग्रामीण धर्म मे समाहित है, जो कि ग्रामीण समाज में व्यक्तियों को एक सूत्र में बांधे हुए हैं । इसके साथ ही ग्रामीण धर्म का प्रकृति के साथ भी गहरा संबंध है । गांवों में पूजा की सामग्री प्रकृति से प्राप्त वस्तुएं होती हैं , जो कि धार्मिक आयोजनों में पूजनीय मानी जाती हैं । अतः ग्रामीण धर्म ने मानव को प्रकृति से प्रेम करना भी सिखाया है ।

वर्तमान में ग्रामीण समाज का परंपरागत ढांचा परिवर्तित होता जा रहा है तो हम यह कैसे कह सकते हैं कि ग्रामीण धर्म से जुड़े विश्वास मान्यताएं मूल्य आस्थायें आदि परिवर्तित नहीं होंगी । जाहिर है समय के साथ ग्रामीण धर्म भी अपनी जड़ों से हटता जा रहा है । गांव आधुनिक बनने की दौड़ में शामिल हो गए हैं । इसके साथ ही साथ राजनीतिक

उथल-पुथल ,राजनीतिक चेतना और सरकार की अनेक ग्रामोंमुखी योजनाओं ने गांव के परंपरागत स्वरूप को बदल दिया है। ग्रामीण समाज नये रूप में जन्म ले रहा है । ग्रामीण व्यक्तियों में नगरीय चेतना का प्रभाव कुछ ऐसा पड़ रहा है कि वे धर्म संबंधी बातों को अब अंधविश्वास कहकर नकारने लगे हैं।वे धार्मिक उत्सवों में जाने से भी बच रहे हैं और अगर गए भी तो औपचारिकता वश । इस प्रकार हमारी प्राचीन लोक संस्कृति से जुड़ा धर्म अपनी जमीन से विलीन होता जा रहा है। निश्चय ही अंधविश्वास और रूढ़ियां समाप्त होनी चाहिए पर लोक धर्म यदि समाप्त हो गया ,तो ग्रामीण समाज की पहचान भी विलुप्त हो जाएगी । हमारी पहचान हमारी संस्कृति से है पाश्चात्य संस्कृति से नहीं । इसीलिए हमें हर कीमत पर ग्रामीण धर्म को सुरक्षित रखना है।

डॉ० पुष्पा भट्ट

असिस्टेंट प्रोफेसर समाजशास्त्र

“मजदूर औरतें कविता नही लिखतीं”

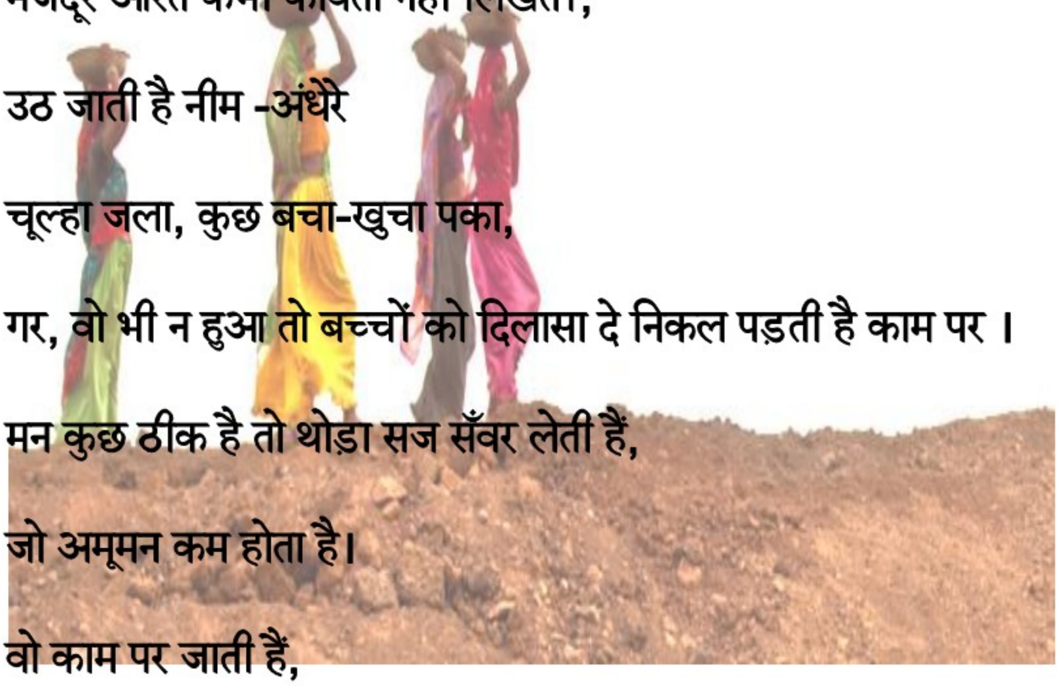

मजदूर औरतें कभी कविता नही लिखतीं,

उठ जाती है नीम -अंधेरे

चूल्हा जला, कुछ बचा-खुचा पका,

गर, वो भी न हुआ तो बच्चों को दिलासा दे निकल पड़ती है काम पर ।

मन कुछ ठीक है तो थोड़ा सज सँवर लेती हैं,

जो अमूमन कम होता है।

वो काम पर जाती हैं,

कच्ची पक्की सड़कें नापते।

अलग-अलग दिशाओं,

तरह-तरह के काम की ओर,

वो काम पर जाती हैं।

लेकिन उन्हें कोई वर्किंग वीमेन भी नहीं कहता,

खुश हो जाती हैं उतरनों और जूठनों से।

उनकी खुशी किसी नये कपड़े की मोहताज नहीं।

उनमें कविता की नायिकाओं सी नरमाई नहीं होती।

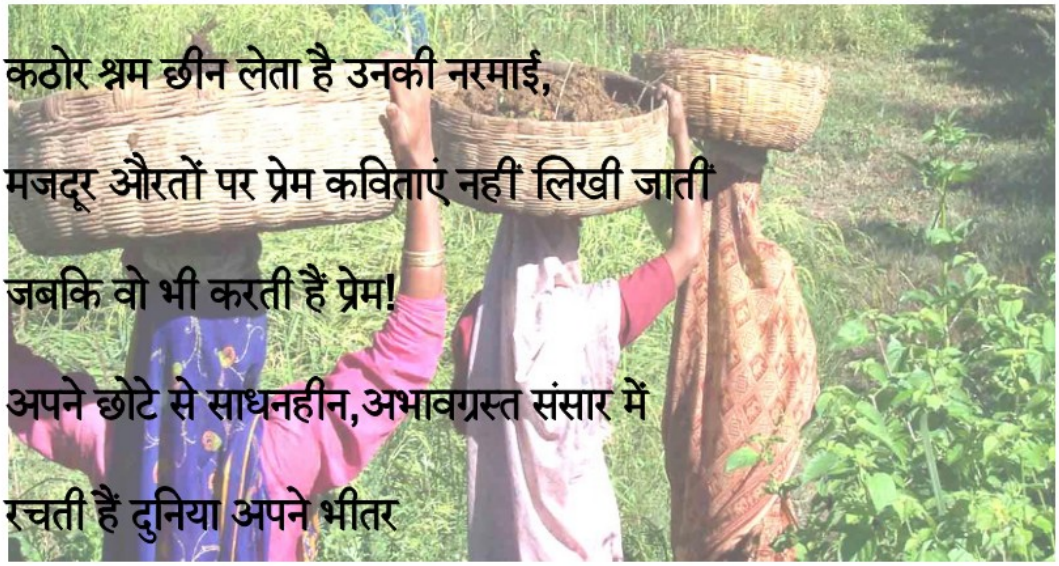

कठोर श्रम छीन लेता है उनकी नरमाई,

मजदूर औरतों पर प्रेम कविताएं नहीं लिखी जातीं

जबकि वो भी करती हैं प्रेम!

अपने छोटे से साधनहीन,अभावग्रस्त संसार में

रचती हैं दुनिया अपने भीतर

बिना किसी मैटरनिटी लीव के

और जल्द से जल्द काम पर लौट आने की मजबूरी के साथ।

मजदूर औरतें कविता नहीं लिखतीं

दरअसल वो खुद एक कविता होती हैं!

अपर्णा सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर इतिहास

नशाखोरी तथा युवा वर्ग

पश्चिमी सभ्यता ने हमारे देश को किस तरह आकर्षित किया है इससे सभी भलीभांति परिचित हैं। हमारे समाज के युवा सबसे अधिक इसकी ओर आकर्षित होते हैं और न सिर्फ आकर्षित होते हैं बल्कि अपनी भारतीय संस्कृति को छोड़ पश्चिमी संस्कृति का अंधानुकरण भी करते हैं। नशाखोरी भी इसी का उदाहरण है। भारत देश की बड़ी मुख्य समस्याओं में से एक युवाओं में फैलती नशाखोरी भी है। देश की जनसंख्या आज 125 करोड़ के पार हो गई है। इस जनसंख्या का एक बड़ा भाग युवावर्ग का है। इस बात पर गर्व करने से पहले यह भी हमें जानना आवश्यक है कि हमारा युवा गर्व करने या कराने की स्थिति में नहीं है, क्योंकि नशे ने उसे बर्बादी के कगार पर ला खड़ा किया है।

नशा एक ऐसी समस्या है जिसमें नशा करने वाले के साथ-साथ उसका परिवार भी बर्बाद हो जाता है और अगर परिवार नहीं रहेगा समाज नहीं

रहेगा तो देश भी बिखरता चला जाएगा। इंसान को इस दलदल में एक कदम रखने की देरी होती है और उसके पश्चात इस दलदल में बहुत धंसता ही चला जाता है। नशे का आदी इंसान चाहे तब भी इसे छोड़ नहीं पाता। इसीलिए कहा जाता है कि "नशा नाश है"।

नशा कई तरह का होता है, जिसमें शराब, सिगरेट, अफीम, गांजा व चरस आदि मुख्य और सुगमता से प्राप्त होने वाले नशे हैं। नशा एक ऐसी आदत है जो किसी इंसान को पड़ जाए तो उसे दीमक की तरह अंदर से खोखला बना देती है। नशा इंसान को शारीरिक मानसिक व आर्थिक रूप से बर्बाद कर देता है। नशीले पदार्थ का सेवन इंसान को बर्बादी की ओर ले जाता है। आजकल नशे के आदी छोटे बच्चे भी हो रहे हैं। युवाओं के साथ-साथ बड़े बुजुर्ग भी इसकी गिरफ्त में है, लेकिन सबसे अधिक यह युवा पीढ़ी को प्रभावित कर रहा है। नशा करने वाला व्यक्ति समाज के लिए एक बोझ बन जाता है जिसे सब हेय दृष्टि से देखते हैं। नशा करने वाले व्यक्ति का न कोई भविष्य होता है और नहीं वर्तमान। और तो और, उसके अंत पर भी लोग दुखी नहीं होते हैं।

देश में जो आतंकवाद, नक्सलवाद एवं बेरोजगारी की समस्या फैल रही है, इसके मूल में भी कुछ हद तक नशा ही है। नशे के चलते इंसान अच्छे-बुरे की समझ खो देता है और गलत राह में चलने लगता है।

नशाखोरी फैलने के मुख्य कारण-

1- शिक्षा की कमी

2-नशे संबंधी पदार्थों की खुलेआम बिक्री

3-संगति का असर

4-मॉडर्न बनने की चाह

5- पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव

6- सिनेमा का प्रभाव

7- तनाव तथा परेशानियां।

नशाखोरी का देश व युवाओं पर प्रभाव

1-स्वास्थ्य संबंधी समस्या

2- भविष्य का नष्ट होना

3-अपराधी प्रवृत्ति का हो जाना

4- गरीबी को प्रोत्साहन

5- घरेलू हिंसा को बढ़ावा ।

संक्षिप्त रूप से प्रस्तुत किया गया यह विवरण यही प्रदर्शित करता है की दो पल के आनंद के लिए मनुष्य किस तरीके से स्वयं को ही नहीं बल्कि परिवार समाज तथा देश को भी खोखला बनाता है। हम युवाओं का यह कर्तव्य है कि नशे से बर्बाद होते अपने साथियों को सचेत करें और नशाखोरी के खिलाफ एक अभियान चलाएं।

नाम-ज्योति बोरा

कक्षा-बी.ए.फर्स्ट सेमेस्टर

तुम भी बदल जाओ

बदल रहा है यह संसार, तुम भी बदल जाओ।

गीत तुम्हारे गाए दुनिया, ऐसे ही तुम बन जाओ।।

परेशानी हों जितनी, कभी न तुम घबराओ।

कोशिश करना सीख लो, कोशिश करते जाओ।।

यही राज है जीने का, सबको तुम दिखलाओ।

दुनिया को है बदलना, तुम जागरूक हो जाओ ।।

जीने के लिए इस दुनिया में, लक्ष्य एक बनाओ ।

खरे उतरो जिस पर, मानव का भाल सजाओ।।

बदल रहा है यह संसार ,तुम भी बदल जाओ।

गीत तुम्हारे गाए दुनिया ऐसे तुम बन जाओ।।

नाम-गुंजा मिराल

कक्षा-बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

"शिक्षा का महत्व "

शिक्षा का समय सभी के लिए सामाजिक और व्यक्तिगत रूप से बहुत महत्वपूर्ण समय होता है, यहीं कारण है कि हमें शिक्षा हमारे जीवन में इतना महत्व रखती है। जीवन में सफलता प्राप्त करने और कुछ अलग करने के लिए शिक्षा सभी के लिए एक बहुत महत्वपूर्ण साधन है। यह हमें जीवन के कठिन समय में चुनौतियों से सामना करने में सहायता करता है।

आधुनिक युग आज इतनी तेज़ी से चल रहा है कि इस इस युग को आधुनिकता का क्रांतिकारी युग बोला जा सकता है। किसी भी समय में बदलाव अपने आप नहीं आते, बदलाव लाए जाते हैं और इनके पीछे की यह प्रक्रिया शिक्षा के बिना असंभव है। आधुनिक युग में शिक्षा का महत्व पहले की तुलना में काफी बढ़ गया है।

लोगों को अपना जीवन जीने में और अपने जीवन स्तर को ऊंचा उठाने के लिए शिक्षा की काफी जरूरत है। शिक्षा जीवन को बेहतर बनाने वाली

संभावनाओं तक पहुँचती है। आज सिर्फ ज्ञान प्राप्त करना ही काफी नहीं, औद्योगिकरण के युग में ज्ञान के प्रयोग पर अधिक बल दिया जाता है। इसे व्यावहारिक ज्ञान कहा गया है। इसलिए शिक्षा के साथ-साथ विभिन्न व्यावसायिक प्रशिक्षण भी दिए जाते हैं। जिससे बच्चे छात्र जीवन में ही अपने व्यावसायिक समस्याओं के समाधान प्राप्त कर कुशल कर्मचारी बन सके।

आधुनिक युग में विकसित होती सभ्यता तथा मशीनीकरण ने जहां एक

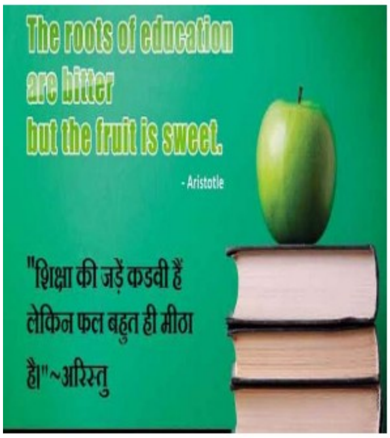

और मनुष्य का काम कम किया है। वहीं दूसरी ओर लोग बेरोज़गार भी हुए हैं। वर्तमान समय में शिक्षा के द्वारा आत्मनिर्भर बनने की मुहिम चलाई जा रही है।

इससे ना सिर्फ नए रोज़गार के अवसर प्राप्त होंगे बल्कि नए व्यवसाय व कार्य क्षेत्र के मार्ग भी खोजे जाएँगे। शिक्षा समाज में आवश्यकता से बढ़कर एक मापदंड बन गई है। समाज में उन्हीं लोगों को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है, जिन्होंने अच्छी शिक्षा प्राप्त की है। इसलिए कहा जा सकता है कि आधुनिक युग में शिक्षा बहुत आवश्यक है।

डॉ0 गोविंद सिंह धामी

शिक्षाशास्त्र विभाग

सोच

जीवन में उसूलों का भी निवास होना चाहिए

इंसानियत सी अनमोल धरोहर पास होनी चाहिए।।

गलतियां किससे नहीं होती हैं भला,

पर दिल के किसी कोने में उसका आभास होना चाहिए।।

सारा जमाना भले आपकी उंगलियों पर हो नाचता,

पर पड़ोसियों का भी आपके अपने साथ होना चाहिए।।

छिन गई हो धरती आपसे, छिन गया हो आसमां,

फिर भी जमाने के लिए अच्छे खयालात होने चाहिए।।

यूं तो जिंदगी सभी लोग जिया करते हैं,

पर जिंदगी जीने का अपना अलग अंदाज होना चाहिए।।

कदम मिलाकर आज के साथ चलो कितना ही,

पर हृदय में अपने अतीत की भी याद होनी चाहिए।।

नाम-दीपिका बिष्ट

कक्षा-बीए प्रथम सेमेस्टर

"आस्था का केंद्र गणनाथ मंदिर"

गणनाथ मंदिर अल्मोड़ा जिले के छोटे से ब्लॉक ताकुला में स्थित है। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। सोमेश्वर से 8 किलोमीटर की दूरी पर

गणनाथ मंदिर स्थित है। शिव के इस मंदिर का महत्व धार्मिक ही नहीं बल्कि ऐतिहासिक व पौराणिक भी है। यहां पर शिव का एक प्राचीन लिंग गुफा के अंदर स्थापित है, और गुफा कई वट वृक्षों के मध्य स्थित है। गुफा के ऊपर से एक प्राकृतिक जलधारा बह कर वट वृक्ष के ऊपर से आती हुई ऐसी प्रतीत होती है मानो शिव की जटाओं से गंगा अवतरित हो रही हो। और यही धारा शिवलिंग पर स्वतः ही जलाभिषेक करती है। इस जलधारा से वहां का दृश्य और भी रमणीक हो जाता है। उन जल धाराओं को शिव की जटाओं का नाम दिया गया है।

गणनाथ मंदिर में बहुत ही प्राचीन विष्णु की एक प्रतिमा भी है और साथ ही कई देवी-देवताओं की प्रतिमाएं भी हैं स्थापित हैं, जो हिन्दू समन्वयवादी परंपरा का एक आदर्श उदाहरण है।

इतिहास में झांकने पर हम पाते हैं कि इसी गणनाथ मंदिर में 1790 से 1815 के बीच गोरखा- अंग्रेजी युद्ध के दौरान सेना की कुछ टुकड़ियां यहां पर रुकी थीं। 1815 में अंग्रेज सेना का सामना करते हुए गोरखा

सेनापति यहीं पर मारा गया था। उसके बाद गोरखाओं ने आत्मसमर्पण कर दिया था।

गणनाथ मंदिर में कार्तिक पूर्णिमा को बहुत ही भव्य मेले का आयोजन किया जाता है, जिसमें हजारों की संख्या में लोग मीलो दूर-दूर से पैदल यात्रा करके आते हैं। भगवान शिव के लिंग पर जलाभिषेक करते हैं। गणनाथ मंदिर का मार्ग सोमेश्वर के रनमन क्षेत्र से शुरू होता है। यह एक कच्चा मार्ग है किंतु बड़े वाहन इस पर आसानी से आ-जा सकते हैं। रास्ता पथरीला और ऊबड़- खाबड़ होने की वजह से छोटी गाड़ियों को जाने में परेशानी होती है। आसपास के लोग पैदल यात्रा करके ही मंदिर तक पहुंचना श्रेष्ठ समझते हैं। श्रद्धालु कार्तिक पूर्णिमा ही में ही नहीं बल्कि सावन के महीने में भी गणनाथ में जलाभिषेक करने जाते हैं।

सावन के माह में हरीतिमा युक्त इस सुंदर घाटी की सुंदरता अपने चरम पर होती है। सभी लोग एकत्रित होकर मंदिर की ओर चल पड़ते हैं। कच्ची पगडंडी, देवदार, चीड़,बांज एवं काफल के घने जंगलों से गुजरकर

गणनाथ पहुंचा जाता है। इस मार्ग में कोयल की बोली, चिड़ियों की चहचहाहट, हिरनों के कुलांचें भरने का दृश्य, नदी की स्वच्छ धारा, झरनों की आवाज एवं हिमालय दर्शन से वहां का दृश्य और भी मनमोहक लगता है।

नाम -नेहा बजेठा

कक्षा- एम.ए.चतुर्थ सेमेस्टर

निखरने का वक्त आ रहा है

सपनों की उड़ान भरने का क्या वक्त आ रहा है,

यारो जरा कोशिश तो करो तुम्हारे निखारने का वक्त आ रहा है ।

तुम्हारी मेहनत कॉपी पर लिखे उस लकीर की तरह नहीं जिसे मिटाया जा सके

तेरी मेहनत तो पत्थर पर बने उस निशान की तरह है जिसे कोई मिटा ना सके

यारो जरा कोशिश तो करो तुम्हारे निखारने का वक्त आ रहा है ।

राई से राई मिलकर पहाड़ बन सकता है

मेहनत से हौसला मिलकर तुम्हें सफल इंसान बना सकता है

यारो जरा कोशिश तो करो तुम्हारे निखारने का वक्त आ रहा है।

मेघा भाकुनी

बी0 एससी0 षष्टम सेमेस्टर

‘बी कॉम के बाद क्या करें’ ?

लोग अक्सर सोचते हैं कि बी कॉम के बाद कोई अच्छा विकल्प नहीं है, तो ऐसा नहीं है।क्योंकि बी कॉम उच्च डिग्री और अच्छी जॉब के कई विकल्प खोल देता है। जिससे छात्र या तो मास्टर्स कर एक अच्छी नौकरी पा सकते हैं या फिर CA, SC, अकाउंटेंट, टैक्स कंसल्टेंट और ऑडिटर बनकर अपना करियर संवार सकते हैं।

बी कॉम ग्रेजुएशन के बाद छात्र अक्सर कोर्सेस का चयन करने के लिए काफी भ्रमित रहते हैं। जबकि इस क्षेत्र में अच्छा करियर बनाने के लिए कुछ कोर्स ऐसे हैं जिन्हें कर लेने से आगे के कई विकल्प खुल जाते हैं। वहीं इन कोर्सेस की सबसे बड़ी खासियत यह है कि ये कोर्स कम समय अवधि के और कम बजट में भी छात्र कर सकते हैं और अपने करियर को संवार सकते हैं।

इस आर्टिकल में मैंने आपको इन सारे बिंदुओं के बारे में बहुत विस्तार से बताया है। मुझे उम्मीद है कि इस आर्टिकल को पढकर आपको बी कॉम के बाद क्या करें इसके बारे में अच्छी जानकारी मिलेगी।

बी कॉम कोर्स करने के बाद आप SSC, CGL रेलवे और राज्य स्तर की प्रशासनिक सेवाओं के लिए आवेदन कर सकते हैं। बी कॉम कोर्स करने के बाद आप यूपीएससी की परीक्षा भी दे सकते हैं।

जिन जिन सरकारी नौकरियों में ग्रेजुएशन तक की शैक्षणिक योग्यता की मांग रहती है, आप उन सभी सरकारी नौकरियों के लिए आवेदन कर सकते हैं। यानी कि अगर आप किसी प्रशासनिक सेवा में जाना चाहते हैं तो आप बी कॉम करके प्रशासनिक सेवा में भी अपने अवसर तलाश कर सकते हैं।

बी कॉम कोर्स करने के बाद आप राज्य पुलिस बल के विभिन्न पदों में भी आवेदन कर सकते हैं। इन पदो ंके लिए भी स्नातक की शैक्षणिक योग्यता की जरूरत होती है तो आप बी कॉम कोर्स करने के बाद पुलिस विभाग में भी जा सकते हैं। अगर किसी छात्र का बी कॉम हो गया और वे मास्टर डिग्री हासिल करना चाहते हैं तो सबसे पहले उनके दिमाग में एमकॉम (M.Com) करने का आइडिया आता है।

M.Com 2 साल का कोर्स होता है, जिसे छात्र किसी भी मान्यता प्राप्त संस्थान से कर सकते हैं। M.Com में छात्रों को मुख्य रूप से अकाउंटिग, बिजनेस, फाइनेस, इकॉनोमिक्स, स्टेटिक्स, टैक्सेशन, मार्केटिंग एंड मैनेजमैंट विषयों की जानकारी दी सकती है। जिससे की छात्रों को इन क्षेत्रों के बारे में पूरी जानकारी मिल सके और वे इन क्षेत्रों में अपना कैरियर संवार सकें।

एम काम के साथ सदि आप यूजीसी नेट की परीक्षा पास करते हैं तो महाविद्यालय में असिस्टेंट प्रोफेसर बनने की काबिलियत पा सकते हैं।अगर आप रिसर्च में रूचि रखते हैं, तो एम फिल या पी.एच.डी में करियर बनाना चाहते हैं, तो एम कॉम सबसे बढ़िया विकल्पों में से एक है। जो पढाई में ज्यादा रूचि रखते वह रिसर्च फील्ड को चुन सकते हैं।

B.Com करने के बाद नौकरी

जैसा कि बी कॉम एक फाइनेंस और कॉमर्स से जुड़ा कोर्स है तो इस कोर्स को करने के बाद आपको फाइनेंस और बैंकिंग क्षेत्र से जुड़ी इंडस्ट्री में नौकरियां मिल सकती है।

1 Accountant

2 Accountant executive

3 Tax Consulter

4 Bank Manager

5 Bank clerk

6 Event manager

7 Book keeper

8 Sub Inspector

9 Income tax officer

10 Human Resource

11 Government Service

इन सबके अलावा और भी बहुत सारी सरकारी र्नाकरियों के अवसर प्राप्त होते हैं क्योंकि बी काम में ग्रेजुएशन कोर्य है इसके बाद आप सरकारी नौकरी के विभिन्न विभिन्न पदो ंके लिए आवेदन कर सकते हैं।

मास्टर्स ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन (MBA in Finance)

बी कॉम के बाद उच्च शिक्षा के लिए अकसर MBA करने की भी राय दी जा सकती है। MBA में अच्छा कैरियर बनाना इंस्टीटयूट या कॉलेज की विश्वसनियता पर निर्भर करता है अगर आप IIM से MBA कर रहे हैं तो निश्चित तौर पर आपको सफलता मिलना तय है।

लेकिन अगर आप साधारण कॉलेज सा फिर ऐसे कॉलेज से MBA करने के बारे में सोचते हैं जो कि उतना प्रसिद्ध नहीं है तो आपके लिए MBA करने नौकरी पाना काफी कठिन साबित हो सकता है।

आपको बता दें कि CAT का रिजल्ट निर्धारित करता है कि आपका चयन किस कॉलेज से MBA के लिए होता है। MBA दो साल के लिए होता है जिसकी पढ़ाई पूरी करने के बाद छात्र फाइनेंशियल सर्विस सेक्टर में आसानी से जॉब कर सकते हैं।

बीकॉम करने के बाद आप निम्नलिखित कोर्स कर सकते हैं ?

1 Masters of Business Administration (MBA)

2 Chartered accountant (CA)

3 Company Secretary

4 Digital marketing

5 Master in Commerce (M.Com)

6 Bachelor of Education (B.Ed)

7 Certified financial planner.

डॉ0 शालिनी टम्टा

असिस्टैण्ट प्रोफेसर वाणिज्य संकाय

पहला दिन

03.03.21 योग सभी अंकों का तीन ही हो रहा था। ऐसा लग रहा था वास्तु एवं ज्योतिष के आधार पर सब शुभ चल रहा है। मन गहरे अंतर्द्वंद से गुजर रहा था। आज लगभग तीन साढे तीन,साढ़े तीन साल के साथ और स्थान को मैंने छोड़ना था, और नए कार्यस्थल पर पहुंचना था। न जाने क्यों मानव को गुजरा वक्त ही हमेशा अच्छा लगता है। मन यह समझ नहीं पा रहा था कि इस समय नए महाविघालय में जाने की खुशी मनाये या पुराने विघालय से बिछड़ने का दुख। विघालय के बच्चे उदास दिख रहे थे, उनकी आंखें नम थी । मन ही मन मैं कई सवालों से लड़ रहा था। मैं जानता था कि जीवन में कुछ भी स्थिर नहीं है न दुख ,न सुख, न याद न विरह, फिर भी एक अलग ही अनुभव था यह सब। सब कुछ अलग ही था आज, शैतान से शैतान बच्चा भी बिल्कुल गोबर गणेश बना था, जैसे उसका सब कुछ लुट गया हो। मेरी दृष्टि भी आज पूर्ण मानवतावादी थी। मैं नहीं देख रहा था उन्हें उनके कक्षा प्रदर्शन से , मुझे फर्क नहीं पड़ रहा था उनके हस्तलेख या सामान्य ज्ञान से। लग रहा था

जैसे आज सच में मेरे मन में संविधान लागू हो गया है। ना किसी में कोई कमी ना कोई विशेष, सभी एकदम निश्चल और निष्कपट। स्कूल के सभी साथी भी अपनी उदासी को छिपाने की निर्थक कोशिश कर रहे थे। होठों पर झूठी मुस्कान लिए मैं भी दुःख छिपाने का प्रयास कर रहा था। मैं कोशिश कर रहा था इस प्रांगण की एक - एक याद कैद करने की आंखों में, मैं जानता था मैं अभी इस विघालय का हिस्सा हूं मेरे कुछ कर्तव्य हैं कुछ अधिकार हैं, जो अगले कुछ पल या मिनटों में समाप्त हो जाएंगे। एक चौकोर कागज में कार्यमुक्त लिखते ही मैं इस परिसर का मेहमान हो जाऊंगा। सच में कितनी ताकत है शब्दों में , कितनी हिम्मत है कलम की जो किसी संवेदना या भावना को नहीं मानती ।

कॉफी और मिठाई के साथ ही मैंने आखरी उदासी की घूँट गले से उतारी। रेलिंग और पेड़ से के नीचे से बच्चों ने हवा में हाथ हिला मुझे विदा किया। साथियों से गले मिलने की हिम्मत नहीं हुई क्योंकि धड़कन सुनते ही आँखें हार मान लेती। प्रधानाचार्य जी के साथ उनके दो पहिया वाहन में

बैठ में निकल पड़ा एक नए सफर पर। वाहन आगे दौड़ रहा था और मैं पीछे ही रह जा रहा था, अगले कुछ किलोमीटर के साथ ही नए महाविद्यालय का चित्र आंखों में उभर आया । अब धड़कन और अधिक तेज थी । परिसर मैंने चुनाव मतगणना में पहले देखा था इसलिए आंखों को बिंब बनाने में अधिक मेहनत नहीं लगी। गाड़ी कोसी पुल पार कर सोमेश्वर बाजार से गुजर रही थी, हनुमान मंदिर के आगे बजरंगबली को हाथ जोड़ सोमनाथ मंदिर की तरफ नजर गई। आज सारे देवता याद आ रहे थे और यह भी समझ आ रहा था कि मानव दुःख या ऐसे समय में ही भगवान को क्यों अधिक याद करता है। मुख्य सड़क की पक्की रोड छोड़ अब हम कच्ची सड़क पर मन पक्का कर आगे बढ़ रहे थे। जीआईसी के आगे कुछ परिचित शिक्षक दिखे, ऐसा लग रहा था कि जैसे अपनी बिरादरी के कुछ लोग मिल गए हों। उनको देख वैसी ही राहत मिल रही थी जैसे आनंद विहार में उत्तराखंड रोडवेज को देख मिलती है। अब गाड़ी रुक चुकी थी पर मन था कि हवा से मुकाबला कर रहा था। पहला कदम हुकम सिंह बोरा महाविद्यालय के गेट पर रखा। मन को समझाते बुझाते और खुद को आत्मविश्वास दिलाते कार्यालय तक पहुंचा। सफर छोटा था पर कदम थके से लग रहे थे। सभी उपस्थित अग्रजों के

आदर सत्कार के साथ दिमाग ने पहचान का प्रयास जारी किया। नए बिंब और नए विचार बनने शुरू हुए। नए माहौल को समझने और परखने का दौर जारी रहा। नव नियुक्ति की आवश्यक कार्यवाही निपटने के बाद मन थोड़ा राहत की स्थिति में पहुंचा। नए स्टाफ के साथ परिचय का दौर चला। आज लगभग तीन माह का समय बीत चला है। महामारी और कॉलेज के बंद होने से अभी भी पहचान और भटकाव का दौर जारी है। यूं ही धीरे-धीरे कुछ दिन, महीने और साल के बाद मन बना लेगा यहां भी अनगिनत यादें ,सजा लेगा कई नये हसीन सपने। बैठ जाएंगी असीमित यादें, सच है मनुष्य हर समय यादों में कैद है, तब तक, जब तक उसकी सांस इस शरीर में कैद है।

विपिन चन्द्र

असिस्टेंट प्रोफेसर

रमणीय घाटी सोमेश्वर

सोमेश्वर एक पवित्र स्थल है। इसकी रमणीयता पूरे उत्तराखंड में प्रसिद्ध है सोमेश्वर को महादेव शिव के नाम पर यह नाम दिया गया है।यहां महादेव की पूजा स्थल का सबसे अधिक महत्व है। सोमेश्वर घाटी कई स्वतंत्रता सेनानियों की जन्मभूमि भी है, इसे स्वतंत्रता सेनानियों की भूमि के नाम से भी जाना जाता है। जनपद अल्मोड़ा से कौसानी गरूड़ की ओर यदि हम बढ़ते हैं तो बीच में एक सुंदर रमणीक हरी भरी घाटी से होकर गुजरना होता है, इसी घाटी को बौरारो घाटी या वर्तमान समय में सोमेश्वर के नाम

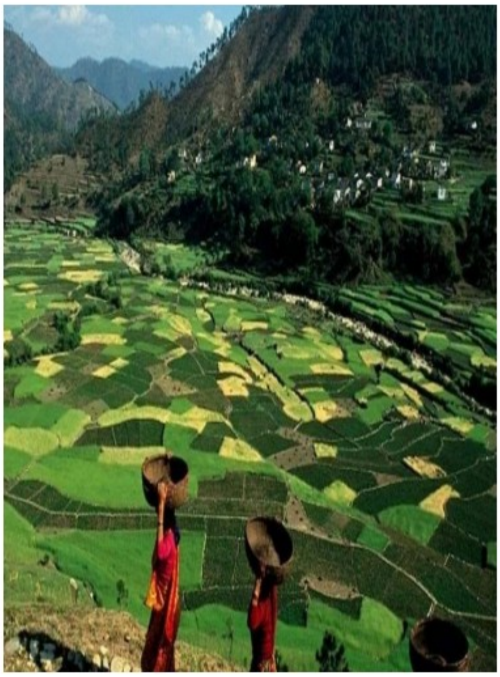

से जाना जाता है। सोमेश्वर घाटी कत्यूरी और चंद् शासन के काल से ही एक महत्वपूर्ण घाटी रही है। यह अल्मोड़ा से लगभग 35 से 40 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है और अपने नैसर्गिक, प्राकृतिक सौंदर्य के लिए जानी जाती है। कोसी और साईं नदी के किनारे बसी यह घाटी अपनी धान की खेती और हरे भरे सुंदर पर्यावरण के लिए विश्व विख्यात

है। जो कोई भी पर्यटक इस घाटी से गुजरता है वह इस घाटी की छवि को अपनी आंखों में बसाए बिना नहीं रह सकता। सोमेश्वर में भगवान शिव का प्रसिद्ध मंदिर भी है, कहा जाता है कि इस मंदिर का निर्माण राजा सोमचंद्र ने करवाया था और यहां पर की गई पूजा अर्चना काशी विश्वनाथ में की गई पूजा अर्चना के समान ही फलदाई है। इसी के पास ही एक गांव सर्प नाम से भी है जो नागों की उत्तराखंड की स्थिति और उनके अवशेषों से संबंधित कहा जा सकता है। सोमेश्वर मंदिर में भगवान शंकर

के 28 वे अवतार लकुलिश के दाहिने हाथ में बिल्ल फल तथा बाएं हाथ में यज्ञ माला लिए मूर्ति है जिसके आधार पर इस मंदिर को सोमेश्वर नाम दिया गया है। मंदिर के परिसर के आसपास देवदार के सुंदर वृक्ष हैं और एक प्राचीन नौला भी है सोमेश्वर घाटी सुंदर और प्राकृतिक घाटी है इसका एक क्षेत्र लोद से मिलता है और दूसरा क्षेत्र कौसानी से मिलता है । पूरी घाटी अपने प्राकृतिक सौंदर्य और खेती-बाड़ी से जुड़ी हुई है।

नाम- संदीप

''गाथा एक स्वतंत्रता सेनानी की ''

मंगल पाण्डे का नाम 1857 के स्वाधीनता संग्राम में उनकी बहादुरी और अदम्य साहस के वजह से सदैव याद किया जाता है। साहसी युवक मंगल पाण्डे का जन्म उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के नगवा नामक गॉव में 30 जनवरी 1831 को एक ब्राहमण परिवार में हुआ था। कुछ इतिहासकार इनका जन्म स्थान फैजाबाद के निकट सुरहुरपुर को मानते हैं। इनके पिता का नाम श्री दिवाकर पाण्डे तथा माता का नाम श्रीमती अभय रानी था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा दीक्षा गॉव की ही पाठशाला में हुई। बाल्यकाल से ही इनकी रूचि खेलकूद तथा वीरता वाले कार्यो में थी। इनमें वीरता और साहस कूट कूट कर भरा था। जब ये 22 वर्ष के थे, तब एक अंग्रेज अफसर की नजर इन पर पड़ी। इनकी साहसी प्रवृत्ति से प्रभावित होकर इन्हें 10 मई 1849 को ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना में भर्ती कर लिया। मंगल पाण्डे कलकत्ता के पास बैरकपुर छावनी के 34वीं बंगाल नैटिव इन्फैंट्री की पैदल सेना के सिपाही थे। जब इन्हें पता चला कि अंग्रेजों द्वारा गाय तथा सुअर की चर्बी वाले कारतूस सिपाहियों को मुँह से खोलने को दी जा रही हैं तो इनका गुस्सा सातवें आसमान पर था। अंग्रेजों के इस कृत्य को इन्होंने अपना अपमान समझा और 29 मार्च 1857 को विद्रोह कर दिया। फिर इन्होंने दो ब्रिटिश अफसरों पर हमला कर गोली मार दी। जिससे 6 अप्रैल 1857 को इनका कोर्ट मार्शल कर दिया गया और 8 अप्रैल को फॉसी दे दी गयी। अंग्रेजों ने शीघ्र ही इस विद्रोह को दबा दिया, पर विद्रोह की ज्वाला बुझने वाली नही थी। मंगल पाण्डे के विद्रोह से प्रेरित होकर यह विद्रोह फिर मेरठ में हुआ और फिर धीरे–धीरे पूरे भारत में फैल गया। इस प्रकार मंगल पाण्डे का बलिदान व्यर्थ नहीं गया। भारत के स्वाधीनता संग्राम मे इनका महत्वपूर्ण योगदान है । वे भारत के ऐसे सपूत थे जिन्होंनें मातृभूमि के लिए अपना सर्वस्य न्यौछावर कर दिया।

डा0 कंचन वर्मा

असि0 प्रोफेसर

माता पिता की सेवा

इस संसार में हर किसी व्यक्ति को एक जीवन साथी या मित्र की आवश्यकता होती है, जो उससे हमेशा प्यार करे और उसकी मदद करे। किंतु जीवन में एक बात तो सत्य है कि हर किसी प्रेम की तुलना में मां-बाप का प्रेम सबसे ऊपर है। मां-बाप वे व्यक्ति हैं जो अपनी संतान की खुशी के लिए दुखों से लड़ते हैं। एक मां है जिसने हमें नौ महीने तक अपनी कोख में रखकर हर दुख-दर्द को सहते हुए हमें जन्म दिया। संतान कैसी भी हो पर मां-बाप के मन में उनके

प्रति कोई शिकायत नहीं होती। वे हर परिस्थिति में संतान की कुशलता व सफलता की कामना ही करते हैं। इसलिए हर संतान का भी कर्तव्य है कि वह उनकी सेवा करें। क्योंकि मां-बाप की सेवा करने वाला व्यक्ति हमेशा सफल होता है। मां बाप के आशीर्वाद से बड़ा कोई वरदान नहीं होता है।

जीवन भर मां-बाप दिन-रात परिश्रम करते हैं ताकि उनके बच्चे का भविष्य उज्ज्वल हो सके। आज के समय में अगर कोई व्यक्ति अपने मां-

बाप की सेवा ही करे, तो वही बहुत है। परंतु आज लोग पैसे और कामयाबी के पीछे भाग रहे हैं और मां-बाप को भूलते जा रहे हैं। क्या इसी दिन के लिए मां-बाप उनका लालन-पालन करते हैं? हर माता-पिता के मन में चाह होती है कि उनकी संतान उनके बुढ़ापे का सहारा बनें। मां बाप की सेवा कभी भी व्यर्थ नहीं जाती। तभी तो मां-बाप को ईश्वर से भी ऊंचा स्थान दिया गया है। मां-बाप भले ही अनपढ़ हों, कम शिक्षित हों, परंतु शिक्षा और संस्कार हम उनसे ही सीखते हैं।

नाम- दीपा नेगी

कक्षा-एम.ए.चतुर्थ सेमेस्टर

प्रकृति और हम

जब भी घायल होता है मन,

प्रकृति रखती उस पर मरहम।

पर उसे ही हम भूल जाते हैं,

ध्यान कहां उसका रख पाते हैं?

उसकी नदियां, हैं उसके सागर,

उसके जंगल और पहाड़ सब,

हित साधन हमारा करते निरंतर,

पर हम उसे ही उजाड़ जाते हैं।

स्वारथ की मूरत मानव,

नष्ट करें कुदरत की रौनक

हम उसकी संतान कहाते हैं।

पर समझ कहाँ उसे पाते हैं?

नाम-दीपा राना

कक्षा-एम.ए.चतुर्थ सेमेस्टर

जैव विविधता एवं संरक्षण

जैव-विविधता से तात्पर्य जैविक विविधता को संपूर्णता में दर्शाने से है। प्रत्येक प्रजाति अपने आवास की पारिस्थितिकीय व्यवस्थाओं के अनुरूप अपना जीवन निर्वाह करती है। प्रजातियों में यदि उनकी संख्या एवं उनके मध्य अंत:क्रिया की दृष्टि से यदि विविधता, हो तो तंत्र के स्थायित्व को बनाए रखने के लिए इसका संरक्षण आवश्यक है , जिसके लिए राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर पर विविध एवं संस्थागत प्रयास किए जा रहे हैं।

जैव विविधता का आशय

जैव विविधता से तात्पर्य किसी विशेष क्षेत्र के समस्त जीव- जातियों एवं पारितंत्रों के संग्रह से है। अर्थात किसी क्षेत्र में उपस्थित जीवों की विभिन्न प्रजातियों की विविधता जैव-विविधता कहलाती है। परिस्थितिकी तंत्र में संतुलन बनाएँ रखने के लिए जैव विविधता का होना आवश्यक है ।

जैव- विविधता का सर्वप्रथम प्रयोग **ई ए नोर्स** एवं **आर ई मैनस** द्वारा 1980 में किया गया ।

जैव विविधता का स्तर

जैव विविधता जीन्स (Genes), जातियों(Species) और परिस्थितिकी तंत्रों (Ecosystem) की समग्रता है। इस आधार पर

जैव विविधता के निम्न स्तर हैं ।

आनुवांशिक विविधता

एक ही प्रजाति के जीवों के मध्य एक आनुवांशिक परिवर्तनशीलता (Genetic Modification) है, जैसे भारत में चावल, आम की अनेक किस्में आदि ।

किसी प्रजाति में अधिक जननिक विविधता होने पर उस प्रजाति की एकाकी जीवों में पर्यावरणी दशाओं के साथ अनुकूल की क्षमता अधिक होती है । न्यून जननिक विविधता होने पर प्रजातियों में समरूपता होती है परिणामस्वरूप प्रजातियों के जीवों में होने वाले परिवर्तनों के प्रति दुर्बलता अधिक हो जाती है ।

प्रजातीय विविधता -

प्रजातीय विविधता (Specific Diversity) किसी समुदाय में पाये जाने वाले जीवों के बीच की विविधता है , जो जीवों की समृद्धता एवं प्रचुरता को दर्शाती है ।

किसी परिस्थितिकी तंत्र में या समुदाय विशेष में मिलने वाले विभिन्न प्रकार के जीवों की संख्या का विवरण जातीय विविधता है । किसी क्षेत्र

में एक वंश की जातियों के मध्य जितनी विभिन्नता मिलती है , वह जाती स्तर की जैव-विविधता दर्शाती है ।

विषुवत रेखीय सदाबहार वनों (Evergreen Forests) में सर्वाधिक जातिगत विविधता (Species Diversity) पायी जाती है ।

पारिस्थितिक विविधता

बड़े पैमाने पर जैव समुदायों में विभिन्नताएँ, जिनमे प्रजातियाँ रहती हैं , पारिस्थितिक तंत्र जिसमे समुदाय रहते हैं और इन स्तरों में अन्योन्यक्रिया

होती है , की विविधता को पारिस्थितिकी या समुदाय विविधता (Ecosystem or Community Diversity) कहते हैं ।

जैव विविधता का मापन - प्रजातीय संपन्नता का जैव विविधता के मापन के लिए सर्वाधिक प्रयोग होता है । सरल अर्थों में , यह किसी क्षेत्र में प्रजातियों की कुल संख्या की माप है ।

अल्फा विविधता- किसी क्षेत्र विशेष में उपस्थित प्रजातियों (Species) की कुल संख्या को अल्फा विविधता (Alpha Diversity) की संज्ञा से

अभिहित किया जाता है। यह विभिन्न क्षेत्रों में जैव विविधता के तुलनात्मक अध्ययन में सहायक होता है ।

बीटा विविधता - किसी क्षेत्र विशेष में उपस्थित प्रजातियों की संरचनात्मक विविधता को वीटा विविधता (Beta Diversity) की उपमा प्रदान की जाती है ।

गामा विविधता - किसी क्षेत्र विशेष में उपस्थित विविध प्रजातियों के मध्य अंत:सम्बन्ध का ज्ञान गामा विविधता (Gama Diversity) कहलाता है। यह भौगोलिक कारकों पर निर्भर है ।

जैव विविधता का ह्रास - किसी क्षेत्र की जैव विविधता की हा नि होने से पादप उत्पादकता में कमी आती है, पर्यावरणी; समस्याओं के प्रति प्रतिरोध में कमी आती है , कुछ पारितंत्र की प्रक्रियाओं जैसे – पादक उत्पादकता, जल उपयोग , पीड़क और रोग चक्रों की परिवर्तनशीलता बढ़ जाती है। जैव विविधता के ह्रास (Depletion of Biodiversity) में योगदान देने वाले निम्नलिखित कारक हैं -

- आवासीय क्षति व विखंडन
- अतिदोहन
- विदेशी जातियों का पुन:स्थापन

- सहविलुप्तता
- विक्षोभ व प्रदूषण
- प्रकृतिक आपदाएँ
- जलवायु परिवर्तन
- स्थानांतरित कृषि
- एक फ़सलीय कृषि

विलोपन के प्रति सुग्रहिता

विशालकाय शरीर, छोटा समिष्ट आमाप, कम प्रजनन दर, खाद्य श्रृंखला में उच्च पोषण स्तर पर भोजन , स्थिर प्रजनन पथ व आवास , वितरण का संकीर्ण परिसर किसी भी जाति को विलोपन के प्रति सुग्रहित (Susceptibility to Extinction) बढ़ाते हैं । संकटग्रस्त जातियों की तालिका को IUCN की रेड लिस्ट में जारी किया जाता है । IUCN विश्व स्तर पर निगरानी रखने वाला सर्वोच्च संगठन है ।

IUCN रेड लिस्ट क्या है?

1964 में स्थापित, द इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफ नेचर की रेड लिस्ट ऑफ थ्रेटेंड स्पीशीज , जानवरों, कवक और पौधों की प्रजातियों के वैश्विक संरक्षण की स्थिति पर दुनिया का सबसे व्यापक सूचना स्रोत बन गया है।

IUCN रेड लिस्ट विश्व की जैव विविधता के स्वास्थ्य का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। प्रजातियों और उनकी स्थिति की सूची से कहीं अधिक, यह जैव विविधता संरक्षण और नीति परिवर्तन के लिए कार्रवाई को सूचित करने और उत्प्रेरित करने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण है , जो हमारे जीवित रहने के लिए आवश्यक प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। यह सीमा , जनसंख्या आकार , आवास और पारिस्थितिकी, उपयोग और/या व्यापार , खतरों और संरक्षण कार्यों के बारे में जानकारी प्रदान करता है, जो आवश्यक संरक्षण निर्णयों को सूचित करने में मदद करेगा।

IUCN रेड डेटा बुक

IUCN की रेड डेटा बुक में हर जीव जाति को नौ में से एक श्रेणी में डाला जाता है । यह श्रेणीकरण उनकी कुल आबादी , आबादी में गिरावट की दर , भौगोलिक विस्तार क्षेत्र और उनके क्षेत्र (मानवीय गतिविधियों द्वारा) छितर जाने की सीमा के आधार पर किया जाता है । इन श्रेणियों को निम्न तालिका में दर्शाया गया है।

लाल सूची की श्रेणियाँ

संकटग्रस्त श्रेणी	**स्पष्टता**
विलुप्त (Extinct)	जाति के अंतिम सदस्य की समाप्ति (मृत्यु) पर जब कोई शंका ना रहे
वन्य रूप में विलुप्त (Extinct in the Wild)	जाति के सभी सदस्यों

का किसी निश्चित आवास से पूर्ण रूप से समाप्ति।

गंभीर रूप से संकटग्रस्त (Critically Endangered) जब जाति के सभी सदस्य किसी उच्च जोखिम की वजह से ए आवास में शीघ्र लुप्त होने की कगार पर ।

नष्ट होने योग्य (Endangered) जाति के सदस्य किसी जोखिम की वजह से भविष्य में लुप्त होने के कगार पर

नाजुक (Vulnerable) जाति के आने वाले समय में समाप्त होने की आशा ।

लगभग संकटग्रष्ट जाति (Near Threatened) जाति के सदस्यों का ह्रास दर उपरोक्त श्रेणियों से कम हो

कम जोखिम वाली जाति (Least Concern) इनको खतरा कम है एवं विस्तृत क्षेत्र में पायी जाती है ।

अपूर्ण आंकड़े (Deficient Data) जाति लुप्त होने के बारे में अपूर्ण अध्ययन एवं सामग्री ।

मूल्यांकित नहीं (Not Evaluated) जाति एवं उनके लुप्त होने के बारे में कोई भी अध्ययन सामग्री नहीं होना

जैव विविधता संरक्षण की विधियाँ - जैव विविधता के संरक्षण (Biodiversity Conservation) की दो विधियाँ हैं -

स्व-स्थाने (**In-Situ**) एवं बाह्य-स्थाने (**ExSitu**)

जब जीव एवं वनस्पति जातियों को उनके प्राकृतिकवास्य क्षेत्र में ही संरक्षण प्रदान किया जाता है , तब उसे स्व-स्थाने संरक्षण कहा जाता है। इसमे प्रतिनिधि तंत्रों के सुरक्षित क्षेत्र की विभिन्न माध्यमों से सुरक्षा एवं आवासीय विखण्डों को बनाए रखना सम्मिलित है ।

स्व-स्थाने संरक्षण के अंतर्गत प्रमुखत: राष्ट्रीय उधान , वन्य जीव अभयारण्य तथा जैव मंडलीय सुरक्षित क्षेत्र तथा पवित्र उपवन एवं झीलें आते हैं ।

बाह्य-स्थाने संरक्षण उनके प्राकृतिक आवास के बाहर के क्षेत्रों का संरक्षण है। इसमे वनस्पतियों , उधानों , चिड़ियाघर , संरक्षण स्थल एवं जीन , परागकण, बीज , पौधे ऊतक , एवं DNA बैंक सम्मिलित हैं। बीज जीन बैंक, वन्य एवं कृषि पौधों के जर्मप्लाज्म को कम तापमान एवं शीत प्रकोष्ठों में संग्रहीत करने का सरलतम उपाय है

श्री संजू

सहायक प्राध्यापक (वनस्पति विज्ञान)

वनस्पति विज्ञान विभाग

भय

मनुष्य हमेशा चिंता से घिरा रहता है। चिंतित होने के कारण ही विचार मस्तिष्क को कभी खाली नहीं छोड़ते। मैं भी ऐसा ही हूं। उम्र के मुताबिक़ मेरी चिंता अपनी पढ़ाई और दोस्तों को लेकर होती है।मै कभी भी अकेले रहना पसंद नहीं करता हूँ। आप कह सकते हैं कि दोस्त मेरे लिए आक्सीजन से कम महत्वपूर्ण नहीं।

बचपन से ही मैं दोस्तों को लेकर संजीदा रहता हूँ।मैं और मेरे दोस्त हर वक्त साथ रहते हैं, और एक दूसरे का हरपरिस्थिति में साथ निभाते हुए आये हैं। मेरी दोस्ती का सफर दिल्ली से शुरू हुआ। मैं 3 वर्ष का था जब दिल्ली चला गया था। वहां मुझे हर कक्षा में अच्छे मित्र और अच्छे अध्यापक मिले। उनका व्यवहार बहुत अच्छा था। वहां अध्यापक अपने छात्रों से हर विषय पर चर्चा करते

थे। कक्षा नवीं की बात है मेरा दाखिला एक दूसरे स्कूल में हो गया।कक्षा आठ तक के अपने मित्रों से दूर हो जाने की वजह से मैं बहुत परेशान और दुखी था। मेरे दुख का कारण था, वहां मेरे किसी मित्र का न होना। उसी वक्त मेरे प्रिय मित्र ने मेरे लिए उसी स्कूल में एडमिशन ले लिया मैं बहुत खुश हुआ। हम दोनों साथ मस्ती करते, पढ़ते और खूब खेलते। मैंने और आदित्य ने 12वीं तक साथ पढ़ा।इसके पश्चात मैं अपने गांव सोमेश्वर आ गया और मैंने स्थानीय महाविद्यालय, हुकुम सिंह बोरा राजकीय महाविद्यालय में एडमिशन ले लिया। मुझे शुरूआती तौर पर यहाँ भी डर लग रहा था कि कोई मेरा मित्र बनेगा या नहीं और उससे भी अधिक भय मन में था अध्यापकों को लेकर, कि न जाने यहां अध्यापकों का अपने छात्रों के साथ व्यवहार कैसा होगा? महाविद्यालय में शुरूआती कुछ दिन अपरिचित माहौल में काटने के बाद एक स्वर्ण अवसर आया। एक दिन मुझे और बाकी छात्रों को कॉलेज से प्रयोगात्मक कार्य मिला। प्रयोगात्मक कार्य ही वह वजह बनी जिससे मेरे जीवन में फिर से सवेरे का उजाला दिखने लगा। इसी प्रयोगात्मक कार्य के दौरान मेरी मुलाकात गुंजा से हुई।

हम लोग भूगोल की कक्षा समाप्त कर घर को जा रहे थे। उस वक्त हमारी चर्चा विभिन्न विषयों के बारे में हुई। हिंदी विषय के प्रयोगात्मक कार्य को लेकर भी हमने चर्चा की और फिर देखते ही देखते हम लोग बहुत अच्छे मित्र बन गए और आज भी हैं। हम दोनों एक दूसरे की सहायता भी करते हैं और बुरे वक्त में एक दूसरे के काम भी आते हैं। फिर एक दिन जब हम प्रोजेक्ट जमा करने गए तो मेरे मन में यहाँ के अध्यापकों को लेकर जो संशय था वह भी मिट गया। मैं मन ही मन सोच रहा था कि न जाने मैम कैसी होंगी? बाद में पता चला कि यहां के सभी अध्यापक दिल्ली से भी अच्छे हैं और हर वक्त अपने छात्रों को अच्छी बातें बताते हैं। कक्षा में अध्यापन के अतिरिक्त भविष्य में हमें आगे क्या करना चाहिए और कैसे करना चाहिए, इस बात को लेकर भी सभी अध्यापक चिंतित रहते हैं। फिर धीरे धीरे मुझे मेरे नए दोस्त मिले किरण, हिमानी, विपिन, रवि और तनुजा। जो मेरे काफी करीब हैं । हम लोग सभी साथ में कॉलेज जाते हैं और रेस्टोरेंट में पार्टी करते हैं। मैं जानता हूँ कि जीवन के ये कुछ वर्ष हमारे जीवन के स्वर्णिम वर्ष हैं, इसलिए हर भय व चिंता से मुक्त होकर मैं इन्हें भरपूर जी लेना चाहता हूँ।

नाम-धीरज चंद जोशी

कक्षा- बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

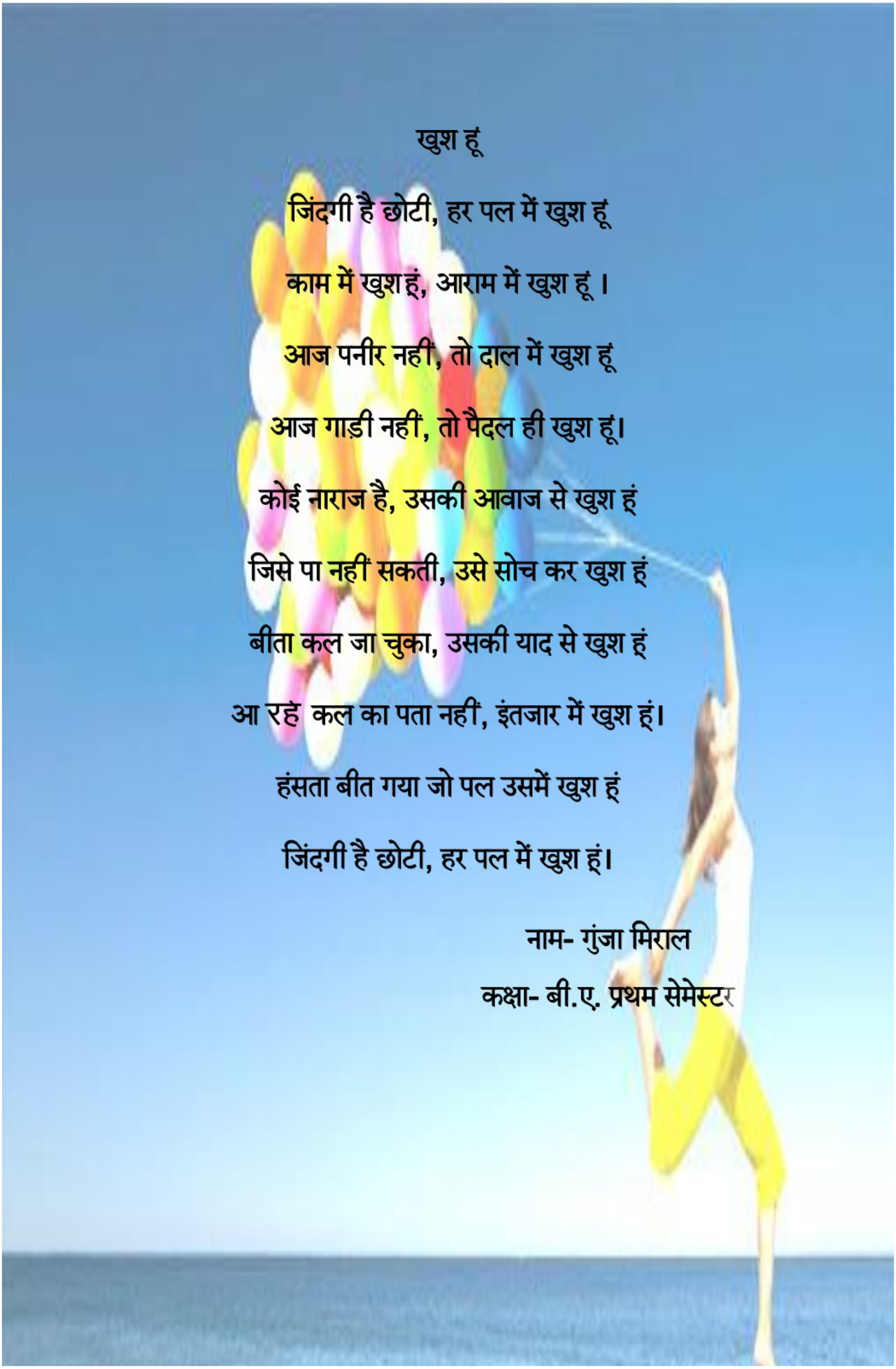

खुश हूं

जिंदगी है छोटी, हर पल में खुश हू
काम में खुश हूं, आराम में खुश हू ।
आज पनीर नहीं, तो दाल में खुश हू
आज गाड़ी नहीं, तो पैदल ही खुश हू।
कोई नाराज है, उसकी आवाज से खुश हूं
जिसे पा नहीं सकती, उसे सोच कर खुश हूं
बीता कल जा चुका, उसकी याद से खुश हूं
आ रहे कल का पता नहीं, इंतजार में खुश हूं।
हंसता बीत गया जो पल उसमें खुश हूं
जिंदगी है छोटी, हर पल में खुश हूं।

नाम- गुंजा मिराल
कक्षा- बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

भूगोल में रोजगार की संभावनाएं

भूगोल बतौर एक विषय जितना व्यापक है, उसमें रोजगार की संभावनाएं

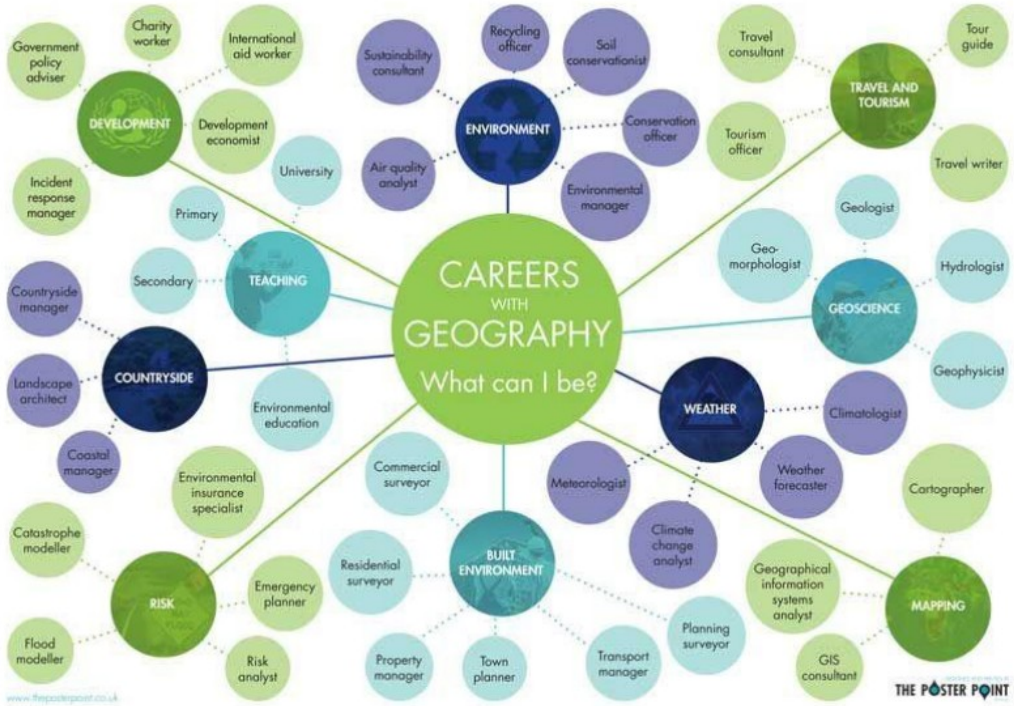

भी उतनी ही अधिक हैं। आज मनुष्य सभ्यता के जिस मुकाम पर है, वहां प्राकृतिक आपदा, जलवायु परिवर्तन, आबादी में अत्यधिक वृद्धि, तेजी से बढ़ता शहरीकरण, प्राकृतिक संसाधनों की अपर्याप्तता और बहुसांस्कृतिक एकीकरण जैसे मुद्दों को भूगोल के पेशेवर ज्ञान से ही हल किया जा सकता है। भूगोल काफी व्यापक विषय है। इसलिए इसमें करियर की संभावनाएं भी काफी अधिक हैं। भूगोल की भौतिक, मानव और पर्यावरण जैसी अलग-अलग शाखाएं हैं। भौतिक भूगोल के तहत पृथ्वी और उसके वातावरण की भौतिक विशेषताओं का अध्ययन किया जाता है। जबकि मानव भूगोल में मनुष्य की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और

सांस्कृतिक गतिविधियों के बारे में जाना-समझा जाता है। पर्यावरण भूगोल में व्यावसायिक पर्यावरण और उसका मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों के साथ-साथ मौसम, जलवायु आदि के बारे में विस्तार से अध्ययन किया जाता है। स्नातक के बाद विशेष सर्टिफिकेट और डिप्लोमा कोर्स भी होते हैं। लेकिन यहां तक पहुंचने के लिए बारहवीं में भूगोल में अच्छे अंक लाना जरूरी है। विषय पर पकड़ भी मजबूत होनी चाहिए , क्योंकि कुछ संस्थानों में भूगोल में दिाखले मेरिट के आधार पर होते हैं तो कई प्रवेश परीक्षा के जरिये दाखिला देते हैं।

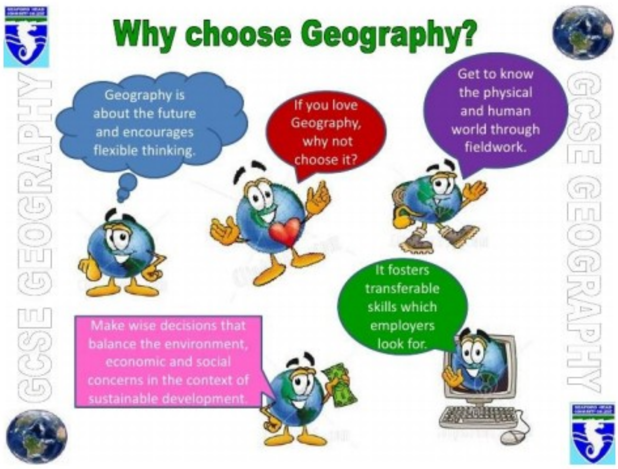

प्रमुख कोर्स

स्नातक-स्नातकोत्तर -स्नातक (बीए)

इसकी अवधि तीन साल है

- स्नातकोत्तर (एमए)। इसकी अवधि दो वर्ष है

- पीएचडी।

पीजी डिप्लोमा कोर्स

- रिमोट सेंसिंग एंड ज्योग्राफिकल इन्फॉर्मेशन सिस्टम। इसकी अवधि एक वर्ष है

- ज्योग्राफिकल कार्टोग्राफी। इस कोर्स की अवधि एक साल है

पीजी सर्टिफिकेट कोर्स

- जियोइन्फॉर्मेटिक्स एंड रिमोट सेंसिंग। इस कोर्स की अवधि छह महीने है

कहां मिलेगा काम भूगोल में पढ़ाई करने के बाद रोजगार के भ रपूर मौके हैं। इस क्षेत्र में ट्रांसपोर्टेशन , एयरलाइट रूट व शिपिंग रूट प्लानिंग , काटार्ेग्राफी, सेटेलाइट टेक्नोलॉजी, जनसंख्या परिषद, मौसम विभाग, आपदा प्रबंधन, पर्यावरण विज्ञान, एजुकेशन, सिविल सर्विसेज आदि क्षेत्रों

में जॉब पा सकते हैं। भूगोल में पेशेवर तौर पर प्रशिक्षित लोग रिमोट सेंसिंग , मैप, खाद्य सुरक्षा, बायोडाइवर्सिटी संरक्षण आदि से जुड़ी एजेंसियों में भी काम करके अच्छा पैसा कमा सकते हैं। कार्टोग्राफर : इनका मुख्य काम नक्शा और उससे संबंधित डायग्राम , चार्ट, ट्रैवल गाइड आदि का निर्माण और विकास करना तथा पु राने नक्शों व दस्तावेजों का जीर्णोद्धार करना है। इन पेशेवरों को सरकारी , सर्वेक्षण, संरक्षण और प्रकाशन क्षेत्र में जॉब मिलता है।

पर्यावरण सलाहकार : इनका मुख्य काम अपने वाणिज्यिक या सरकारी ग्राहकों से पर्यावरण संबंधी नियमों का पालन कराना और विभिन्न पर्यावरणीय मुद्दों पर काम कराना होता है। इन्हें सरकारी और जल से संबंधित संगठनों में जॉब मिलती है।

टाउन प्लानर : इनका काम शहरों , कस्बों, गांवों व ग्रामीण क्षेत्रों के विकास और प्रबंधन की योजना बनाना ; उसमें विकास के स्थायित्व और प्राकृतिक वातावरण की सुरक्षा सु निश्चित करना; मौजूदा बुनियादी ढांचे में सुधार करना और पर्यावरण संबंधी मुद्दों का हल निकालना है। इन्हें सार्वजनिक व निजी दोनों क्षेत्रों में काम मिलता है।

ज्योग्राफिकल इन्फॉर्मेशन सिस्टम्स ऑफिसर : इनका मुख्य कार्य ज्योग्राफिकल इन्फॉर्मेशन सिस्टम्स (जीआईएस) से प्राप्त जटिल भौगोलिक सूचनाओं को एकत्र , संग्रहीत, विश्लेषित, प्रबंधित और प्रस्तुत करना है। इन सूचनाओं का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में पर्यावरण के अनुकूल निर्णय लेने के लिए किया जाता है। इन्हें रक्षा , दूरसंचार और परिवहन , मौसम विज्ञान, तेल, गैस आदि क्षेत्रों में रोजगार मिलता है।

कंजर्वेशन ऑफिसर: इनका कार्य प्राकृतिक वातावरण की रक्षा करना और पर्यावरण के अनुकूल तरीकों के बारे में स्थानीय समुदायों के बीच जागरूकता बढ़ाना है। मुख्य रूप से सार्वजनिक क्षेत्र में काम मिलता है।रीसाइकिलिंग ऑफि सर: इनका मुख्य कार्य रीसाइ क्लिंग को बढ़ावा देकर कचरे को कम करना। पर्यावरण के अनुकूल और अपशिष्ट पदार्थों में कमी की नीतियां व योजनाएं बनाना और विकसित करना है। सरकारी , रीसाइक्लिंग के प्रोजेक्ट्स या पर्यावरण पर काम करने वाली गैर सरकारी संस्थाओं में काम मिलता है । भूगोल में कार्टोग्राफर, सर्वेयर, ड्राफ्टर, टीचर, लेक्चरर जैसे परंपरागत पेशों के साथ -साथ अन्य कई पेशे भी मौजूद हैं, जो अपेक्षाकृत नए हैं।

जर्नलिस्ट : पत्रकारिता का दायरा बड़ा है। इसमें किसी खास विषय में विशेषज्ञता पर आधारित पत्रकारिता के लिए भी काफी संभावनाएं हैं। भूगोल की पढ़ाई कर के ट्रैवल राइटर , एन्वायरन्मेंटल जर्नलिस्ट बना जा सकता है।

एन्वायरन्मेंटल लॉयर: इनका काम प्रदूषण की रोकथाम , जलवायु नियंत्रण और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए सामाजिक जगरूकता फैलाना है। यह पेशा अपनाने के लिए भूगोल में स्नातक करने के बाद नियम -कानून की जानकारी के लिए लॉ करना होगा।

वेदर फोरकास्टर : इनका मुख्य काम मौसम का पूर्वानुमान व्यक्त करना है। इसी तरह कैटेस्ट्रोफ मॉडलर या इमरजेंसी प्लानर के रूप में भी काम कर सकते हैं , जिनका मुख्य काम लोगों को प्राकृतिक आपदा जैसी स्थितियों से निपटने के लिए तैयार करना है। इनका काम इंश्योरेंस कंपनियों को डाटा और कंप्यूटर कैलकुलेशन के जरिये यह बताना भी है किसी आपदा की स्थिति में उनकी कंपनी को कितना घाटा हो सकता है।

लैंडस्केप आर्किटेक्ट : इस विषय में प्रशिक्षित पेशेवरों का मुख्य काम पार्क, नेचर रिजर्व, नई जगहों पर बसावट और इंडस्ट्रियल लैंडस्केप की रूपरेखा बनाना , उन्हें तैयार करना और उनका प्रबंधन करना है। कला विषयों के छात्र मास कम्युनिकेशन में भी अच्छा कार्य कर सकते हैं। प्रिंट मीडिया (समाचार पत्र व पत्रिकाएं), विजुअल मीडिया (फिल्म और टेलीविजन) और ऑडियो माध्यम में वह कार्य कर सकते हैं। इस दिशा में इंटरनेट एक नया क्षेत्र है।

डॉ0सी0पी0वर्मा

असिस्टेंट प्रोफेसर

कैसी महामारी आई

चीन ने ये कैसी महामारी फैलाई,

जिसकीचपेट में सारीदुनिया आई।

देश में फैला विदेश में फैला,

सभी ने इसके संकट को झेला।

बूढे बच्चे और जवानों की शामत आई

बहुतों ने जीती जंग, लाखों ने जान गंवाई।

स्कूल कॉलेज बंद हो गए, बंद हुए रोजगार सारे,

लॉकडाउन ने कमर तोड़ दी, बेहाल हुए लोग सारे

अपनों ने अपनों को खोया, किसी बहन ने कोई भाई,

कहीं गई मां तो कहीं पिता ने जान गंवाई।

इस वायरस ने हम सब को कैसा दिन दिखाया

सब ओर है प्रतिबंध लगा, मुंह पर सबने मास्क चढ़ाया।

जो न कभी देखा न सुना, उसको आज जिया है हमने

शादी ब्याह तीज त्योहार हमने सब डर कर मनाई

जाने कैसी महामारी है जिसमें सारी दुनिया समाई।

नाम-विपेंद्र कुमार कक्षा-बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

महिलाओं के विरुद्ध अपराध सम्बन्धी कानून

समाज के प्रत्येक क्षेत्र में व्यक्तियों की सोच, व्यक्तियों के विचार व्यवहार एवं मानसिकता में बदलाव हो रहा है। परन्तु इसके बावजूद भी आज सार्वजनिक स्थानों, कार्यस्थलों के साथ–साथ घरों व घरों के अन्दर समस्त स्थानों पर महिलाओं को भेदभाव, हिंसा, उत्पीड़न एवं प्रताड़ना का शिकार होना पड़ता हैं। इसी कारण महिलाओं के प्रति होने वाले अपराधों में क्रूरता तथा यौन हिंसा के अपराधों में उत्तरोत्तर वृद्वि हो रही हैं। यौन हिंसा के कारण महिलाओं का मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थय तो प्रभावित होता ही है साथ ही उन्हें शारीरिक चोट का भी अधिक खतरा रहता हैं।

विश्व स्वास्थय संगठन (WHO) के अनुसार विश्व में प्रत्येक 03 में से 01 से अधिक महिलाओं को यौन/शारीरिक हिंसा का दंश झेलना पड़ता हैं। NCRB (National Crime Records Bureau) की रिर्पोट के अनुसार रिपोर्टिंग वर्ष 2015 से 2019 तक सम्पूर्ण भारत में महिलाओं के विरूद्व अपराधों का तुलनात्मक आकड़ा चिंतनीय है–

वर्ष–	**2015**	**2016**	**2017**	**2018**	**2019**
अपराध संख्या –	**329243**	**338954**	**359849**	**378236**	**405861**
वृद्वि % –	**2.95%**	**6.16%**	**5.11%**	**7.30%**	

NCRB की रिर्पोट से महिलाओं के प्रति अपराधों के आकड़ों से रिपोर्टिंग केसेज के अध्ययन से पति व रिश्तेदारों द्वारा क्रूरता के 30.9% वर्ष, 2019 में महिला अपहरण के 17.9% अपराध पंजीकृत होने पाये गये हैं। वर्ष 2019 में हीं बलात्कार (Rape) के मामलों में प्रतिदिन औसतन 87 केसेज दर्ज हुये हैं। इसके अतिरिक्त जो

केसेज दर्ज नहीं हुये हैं अर्थात् Non-Reported cases की असंख्य संख्या का सही अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता।

अतः आज के इस परिदृश्य में यह आवश्यक हो जाता है कि महिलायें अपनी गरिमा और अधिकार के साथ अपना जीवन जी सकें, इसके लिये उनकी सुरक्षा, उनके हित और उनके अधिकारों हेतु प्रचलित नियमों व विधिक प्रावधानों की उन्हें पूर्ण जानकारी होना आवश्यक है। यद्यपि ये समस्त विधिक प्रावधान अपराध घटित होने के उपरान्त सहायक हैं, किन्तु ये प्रावधान एक सीमा तक पीड़िता को

SHOCK (सदमें) से उबारने में सार्थक हो सकतें हैं, साथ ही महिलाओं के प्रति होने वाले अपराधों की रोकथाम के प्रयासों पर भी इन कानूनो का निश्चित ही दूरगामी प्रभाव पड़ेगा।

भारतीय महिलाओं को अपराधों के विरूद्व सुरक्षा प्रदान करने तथा उनकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति में सुधार करने हेतु बनाये गये निम्न कानूनों की जानकारी होना आवश्यक हैः–

1.स्त्रियों के अनैतिक व्यापार (निवारण) अधिनियम–1956

2.दहेज प्रतिषेध अधिनियम–1961

कुटुम्ब न्यायालय अधिनियम–1984

3. सती निषेध अधिनियम–1987

4.महिलाओं का अशिष्ट रूपण प्रतिषेध अधिनियम–1986

5.राष्ट्रीय महिला आयोग अधिनियम–1990

6. गर्भाधारण–पूर्ण लिंग चयन प्रतिषेध अधिनियम–1994
7. घरेलू हिंसा में महिलाओं का संरक्षण अधिनियम–2005
8. बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम–2006
9. POCSO (Protection of Child Against Sexual Offences) अधिनियम–2012
10. कार्यस्थल पर महिलाओं का लैगिंग उत्पीड़न (निवारण) अधिनियम–2013

उपरोक्त के अतिरिक्त मुख्य रूप से भारतीय दण्ड संहिता (Indian Penal Code) में नवीन संशोधनों के साथ महिलाओं के प्रति अपराधों हेतु प्रावधान किये गये हैं। Criminal Law Amendment Act, 2013 द्वारा I.P.C. एवं Cr.P.C. (दण्ड प्रक्रिया संहिता) में महिलाओं के प्रति होने वाले अपराधों में निम्न महत्वपूर्ण संशोधन किये गये हैं:–

1.धारा 326–A तथा 326–B I.P.C. (ACID ATTACK)

यह धारा लिंग निरपेक्ष है, इसमें आरोपी और पीड़ित दोनों हीं किसी भी Gender के हो सकते हैं। जब कि अन्य अधिकतर धाराओं में पीड़ित सिर्फ महिला और आरोपी सिर्फ पुरूष हो सकतें हैं।

Acid हमले द्वारा चोटें पहुचाना– (धारा–326–A)

- दोषी पाये जाने पर–10 वर्ष का कठोर कारावास अथवा आजीवन कारावास।

- पीड़िता की चिकित्सा के लिए जो उसकी चोट आदि के ईलाज हेतु आवश्यक है, जुर्माना धनराशि भी आरोपी को भरनी होगी।

Acid फेंकने/हमले की कोशिश (धारा 326–B I.P.C.)

- दोषी पाये जाने पर 05 से 07 वर्ष तक का कारावास।
- आरोपी को जुर्माना भी पड़ना पड़ेगा।

2- धारा–354 I.P.C. (स्त्री की लज्जा भंग करने के आशय से उस पर हमला या आपराधिक बल का प्रयोग)।

➢ **धारा 354–A I.P.C. (यौन उत्पीड़न)** –किसी पुरूष द्वारा महिला के विरूद्व निम्न कार्यवाहियों को यौन उत्पीड़न समझा जाएगा–

- अनचाहा शारीरिक स्पर्श
- अनचाहा यौन प्रस्ताव/मांग
- महिला की इच्छा के विरूद्व अश्लील साहित्य/फोटो/प्रोनोग्राफिक सामग्री दिखाना।
- यौन अर्थ वाले जुमले, संकेत, लतीफे आदि।

प्रथम 03 श्रेणियों के अपराधों में 03 वर्ष का कठोर कारावास तथा चौथी श्रेणी के अपराध में 03 वर्ष का कारावास।

➢ **<u>धारा–354–B I.P.C.</u>** (किसी स्त्री को निर्वस्त्र करने का प्रयास करना)।

- 03 से 07 वर्ष तक का कारावास
- साथ में जुर्माना भी।

➢ **<u>धारा–354–C I.P.C.</u>** (दर्शन रति–तांक झांक)

- निजि गतिविधियाँ करती हुई या कोई निजी यौन कार्य कर रहीं महिला को उसकी सहमति के बिना घर, सार्वजनिक शौचालय, एकांत स्थानों पर देखने या कैमरें

में फोटो खीचनें पर, जहां उसे देखे जाने की उम्मीद न हों।

- 01 से 03 वर्ष तक का कारावास।
- पुनरावृत्ति करने पर 03 से 07 वर्ष तक का कारावास की अवधि बढ़ाई जा सकती हैं।

➢ **धारा 354–D I.P.C. (STALKING)-**

किसी स्त्री का जबरन पीछा करना या उसे परेशान करने की कोशिश।

- खुलेआम, छिपकर अथवा महिला के फोन, इंटरनेट, ई–मेल या अन्य संचार उपकरणों की ताका–झाकीं।
- 03 वर्ष तक का कारावास।
- अपराध की पुनरावृत्ति पर 05 वर्ष तक का कारावास।
- गैर जमानतीय (Non Bailable) अपराध।

3 – धारा–370 I.P.C. (तस्करी – TRAFFICKING)

- यह धारा भी लिंग निरपेक्ष है। महिलाओं और बच्चों (लड़का/लड़की) की तस्करी (मानव तस्करी) को इस धारा द्वारा अपराध की श्रेणी में रखा गया हैं।
- 07 साल से 10 साल तक कठोर कारावास।
- अवयस्क बच्चों की तस्करी के अपराध में 10 वर्ष से लेकर आजीवन कारावास तक।
- लोकसेवक या पुलिस अधिकारी के अपराध में शामिल होने पर आजीवन (जीवनपर्यन्त) कारावास व जुर्माना।
- गैर जमानतीय (Non Bailable) अपराध।

4. धारा–375 I.PC (RAPE - बलात्कार):-

- संशोधित कानून में बलात्कार की परिभाषा को व्यापक बनाया गया हैं। इस संशोधित कानून में सहमति (CONSENT) की परिभाषा को और स्पष्ट किया गया हैं।

- नशे की दशा में, बेहोशी, दवा के असर या कोमा की स्थिति में तथा धमकी या डर की हालत में किसी महिला के साथ यौन कार्य बलात्कार ही माना जायेगा।
- यदि महिला यह नहीं समझती कि वह किस बात की सहमति दे रही है (भाषा न आने पर, मानसिक कमजोरी, विकलांगता, अक्षमता य पागलपन की स्थिति में) तब भी बलात्कार ही माना जायेगा।
- मात्र इसलिये कि महिला ने यौन सम्बन्ध का शारीरिक विरोध नहीं किया अथवा ना नहीं कहा, इसे यौन सम्बन्ध बनाने के लिये महिला की सहमति नहीं मानी जायेगीं।
- सहमति तभी मानी जायेगी जब महिला ने सकारात्मक तरीके से जानबूझकर हाँ जताया हो।

5- धारा–376 (2) I.P.C. (संगीन बलात्कार)

- हिरासत (Custody) में बलात्कार, पुलिसकर्मी, संस्थानों (जेल,रिमाण्ड–होम आदि) के आधिकारिक पदाधिकारी, सरकारी कर्मचारी, अस्पताल के कर्मचारी, वर्दीधारी पुरूष द्वारा बलात्कार।
- किसी महिला के रिश्तेदार, अभिभावक,अध्यापक या ऐसा कोई भी व्यक्ति जो उस महिला का विश्वस्त हो या उसके ऊपर कोई प्राधिकार हो द्वारा बलात्कार।
- साम्प्रदायिक हिंसा के दौरान बलात्कार।
- सहमति देने में असमर्थ महिला के साथ।
- आधिकारिक पद पर आसीन व्यक्ति द्वारा।
- एक ही महिला के साथ बार– बार।
- ऐसा बलात्कार– जिसके परिणाम स्वरूप महिला शारीरिक रूप से विकलांग या मानसिक तौर पर असक्षम हो गई हो या उसे गंभीर चोट आई हो।
- गर्भवती महिला के साथ।
- 16 वर्ष से कम उम्र की लड़की के साथ।

- 10 वर्ष से आजीवन कारावास तक का कारावास, साथ में जुर्माना।

➢ **धारा–376–A, I.P.C.- (मृत्यु व निष्क्रिय अवस्था में पहुँचाना)**

- कम से कम 20 वर्ष का कारावास।
- आजीवन कारावास तथा मृत्युदण्ड भी।

➢ धारा–376–B, I.P.C.(पति द्वारा पत्नी के साथ SEPRATION के दौरान बिना पत्नी की सहमति के यौन सम्बन्ध को बलात्कार माना जाएगा)।

02 से 05 वर्ष तक का कारावास।

धारा–376–C I.P.C.- (हिरासत में यौन हिंसा)

- आधिकारिक पद का दुरपयोग कर महिला को यौन सम्बन्ध के लिए मजबूर करना (जो संगीन बलात्कार न हो, जिसमें ऐंसा दर्शाया जाये कि रिश्ता सहमति के साथ बनाया गया है)।
- ऐसी स्थिति में महिला की सहमति के बावजूद हिरासत में बनाये गये यौन सम्बन्ध को अपराध माना गया है।
- 05 से 10 वर्ष तक का कारावास।

➢ **धारा–376–DI.P.C.-(सामूहिक बलात्कार–GANG RAPE):–**

- इस अपराध में कारावास की अवधि 10 वर्ष से बढ़ाकर 20 वर्ष कर दी गयी है, जो आजीवन कारावास भी हो सकती है।
- **इस अपराध में दोषी को पीड़ित के इलाज और पुनर्वास के खर्चे के लायक मुआवजा देना होगा।**

➢ **धारा–376–E, I.P.C.- (आदतन अपराधों की सजा):–**

- I. P. C. की धारा–376, 376–A या 376–D के अंतर्गत कारावास/सजा काट चुके व्यक्ति को पुनः अपराध करने पर आजीवन कारावास या मृत्युदण्ड का प्रावधान।

6– **धारा 509 I. P. C. (महिला की लज्जा का अनादर करना):–**

- महिला की लज्जा का अनादर करने के आशय से कोई शब्द, कोई ध्वनि या अंग विक्षेप करना अथवा महिला की एकान्तता का अतिक्रमण करना।
- 03 वर्ष का कारावास एवं जुर्माना/आर्थिक दण्ड।

उपरोक्त के अतिरिक्त अवयस्क बच्चों (लड़का/लड़की) के विरूद्व यौन अपराधों के लिए POCSO (Protection of Child Against Sexual Offences) Act-2012 में 18 वर्ष से कम आयु के बच्चों के साथ किसी तरह का Sexual Offence के आरोपियों को दण्डित करने का विशेष प्रावधान है। बच्चों को किसी भी तरह से Sexually Abuse किया जाता है, जिनमें PORNOGRAPHY आदि के माध्यम से शोषण भी शामिल हैं तो अपराध की गंभीरता को देखते हुए इस Act में आजीवन कारावास से भी दण्डित किया जा सकता हैं।

7.CRIMINAL LAW AMENDMENT ACT-2013 में संशोधन के उपरान्त महिला के विरूद्व अपराधों में त्वरित/तत्काल विधिक कार्यवाहीं तथा पीड़िता को चिकित्सकीय सुविधा देने हेतु दायित्व व इसमें विफल रहने पर दण्ड की व्यवस्था की गयी है:–

धारा–166–A, I.P.C. -(पुलिस अधिकारी की जवाबदेहीं)

- कोई पुलिस अधिकारी या अन्य सरकारी कर्मचारी अपने पास आई हुई महिला, जो I.P.C. की धारा 326–A, 326-B, 354, 354-B, 370, 370-A, 376, 376-A, 376-B, 376-C, D, E तथा 509 की शिकायत दर्ज कराने आई है की शिकायत/ F.I.R दर्ज नहीं करता है।
- कम से कम 06 माह और अधिकतम 02 वर्ष तक का कारावास तथा आर्थिकदण्ड से दण्डित।

➢ **धारा – 166–B, I.P.C. -(Acid Attack व Rape की शिकार महिला का निशुल्क इलाज)**

- धारा 326–A (Acid Attack) 376 तथा 376–A से E (Rape) के अंतर्गत पीड़िता का सभी अस्पताल, सरकारी, निजी, केन्द्र सरकार, राज्य सरकार, स्थानीय संस्थाओं अथवा किसी व्यक्ति द्वारा संचालित सभी चिकित्सालय Cr. P.C. (Criminal Procedure Code) की धारा–357–C के प्रावधानों के अनुसार तत्काल निशुल्क प्राथमिक चिकित्सा या ईलाज करेंगें और इस तरह की घटना की सूचना तत्काल पुलिस को देगें।
- 06 माह कम से कम और अधिकतम 02 वर्ष तक का कारावास व आर्थिक दण्ड से दण्डित।

भारतीय दण्ड विधान (Indian Penal Code) के अतिरिक्त

महिलाओं के विरूद्व अपराधों के साथ–साथ इन अपराधों के माननीय न्यायालय में व्रिचारण आदि हेतु महिलाओ को कुछ विशेष अधिकार दिये गये है, जिनका विवरण Cr. P.C (Criminal Procedure Code) में है–

- माननीय न्यायालयों में पुलिस द्वारा आरोप पत्र दाखिल करने के दो माह के भीतर, मामले की सुनवाई पूरी हो जानी चाहिए।
- पीड़ित महिला का बयान– धारा 376, 354, 509 अथवा इससे जुड़ी धाराओं आदि के अंतर्गत विवेचना के मध्य महिला पुलिस Officer अथवा महिला अधिकारी द्वारा दर्ज किया जाएगा।

- यदि पीड़िता अस्थाई/स्थाई तौर पर मानसिक रूप से विकलांग है तो उसका बयान– विडियोग्राफी के द्वारा अथवा पीड़ित महिला के आराम का ध्यान रखते हुए अथवा एक विशिष्ट दुभाषिये/ अनुवादक की मौजूदगी में दर्ज किया जाएगा।
- **आरोपी की शिनाख्त**–यदि आरोपी की शिनाख्त/पहचान (Identification) करने वाला व्यक्ति मानसिक या शारीरिक रूप से अक्षम या विकलांग है तो शिनाख्त प्रक्रिया मा0 न्यायिक मजिस्ट्रेट की निगरानी में अथवा वीडियोग्राफी द्वारा की जायेगी।

Cr.P.C. की धारा– 357 में पीड़िता को Compensation (मुआवजा) दिये जाने का प्रावधान है। राज्य द्वारा दिये जाने वाले मुआवजे के अतिरिक्त पीड़िता को धारा

326–A (Acid Attack) तथा धारा 376–D (Gang Rape) के अपराधों में अतिरिक्त मुआवजा की घनराशि भी अदा की जायेगी।

इसी तरह Indian Evidence Act (भारतीय साक्ष्य अधिनियम) की धारा 53–A, 114-A तथा 146 (3) में भी महिलाओं की सहमति व मान0 न्यायालय में उन्हें CROSS EXAMINATION के समय चरित्र आदि सम्बन्धी प्रश्न पूछे जाने पर भी रोक लगाई गयी हैं।

उपरोक्त वर्णित कानूनी प्रावधानों से यह स्पष्ट हो जाता है कि महिलाओं के विरूद्व यौन हिंसा, उत्पीड़न, प्रताड़ना और उनके साथ छेड़खानी करने, अंग प्रदर्शन, उनका पीछा करने आदि हेतु भारतीय दण्ड विधान (I.P.C.) व अन्य अधिनियमों में एक बृहद कानूनी प्रावधानों की तथा पीड़िता को मुआवजा की घनराशि दिये जाने की व्यवस्था की गयी है। साथ ही कार्यस्थल पर की गयी यौन हिंसा, दहेज प्रतिषेध, स्त्रियों के अनैतिक व्यापार आदि सम्बन्धी जो कानून बनाये गये हैं, उनका भी विवरण इस लेख में दिया गया हैं। किन्तु इन समस्त कानूनी प्रावधानों के बीच महिलाओं को अपनी सुरक्षा के प्रति स्वयं जागरूक रहना होगा। और किसी पीड़ित महिला को न्याय दिलाने हेतु स्वयं आगे आकर नैतिक रूप से पतित

पुरूषों/अपराधियों के मुंह पर खुल कर तमाचा मारना होगा, तभी इन कानूनों की सहायता से महिलायें, महिलाओं के ऊपर हो रहे अपराधों की रोकथाम करने में सफल हो सकेंगे। महिलाओं को यह गुरूमंत्र सदैव याद रखना ही होगा।

"GOD HELPS THOSE WHO HELP THEMSELVES."

डा0अर्चना जोशी
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, इतिहास

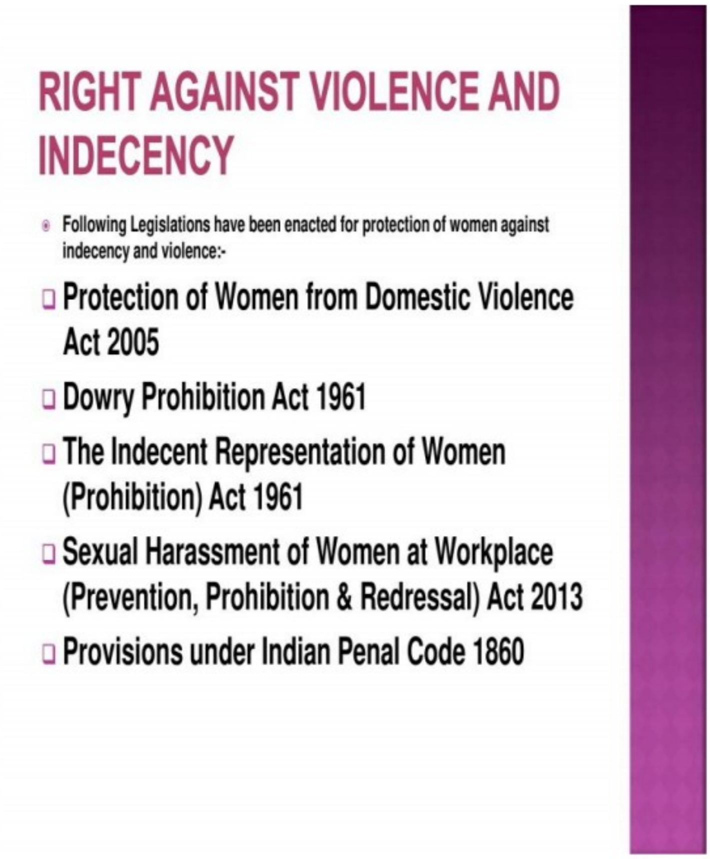

कोरोना का साया

कोरोना की मार पड़ी है भारी
सब कर रहे है ऑनलाइन तैयारी।
विघालय का द्वार ना अब खुलेगा,
करवाओ रिचार्ज फोन पर भारी।

सारे बच्चे बड़े उदास पड़े हैं,
मन मार ऑनलाइन में खड़े हैं।
हाय कैसी विपदा आन पड़ी है,
जिंदगी कहाँ पर आज खड़ी है ।

याद आ रही गुरु की अमृतवाणी
जिस पर लगा दी रोक कोरोना ने भारी
गुजर रही जिंदगी ऐसे मुकाम से,
अपने ही दूर हो जाते थोड़ी जुकाम से ।

वक्त ने भी कैसे दिन हैं दिखलाए
दूरियों को ही आज दवा बनाएं।
बस करो अब कोरोना कोरोना
है सभी को जल्दी ठीक होना।

नाम-कविता पाटनी
कक्षा- बीए प्रथम सेमेस्टर

ग्रामीण भारत में रोजगार के अवसर

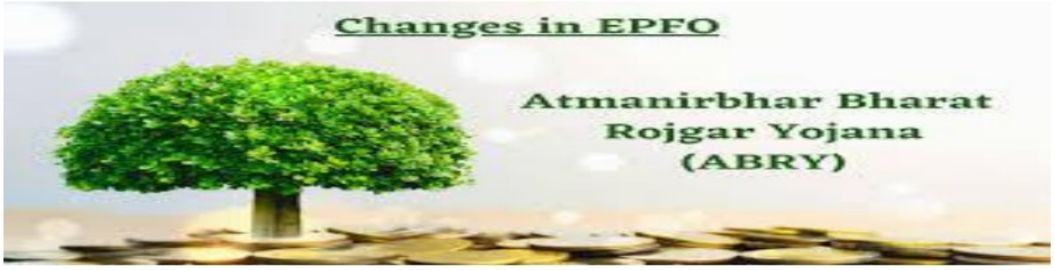

यह एक जाना माना सत्य है कि शहरीकरण की प्रक्रिया ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था के प्रति उदासीनता पैदा की है। संपूर्ण आर्थिक व्यवस्था में ग्रामीण क्षेत्र पिछले कई दशकों से महज कच्चे माल के स्रोत बन कर रह गए हैं। पारंपरिक ग्रामीण अर्थव्यवस्था जो कि कृषि हस्तशिल्प लघु कुटीर उघोगों पर निर्भर थी, वह औघोगिकीकरण, शहरीकरण तथा वैश्वीकरण के आने से समाप्त सी हो गई है। भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार कृषि की नवीन तकनीकों के इस्तेमाल के बावजूद, गहरे संकट से जूझ रही है। ग्रामीण रोजगार के महत्वपूर्ण व आकर्षक क्षेत्र होने के बावजूद कृषि क्षेत्र से लोगों का पलायन जारी है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण की एक रिपोर्ट में पिछले दिनों बताया गया था कि करीब 40% किसान कृषि छोड़कर कुछ और रोजगार करना चाहते हैं। देश के ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर भारी संख्या में पलायन भी ग्रामीण रोजगार की निराशाजनक तस्वीर प्रस्तुत करते हैं । सोमेश्वर जहां कृषि मुख्य व्यवसाय है और अभी

भी लोग कृषि से जुड़े हुए हैं ऐसी जगहों पर कृषि के प्रति एक आशा पैदा होती है। बस जरूरत है उसे सरकारी सहारा देने की। ग्रामीण क्षेत्र विकास की राह पर शहरों जैसा दौड़ पाने में लाचार है किंतु इस लाचारी को दूर करने के लिए ग्रामीण विकास मंत्रालय ने कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं -पी यू आर ए, मनरेगा, ग्रामीण विधुतीकरण, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, स्वरोजगार कार्यक्रम, आधारभूत संरचना निर्माण सहित कई ऐसी योजनाएं ग्रामीण विकास व रोजगार वृद्धि हेतु चलाई जा रही हैं। पिछले कुछ वर्षों से इन योजनाओं के लाभकारी प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई भी दे रहे हैं। कोविड-19 के दौरान लॉकडाउन से उपजी परिस्थितियों ने ग्रामीण क्षेत्र की ओर मुड़ने के लिए लोगों को विवश किया है, जिसे रिवर्स पलायन के रूप में देखा जा रहा है। ऐसे समय में सरकार और भी कई महत्वपूर्ण योजनाएं बनाकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान कर सकती है। इस आलेख का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में रह रहे सभी युवाओं को कुछ महत्वपूर्ण योजनाओं व प्रयासों की जानकारी देना है

1- **मनरेगा –**

विश्व की सबसे बड़ी तथा महत्वकांक्षी योजना महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना 2006 में आरंभ की गई थी। लागू होने के 6 वर्ष के भीतर ही इस योजना ने वास्तव में ग्रामीण क्षेत्रों की तस्वीर बदल डाली है। 2010-11 के दौरान इस योजना के तहत 5.49 करोड़ परिवारों को रोजगार मिला था आंकड़ों के मुताबिक हर साल औसतन एक चौथाई परिवार ने इस योजना से लाभ उठाया है। मनरेगा द्वारा कुल कामों के 51% कामों में अनुसूचित जाति जनजाति तथा 45% महिलाओं को कार्य मिला है। निश्चित रूप से मनरेगा न केवल ग्रामीण रोजगार के लिए लाभकारी सिद्ध हुआ है बल्कि इसने ग्रामीणों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को सुधारने का मौका भी प्रदान किया है।

उत्तराखंड मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना 2021- की शुरूआत राज्य के मुख्यमंत्री श्री त्रिवेंद्र सिंह रावत जी द्वारा प्रवासी मजदूरों को रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए की गई है।

इस योजना के अंतर्गत उत्तराखंड में वापस लौटे प्रवासी मजदूरों को अपना खुद का उद्योग आरंभ करने के लिए सरकार द्वारा लोन मुहैया कराया जाएगा। यह लोन सरकार द्वारा राष्ट्रीय कृत बैंकों, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों, राज्य सहकारी बैंकों और अन्य शेड्यूल्ड बैंकों के माध्यम से दिया जाता है।

2- **जीविका आवश्यक प्रोत्साहन योजना** - अनुसूचित जाति एवं जनजाति हेतु जीविका अवसर प्रोत्साहन योजना का क्रियान्वयन राज्य सरकार द्वारा वित्तीय वर्ष 2004-05 से किया गया है। समाज कल्याण विभाग द्वारा अनुसूचित जाति एवं जनजाति के व्यक्तिगत एवं सामूहिक रोजगार के अवसर विकसित करने हेतु इस योजना का आरंभ किया गया था।

उत्तराखण्ड शासन
उत्तराखंड
मुख्यमंत्री स्वरोजगार
योजना

3- **प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम-** प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम भारत सरकार का सब्सिडी युक्त कार्यक्रम है। यह दो योजनाओं- प्रधानमंत्री रोजगार योजना और ग्रामीण रोजगार सृजन कार्यक्रम को मिलाकर बनाया गया है। इस योजना का उद्देश्य नए स्वरोजगार उद्यम की स्थापना के जरिए देश के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर पैदा करना, पारंपरिक दस्तकारों, ग्रामीण और शहरी बेरोजगार युवाओं को साथ लाना तथा ग्रामीण एवं शहरी बेरोजगार युवाओं को निरंतर और सतत रोजगार उपलब्ध कराना है, ताकि ग्रामीण पलायन को रोका जा सके।

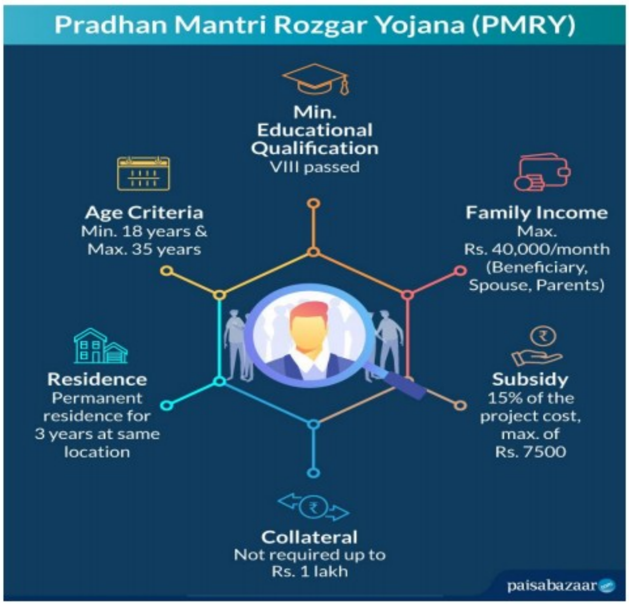

4- **कृषि क्लीनिक और कृषि व्यापार केंद्र योजना** -भारत सरकार के कृषि मंत्रालय ने राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक तथा मैनेज के सहयोग से यह योजना आरंभ की है। इसका उद्देश्य देशभर के किसानों तक कृषि के नवीनतम तरीके पहुंचाना है।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य कृषि स्नातकों की बड़ी संख्या में उपलब्ध विशेषज्ञता का सदुपयोग करना भी है। इस कार्यक्रम के प्रति समर्पित रहकर सरकार अब कृषि और कृषि से संबंधित अन्य विषयों जैसे बागवानी, रेशम उत्पादन, पशुपालन, वानिकी, गव्य पालन, मुर्गी पालन तथा मत्स्य पालन में स्नातकों को आरंभिक प्रशिक्षण देती है। प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले स्नातक उधोग के लिए विशेष आरंभ वितरण के लिए आवेदन कर सकते हैं।

नाम- विपेंद्र कुमार

कक्षा-बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

मां

मां तो जन्नत का वह फूल है
प्यार की खुशबू लुटाना
जिसका एकमात्र उसूल है।
मां के आगे सबकुछ धूल है,
दुनिया की सारी दौलत
सारी मोहब्बत फिजूल है ।
संस्कार शिक्षा की मां मूल है,

ज्ञान किताबी दुनिया का कुछ नहीं
मां की चरण धूल है।

ढूंढना भगवान को मंदिर में,

हम सबकी ही तो भूल है।

मां से बड़ा कोई भगवान नहीं

मां इस दुनिया की शक्ति अमूल है।

नाम-लीला राना कक्षा- एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर

सारे दुखों को हर लेती है मां
बीमार रहते काम कर लेती है मां
लाख गलती माफ कर देती है मां
जान दांव पर रख जन्म देती है मां
अपनी ख्वाहिशों को छोड़ अधूरा
बच्चों की खुशियां पूरा करती है मां
जान दांव पर रख जन्म देती है मां

नाम-पुष्पा राना
कक्षा- एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर

भारतीय अर्थव्यवस्था पर कोरोना संक्रमण का प्रभाव"

22 मार्च 2020 से लगभग एक साल से अधिक का समय हो गया है जबसे लॉकडाउन ने अचानक हमारे जीवन पर आक्रमण किया था और, हमारे पूरे जीवन को ही बदल डाला। हमारे जीवन को पूर्ण रूप से संकुचित कर दिया और हमारी पूरी स्वतंत्रता ही छीन ली । हम अपने घरों तक ही सीमित रह गए हैं। हमारी बहु आयामी गतिविधियां छिन गई हैं। नौकरी पेशा इंसान वर्क फ्रॉम होम की चिंता में व्यस्त हैं। बच्चों का पूरा जीवन, उनका स्कूल, स्कूल के सहपाठी, सहपाठ्यगामी गतिविधियां सबकुछ स्थगित हैं।यही नहीं सहकर्मी, समूह, प्रतियोगिता, पिकनिक व पर्यटन आदि सब उनसे दूर हो गए

हैं। लाखों लोगों की नौकरियां खत्म गई तथा लोगों के लिए अपनी आवश्यक आवश्यकताओं को पूरा करना ही मुश्किल हो गया है। बहुत बड़ी संख्या में शहरों से जनसंख्या का गांव की ओर पलायन हो रहा है क्योंकि, मांग में कमी के कारण उत्पादन घट रहा है और कारखानों में भारी मात्रा में छंटनी हो रही है। इस तरह से कहा जा सकता है कि कोरोना काल में पूरी अर्थव्यवस्था में ही उथल-पुथल मच गई है

अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के नोमय मजिद के अनुसार पलायन करने वाले लोगों की संख्या 50लाख थी जबकि, भारतीय प्रबंधन संस्थान अहमदाबाद के चिन्मय थमे के अनुसार ऐसे लोगों की संख्या 3 करोड़ थी। हम सभी जानते है कि भारतीय अर्थव्यवस्था में प्रवासियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। 2018 में विश्व बैंक के गौरव कुमार तथा क्योंग योंग किम ने पाया कि बिहार के सकल घरेलू उत्पाद में प्रवासियों के प्रेषण का हिस्सा लगभग 35% रहा है किंतु ,बंदी के कारण इन प्रेषणों में भारी गिरावट आई है। कोरोना महामारी ने स्वास्थ्य पर ही नहीं अर्व्यथवस्था पर भी भारी चोट की है। पर्यटन, होटल, एयरलाइसं जैसे क्षेत्र बुरी तरह प्रभावित हुए हैं। छोटे उधोगों पर ताले लटक गए हैं और एक ही झटके में लाखों लोग सड़क पर आ गए हैं।

कोरोना संक्रमण से पहले भी भारत में बड़े पैमाने में बेरोजगारी थी। मार्च 2016 में बेरोजगारी दर 8.7 फ़ीसदी थी जो 15 मार्च 2017 में कम होकर 4.7 फ़ीसदी रह गई थी किंतु मार्च 2019 में यह फिर बढ़कर 6.7% हो गई । पिछले वर्ष कोरोना के कारण देशभर में लॉकडाउन लगाना पड़ा था, जिसके कारण अप्रैल 2020 में बेरोजगारी 23.52% के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गई थी। सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनामी द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, "2021 में बेरोजगारी दर फरवरी माह में कम होकर 6.5 फीसदी रह गई।" इसे ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि में बढ़े

कामकाज और शहरी क्षेत्रों में औद्योगिक गतिविधियों के तेज होने का परिणाम माना जा सकता है।

राज्यों की बात करें तो एक समय में औद्योगिक हब कहा जाने वाला हरियाणा आज बेरोजगारी में नंबर एक पर आ गया है। यहां बेरोजगारी दर 28.1 फ़ीसदी दर्ज की गई है, इसके बाद गोवा 22.1फीसदी तथा राजस्थान में 19.7 फीसदी बेरोजगारी रिकॉर्ड की गई है। सीएमआईई के एक ताजा अध्ययन के अनुसार-'अप्रैल माह में 75 लाख लोगों लोगों की नौकरी चली गई है।

कोरोना का असर भारत की जीडीपी पर भी दिखाई दिया। भारत सरकार की तरफ से जारी किए गए आंकड़ों के अनुसार 2019 में जीडीपी 4% जबकि वित्त वर्ष 2020-21 में जीडीपी ग्रोथ कम होकर -7.3% पर पहुंच गई। केंद्र सरकार की तरफ से जारी आंकड़ों के मुताबिक, '2021 में जनवरी से मार्च तक की तिमाही में जीडीपी की कुल ग्रोथ 1.6% रही।'

राजकोषीय घाटा पिछले कई दशकों में सबसे ज्यादा रहा है। वित्त वर्ष 2020-21 में राजकोषीय घाटा जीडीपी का कुल 9.93% रहा। कोविड-19 के परिणामस्वरूप अर्थव्यवस्था को बहुत बड़ा झटका लगा। आर्थिक गतिविधियों को दोबारा गति प्रदान करने के लिए 12 मई 2020 को प्रधानमंत्री जी द्वारा 20 लाख करोड़ रूपए के आर्थिक पैकेज

की घोषणा की गई जो भारत की जीडीपी का 10% थी। इस प्रोत्साहन पैकेज को आत्मनिर्भर भारत अभियान का नाम दिया गया।

आत्मनिर्भर भारत योजना के अंतर्गत, भारत को हर उस क्षेत्र में सक्षम होना है जिनमें, वह अन्य देशों पर निर्भर है।आत्मनिर्भर भारत अभियान का उद्देश्य भारत के संसाधनों को भारत में ही अधिक उपयोग में लाना है। युवा वर्ग को रोजगार के लिए अग्रेषित करना तथा आत्मनिर्भर बनाना भी

इसका उद्देश्य है।इससे देश का विकास होगा और भारत एक आत्मनिर्भर राष्ट्र बनेगा। कोरोना जैसी महामारी से लड़ने के लिए देश में पीपीई किट, वेंटिलेटर और सैनिटाइजर आदि चीजों का भी उत्पादन होने लगा है, जिनका पूर्व में बहुत कम उत्पादन होता था। इसी प्रकार कोरोना का टीका बनाकर भारत ने विश्व को आत्मनिर्भर होने का संदेश दिया है।

आत्मनिर्भर भारत मिशन को दो चरणों में लागू किया जाएगा-प्रथम चरण:-

इसमें चिकित्सा, वस्त्र, इलेक्ट्रॉनिक्स, प्लास्टिक, खिलौने जैसे क्षेत्रों को प्रोत्साहित किया जाएगा जिससे कि देश में स्थानीय विनिर्माण और निर्यात को बढ़ावा दिया जा सके।

दूसरा चरण:-

इस चरण में फर्नीचर, फुटवेयर, एयर कंडीशनर, पूंजीगत सामान, मशीनरी, मोबाइल एवं इलेक्ट्रॉनिक्स, रत्न एवं आभूषण, फार्मास्यूटिकल, टेक्सटाइल आदि शामिल है।

आत्मनिर्भर भारत के पांच स्तंभ:-

1-अर्थव्यवस्था- जो वृद्धिशील परिवर्तन के स्थान पर बड़ी उछाल पर आधारित हो।

2-अवसंरचना- ऐसी अवसंरचना जो आधुनिक भारत की पहचान हो।

3-प्रौद्योगिकी- 21वीं सदी प्रौद्योगिकी संचालित व्यवस्था पर आधारित प्रणाली।

4- गतिशील जनसांख्यिकी- जो आत्मनिर्भर भारत के लिए ऊर्जा का स्रोत है।

5- मांग- भारत की मांग और आपूर्ति श्रृंखला की पूरी क्षमता का उपयोग किया जाना चाहिए।

कोविड-19 के कारण उपजी परिस्थितियों से निपटने के लिए देश के सभी नागरिकों को सशक्त करने की आवश्यकता है ताकि, वे देश से जुड़ी समस्याओं का समाधान कर सकें तथा एक बेहतर भारत का निर्माण करने में अपना योगदान दे सकें। इस संकट से निपटने के लिए सभी राज्यों के आर्थिक, सामाजिक, स्वास्थ्य चिकित्सा और विधि विषयों के विशेषज्ञों को साथ मिलकर प्रयत्न करने होंगे। सबका साथ सबका विकास और सबका विश्वास के नारे को साथ लेकर चलना होगा ।

श्रीमती नीता टम्टा,

असिस्टेंट प्रोफेसर अर्थशास्त्र

पर्यावरण संरक्षण

पेड़ों को तुम काट रहे हो, प्रदूषण को पाल रहे हो।
अद्भुत जीवन को मानव संकट में क्यों डाल रहे हो?
जो पेड़ तुम्हें जीवन देते हैं, उनका जीवन ही हर लेते हो?
पेड़ों को यों काट काट कर संकट को क्यों बुला रहे हो?
यूं ही पेड़ कटेंगे तो,स्वच्छ हवा को तरसोगे पल पल
धरती बंजर हो जाएगी दाने-दाने को तड़फोगे कल
ग्लोबल वार्मिंग के खतरे से, कैसे फिर बच पाओगे?
हर जगह प्रदूषण पाओगे बीमारी से ही मारे जाओगे।
मौका है, अब भी मानव बंद करो तुम यह दानवता।
सुखमय जीवन जीना है तो,वृक्षारोपण करो मानवता।
जब सुरक्षित होगा पर्यावरण,सुरक्षित होगा जीवन सबका।
पर्यावरण स्वच्छ बनाकर,पेड़ लगा करो भला सबका।
पर्यावरण को नहीं बचाएंगे, हम भी धरती पर नहीं रह पाएंगे।
मिलकर करें आज वृक्षारोपण होगा तभी पर्यावरण संरक्षण।

नाम- मंजू राणा
कक्षा-एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर

सकारात्मक सोच

मनुष्य को हमेशा अच्छा और सकारात्मक सोचना चाहिए, क्योंकि जो मनुष्य सकारात्मक सोचता है उसके साथ हमेशा अच्छा ही होता है। अगर अच्छा नहीं भी होता तो मनुष्य को लगता है कि हमारे साथ जो हो रहा है अच्छा है। उसे अच्छा इसलिए लगता है क्योंकि वह उसमें भी ईश्वर की इच्छा या सब कुछ अच्छा ही देखता है।अच्छा या बुरा मन की दशा है।

हमारा मन हमसे जैसा कहता है हम उस व्यक्ति या समय को उसी अनुरूप देखते और समझते हैं। अपनी इस बात के लिए मैं उदाहरण देना चाहूंगी दो परिस्थितियों का-एक स्थिति में वह बूढ़ा व्यक्ति है जो जीवन के खट्टे मीठे अनुभव समेट चुका है, और मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहा है। उसके लिए जीवन की कोई भी खुशी कोई मायने नहीं रखती। ये वही सारी खुशियां या परिस्थितियां हो सकतीं हैं जिन्हें पाने के लिए उसने जीवन भर संघर्ष किया। जबकि दूसरी ओर एक बच्चा है जो जीवन और दुनियादारी से

अनजान है वह शमशान घाट में भी अपने खेल ढूंढ लेता है। कहने का अर्उथ यही है कि मन है जो हमें सुखी या दुखी बनाता है।

हम किसी भी स्थिति में अच्छा महसूस कर सकते हैं यदि मन में सकारात्मकता होती है तो।हमें अच्छा लगने का एक कारण यह भी होता है कि हम दूसरों के बारे में अच्छा सोचते है। दूसरों के बारे में सकारात्मक सोचने वाला व्यक्ति कभी भी दुखी नहीं रहता है। जो मनुष्य दूसरों के बारे में अच्छा और सही सोचता है, उसे हमेशा यही लगता है कि दूसरा व्यक्ति भी मेरे बारे में अच्छा ही सोच रहा है और यही सोच उसे खुश रखती है। हमें याद रखना चाहिए कि कोई भी इंसान हमारे

बारे में कितना भी बुरा क्यों न सोच रहा हो, हमें उसके बारे में सिर्फ अच्छा ही सोचना चाहिए। मनुष्य को अच्छा बनने के लिए अच्छा सोचना और अच्छा करना चाहिए।

मनुष्य को कभी भी किसी के बारे में अपने दिल में नफरत नहीं रखनी चाहिए अगर मनुष्य नफरत पैदा करता है तो उसके दिल में नफरत बढ़ती रहती है और हमारी नफरत दूसरों की नहीं खुद के लिए विनाशकारी होती है। हमें याद रखना होगा कि भले ही सकारात्मक विचार और नफरत का

भाव मन में न आने देने के लिए हमें बहुत मेहनत करनी पड़ सकती है पर बिना मेहनत के क्या कभी कुछ मिलता है??? और फिर इस मेहनत से तो हमें धरती में ही स्वर्ग जैसे सुख की प्राप्ति होगी तो मेहनत करना तो बनता है ना?

नाम- प्रीति

कक्षा- बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

मेरा गांव मेरा बचपन

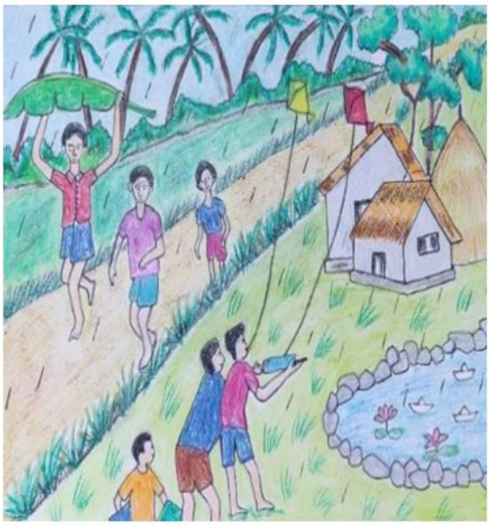

मेरे गांव जितना सुंदर कोई गांव ना होगा
न इसका कोई जोड़ न कोई मोलभाव होगा।
नन्हे नन्हे बच्चों की नन्हीं सी किलकारियां,
यहीं सुनाते दादा दादी कथा कहानी लोरियां।।

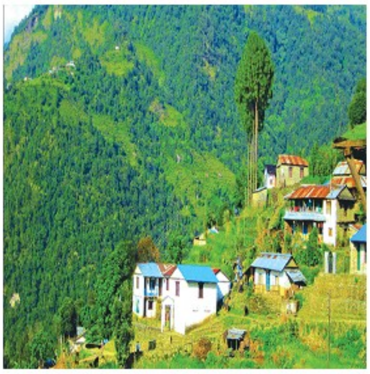

सुंदर बाग बगीचे ऊंचे नीचे खेत खलिहान
मेला रामलीला नवरात्रि हरेला है यहां की शान
सुबह सवेरे चिड़ियों के चहकने की आवाजें
बैलों की घंटियां गायों की रंभाने की आवाजें ।

हफ्ते भर में बेसब्री से शनिवार का इंतजार,
खुशियों की लहर लाता बचपन का वह इतवार।
वह ककड़ियों की चोरी, वह दोस्तों की टोली
वह गुल्ली-डंडे का खेल वही दोस्तों की बोली।

मेरे गांव मेरे बचपन सा सुंदर न कोई गांव होगा
न इसका कोई तोड़ ना कोई मोलभाव होगा ।

निधि भण्डारी

बस एक कदम और...

बस एक कदम और इस बार किनारा होगा,
बस एक नजर और इस बार इशारा होगा।
अंबर में बदली के पीछे, कोई किरन होगी।
अंधकार से लड़ने को कोई सितारा होगा।
बस एक पहल और इस बार उजाला होगा।
एक कदम और इस बार किनारा होगा।।
जो लक्ष्य को भेदे वह कहीं तो तीर होगा।
इस तपती भूमि में कहीं तो नीर होगा ।
एक प्रयास और अब लक्ष्य हमारा होगा।
एक कदम और इस बार किनारा होगा।।
मंजिल तक पहुंचे जो कोई राह तो होगी,
अपने मन को टटोलो कोई चाह तो होगी।
मंजिल तक पहुंचेगा कदम हमारा होगा,
बस एक कदम और इस बार किनारा होगा।
बस एक नजर और इस बार इशारा होगा।।

नाम- मोनिका

कक्षा-एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर

पौल्ट लगाना

आज भरे भोर ही उठकर जल्दी से घर का सारा काम करके, गोठ में बंधी भैंस को घास-पात देकर वो पौल्ट लगाने को तैयार हो रही थी। आज पौर बाखलिक जोशी ज्यू खेत में पौल्ट लगाना है। कब से बारिश हो रही ठहरी। खेत पानी से भरे हुए हैं। धान रोपाई मे देरी अब पूरी खेती को देर कर देगी। फिर जब आज वह पौल्ट लगाएगी तभी तो उसके खेतों में धान रोपने आएंगी वो सब औरतें, जिनके जिनके यहाँ उसने पौल्ट लगाया है। आज पहाड़ों में जो गांव रोड के किनारे हैं वहाँ कुछ श्रम जरूर तकनीकी ने कम कर दिया है। बैलों की जगह ट्रैक्टर ले रहा है और कूल की जगह जल मशीन ले रही है। फिर भी कुछ काम अभी भी दूसरे के सहयोग और साथ पर ही हो रहे हैं आज भी। महिलाओं का श्रम कब कौन मशीन ले पाई है आज तक। इसलिए जब पूरा खेत तैयार हो जाता है रोपाई के लिए तब घुटनों तक लबालब मिट्टी और पानी के कच्यार में अनवरत दस से

बारह घंटे तक दिखेंगी टोलियों में ये महिलाएं। अदम्य साहस और ऊर्जा से पानी और सूरज को टक्कर देती हैं ये। यह सब सुव्यवस्थित परंपरा चली आ रही है वर्षों से पौल्ट पर। कमर आधी झुकी हुई, रंग बिरंगी परिधानों में हरे भरे खेतों के बीच एक अलग ही दुनिया का दर्शन कराती है इनकी टोली। जिस दिन आ जाएगी कोई धान रोपने की मशीन उस दिन खत्म हो जाएगी यह पौल्ट की परंपरा भी। बिखर जाएगा यह श्रम विनिमय भी। हम देखते हैं की महज काम के बदले काम लेना भर नहीं है यह। पौल्ट लगाना हमारी पहाड़ी संस्कृति का एक गंभीर और महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। पहाड़ में संसाधनों की कमी के बावजूद जो हमारे पुरखों ने जीवन शैली के साथ साथ सुखद परंपराओं की मजबूत परिपाटी विकसित की है वह अद्भुत है। मनुष्य ने जब से अपने को थोड़ा विकसित किया उसने सामूहिकता को जरूरी समझा, जो झुंड में रहने से बिल्कुल अलग था। सामूहिकता ने मनुष्य में जिम्मेदारियां विकसित की। मानव ने एक दूसरे के साथ न सिर्फ सामूहिक कार्यों में अपितु संवेदनाओं में भी इसे जगह दी। आज जब पूँजीवादी दौर में बाजारवाद अप ने चरम रूप में पैर पसारे हुए हमें

न्यूक्लियर फैमिली की ओर धकेलने का लगभग सफल प्रयास कर रहा है तब इस दौर में ऐसे सामूहिक कार्यों के द्वारा ही हम अपने भीतर मासूमियत भरी सामूहिकता को सहेजनें का काम कर रहे हैं। हालांकि यह सहभाव दिनोंदिन सिमटता जा रहा है। किंतु आज भी हमारे आमा बुबु ने इसे जीवित रखा है, जिसे अब हमारी पीढ़ी को न सिर्फ आगे बढ़ाना चाहिए बल्कि इसे और विस्तार देना चाहिए। जिसकी वजह से हमारे अंतर्मन में प्रेम भावना, परोपकार और सहज मानवीयता के गुणों का संचार होता है।

डॉ0 भावना उपाध्याय

असिस्टेंट प्रोफेसर (हिंदी विभाग)

जो भी है चलता जाता है

जो भी है चलता जाता है
क्या सुना कभी तुमने
यह विश्व कहीं पर रुका हुआ?
 या थमी सागर की लहरें हैं?
यह पर्वत अडिग जो दिखता
कभी जगह से हिला नहीं ?
जो भी है चलता जाता है ...

निर्माण नाश स्तंभ टिकी,
परिवर्तन की अपनी गाथा है,
कभी रुका नहीं न रुक सकता
 जो भी है चलता जाता है...

जो भी है चलता जाता है
जो आज है, कल क्या होगा
यह तो बस समय बतलाता
जो भी है चलता जाता है ..।।

नाम-आशा भाकुनी
कक्षा-बीए षष्टम् सेमेस्टर

मोदी सरकार का मंत्रालय

मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल का पहला कैबिनेट विस्तार होने के बाद मंत्रालय का बंटवारा बुधवार की देर रात कर दिया गया । इसमें कानून मंत्रालय और शिक्षा मंत्रालय समेत कई अहम मंत्रा लय में भारी फेरबदल किया गया है। जबकि नए और अनुभवी चेहरों को मोदी कैबिनेट में मौका दिया गया है। 43 मंत्रियों को शपथ दिलाई गई है । इनमें जहां 37 नए चेहरें हैं तो वहीं दूसरी तरफ 7 वे मंत्री हैं जिन्हें प्रमोशन कर कै बिनेट रैंक का दर्जा दिया गया है इसके बाद अब कुल 77 मंत्री हो गए हैं । आइये जानते हैं किसे कौन से मंत्रालय की जिम्मेदारी दी गई है-

कैबिनेट मंत्री

राजनाथ सिंह- रक्षा मंत्री

अमित शाह- गृह मंत्रालय और को-ऑपरेशन मंत्रालय

भूपेन्द्र यादव- श्रम एवं पर्यटन मंत्रालय

नितिन गडकरी- सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय

निर्मला सीतारमण- केन्द्रीय वित्त मंत्रालय . कॉर्पोरेट अफेयर्स मामलों के मंत्रालय

नरेन्द्र सिंह तोमर- कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय

एस. जयशंकर- विदेश मंत्रालय

अर्जुन मुंडा- आदिवासी मामलों के मंत्रालय

स्मृति ईरानी- महिला एवं बाल कल्याण विभाग

पीयूष गोयल- कॉमर्स एंड इंडस्ट्री , कंज्युमर अफेयर्स, फूड एंड पब्लिक डिस्ट्रीब्यूशन और टेक्सटाइन मिनिस्ट्री

प्रहलाद जोशी- संसदीय कार्य मंत्री, कोयला और माइन

धर्मेंद्र प्रधान- शिक्षा और स्किल डेवलपमेंट

नारायण राणे- लघु एवं मध्यम उधोग

सर्बानंद सोनोवाल- पोर्ट, शिपिंग और आयुष

मुख्तार अब्बास नकवी- अल्पसंख्यक मंत्रालय

विरेंद्र कुमार- सामाजिक न्याय एवं आधिकारिता

गिरिराज सिंह- ग्रामीण विकास और पंचायती राज

ज्योतिरादित्य सिंधिया- नागरिक उड्डयण मंत्रालय

आरसीपी सिंह- स्टील

अश्विनी वैशणव- रेलवे, संचार और इलेक्ट्रॉनिक्स और इंफोर्मेशन

पशुपति पारस- खाद्य प्रसंस्करण मंत्री

गजेंद्र शेखावत- जल शक्ति

किरण रिजीजू- कानून एवं न्याय मंत्र

आरके सिंह- ऊर्जा

हरदीप पुरी- पेट्रोलिय एवं गैस और शहरी विकास

मनसुख मंडाविया- स्वास्थ्य और केमिकल फर्टिलाइजर

भूपेंद्र यादव- पर्यावरण और श्रम

महेंद्र नाथ पांडेय- भारी उद्योग

पुरुषोत्तम रूपाला- मत्स्य

जी किशन रेड्डी- संस्कृति, पर्यटन और नॉर्थ-ईस्टर्न रिजन डेवलपमेंट

अनुराग ठाकुर- सूचना प्रसारण मंत्रालय और खेल

स्वतंत्र प्रभार

1-राव इन्द्रजीत सिंह सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय .
योजना मंत्रालय; तथा कॉर्पोरेट मामलों के मंत्रालय में राज्य मंत्री

2-डॉ. जितेन्द्र सिंह विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय , पीएमओ, कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय में राज्य मंत्री ; परमाणु ऊर्जा विभाग में राज्य मंत्री तथा अंतरिक्ष विभाग में राज्य मंत्री

राज्य मंत्रालय

1-श्रीपद वाई नाईक - बंदरगाह, नौवहन और जलमार्ग मंत्रालय ; तथा पर्यटन मंत्रालय में राज्य मंत्री

2-फग्गन सिंह कुलश्ते - इस्पात मंत्रा लय में राज्य मंत्री ; तथा ग्रामीण विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री

3-प्रह्लाद सिंह पटेल - जल शक्ति मंत्रालय ; तथा खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री

4-अश्विनी चौबे - उपभोक्ता मंत्रालय खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण और पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय में राज्य मंत्री

5-अर्जुन राम मेघवाल - संसदीय कार्य मंत्रालय और संस्कृति मंत्रालय में राज्य मंत्री

6-वीके सिंह- सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय और नागरिक उड्डयन मंत्रालय में स्वतंत्र प्रभार

7-श्रीकृष्ण पाल- ऊर्जा मंत्रालय और भारी उद्योग में राज्य मंत्री

8-दानवे रावसाहेब दादाराव- रेल मंत्रालय. कोयला मंत्रालय और स्टील व खान मंत्रालय में राज्य मंत्री

9-रामदास अठावले- सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय

10-साध्वि निरंजन ज्योति -उपभोक्ता खाद्य मामलों और खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण राज्य मंत्री. ग्रामीण विकास राज्य मंत्री

11-संजीव कुमार बाल्यान- मत्यस्य एवं पशुपालन और डेयरी राज्य मंत्री

12-नित्यानंद राय- गृह राज्य मंत्री

13-पंकज चौधरी- वित्त राज्य मंत्री

14-अनुप्रिया सिंह पटेल- वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री

15-एसपी सिंह बघेल- कानून एवं न्याय राज्य मंत्री

16-राजीव चंद्रशेखर - कौशल विकास एवं उधमिता राज्य मंत्री और इलेक्ट्रोनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री

17-शोभा करांदलजे- कृषि राज्य मंत्री

18-भानू प्रताप सिंह वर्मा- सूक्ष्म लघु एवं मध्य उधम मंत्रालय राज्य मंत्री

19-दर्शन विक्रम जरदोश- कपड़ा और रेल राज्य मंत्री

20-वी. मुरलीधरन- विदेश राज्य मंत्री

21-मीनाक्षी लेखी- संसदीय कार्य राज्य मंत्री

22-सोम प्रकाश- वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री

23-रेणुका सिंह सरूता- आदिवासी मामलों के राज्य मंत्री

24-रामेश्वर तेली- पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस राज्य मंत्री

25-कैलाश चौधरी- कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री

26-अनुप्रिया देवी- शिक्षा राज्य मंत्री

27-ए. नारायणस्वामी- सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्य मंत्री

28-कौशल किशोर- हाउसिंग एवं अर्बन एफेयर्स राज्य मंत्री

29-अजय भट्ट- रक्षा राज्य मंत्री

30-बीएल वर्मा- उत्तर पूर्वी राज्यों के विकास राज्य मंत्री

31-अजय कुमार- गृह राज्य मत्री

32-देवुसिंह चौहान- कम्युनिकेशन राज्य मंत्री

33-भगवंत खुबा-नया एवं नवीकरणीय ऊर्जा राज्य मंत्री

34-कपिल मोरेश्वर पाटिल- पंचायत राज राज्य मंत्री

35-प्रतिमा भौमिक- सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्य मंत्री

36-डॉक्टर सुभाष सरकार- शिक्षा राज्य मंत्री

37-भगवत कृष्णराव कराड- वित्त राज्य मंत्री

38-डॉ. राजकुमार रंजन सिंह- विदेश राज्य मंत्री

39-डॉ. भारती प्रवीण पवार- स्वास्थ्य राज्य मंत्री

40-बिशेस्वर टुडू- आदिवासी राज्य मंत्री

41-शांतनु ठाकुर- बंदरगाह, नौवहन और जलमार्ग मंत्रालय राज्य मंत्री

42-डॉ. मुंजपाड़ा महेन्द्रभाई-महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री

43-जॉन बिरला- अल्पसंख्यक राज्य मंत्री

44-डॉ. एल. मुरुगन- मत्स्य एवं पशुपालन और डेयरी राज्य मंत्री व सूचना प्रसारण राज्य मत्री

45-निशित प्रमाणिक- गृह राज्य मंत्री और युवा मामलों और खेल राज्य मंत्री

नाम-विनीता गोस्वामी

कक्षा- बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

उत्तराखंड- वर्तमान मंत्रीमंडल

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी: (12 विभाग) मंत्रिपरिषद, कार्मिक एवं अखिल भारतीय सेवाओं का संस्थापना विषयक कार्य, सतर्कता, सुराज, भ्रष्टाचार उन्मूलन एवं जनसेवा, गृह, कारागार, नागरिक सुरक्षा एवं होमगार्ड एवं अर्द्धसैनिक बल, राज्य संपत्ति, राजस्व, न्याय, सूचना, तकनीकी शिक्षा, नागरिक उड्डयन, वित्त, वाणिज्य कर, स्टांप एवं निबंधन, नियोजन।

सतपाल महाराज कैबिनेट मंत्री (8 विभाग): सिंचाई, बाढ़ नियंत्राण, लघु सिंचाई, जलागम प्रबंधन, भारत नेपाल उत्तराखंड नदी परियोजनाएं, पर्यटन, संस्कृति एवं धर्मस्व, लोक निर्माण विभाग।

डॉ.हरक सिंह रावत (7 विभाग): वन, पर्यावरण संरक्षण एवं जलवायु परिवर्तन, श्रम, कौशल विकास एवं सेवायोजन, आयुष, आयुष शिक्षा, ऊर्जा एवं वैकल्पिक ऊर्जा।

बंशीधर भगत (5 विभाग): विधायी एवं संसदीय कार्य, खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले, शहरी विकास, आवास, सूचना एवं विज्ञान प्रौद्योगिकी।

बिशन सिंह चुफाल (4 विभाग) : पेयजल, वर्षा जल संग्रहण, ग्रामीण निर्माण और जनगणना।

सुबोध उनियाल (7 विभाग): कृषि, कृषि शिक्षा, कृषि विपणन, उद्यान एवं कृषि प्रसंस्करण, उद्यान एवं फलोद्योग, रेशम विकास, जैव प्रौद्योगिकी।

डॉ.धनसिंह रावत (5 विभाग): सहकारिता, प्रोटोकॉल, आपदा प्रबंधन एवं पुनर्वास, उच्च शिक्षा, चिकित्सा स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा।

रेखा आर्या (4 विभाग): महिला सशक्तीकरण एवं बाल विकास, पशुपालन, दुग्ध विकास, मत्स्य।

यतीश्वरानंद (4 विभाग): भाषा, पुनर्गठन, गन्ना विकास एवं चीनी उद्योग, ग्राम्य विकास।

गणेश जोशी (4 विभाग) : सैनिक कल्याण, उद्योगिक विकास, लघु सूक्ष्म एवं मध्यम उद्यम, खादी एवं ग्रामोद्योग ।

अरविंद पांडे (6 विभाग) : विद्यालय शिक्षा (बेसिक), विद्यालय शिक्षा (माध्यमिक), खेल, युवा कल्याण, पंचायती राज, संस्कृत शिक्षा।

नाम-विनीता गोस्वामी

कक्षा- बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

काश ! जिंदगी सचमुच एक किताब होती,
पढ़ सकती मैं कि आगे क्या होगा,
क्या पाऊंगी मैं और क्या दिल खोयेगा,
कब थोड़ी खुशी मिलेगी औ' कब दिल रोयेगा?

काश जिंदगी सचमुच एक किताब होती
फाड़ती लम्हें जिन्होंने मुझे रुलाया है।
जोड़ती पन्ने जिन्होंने मुझे हंसाया है,
हिसाब लगाती क्या खोया क्या पाया है?

काश जिंदगी सचमुच एक किताब होती
वक्त से आंखे चुराकर पीछे चली जाती
टूटे सपनों को फिर से मैं सजाती
अपने अरमानों को पूरा मैं कर पाती।

काश जिंदगी सचमुच एक किताब होती
कुछ पन्नों को याद कर कुछ को भूल जाती
पन्नों को पलट बीते लम्हों में खो जाती
जो बिछुड़ गए उन्हें फिर से पास पाती।

नाम- अनीता भाकुनी
कक्षा-बी.ए. षष्ठ सेमेस्टर

कॉलेज का पहला दिन

कॉलेज का पहला दिन किसी भी छात्र के जीवन में एक नई शुरूआत होती है। विघालय के अनुशासित जीवन के बाद कॉलेज आता है, जो हमें स्वतंत्रता के साथ-साथ जिम्मेदारी प्रदान कर हमारे व्यक्तित्व का नये सिरे से विकास करता है। इस जीवन में हम एक स्वतंत्र पक्षी की तरह महसूस करते हैं। दरअसल यह स्वतंत्रता का भाव बड़े लोग बोल बोलकर हमारे अंदर भर देते हैं।

कॉलेज में मेरा पहला दिन 3/10/ 2020 गुरुवार का था। मेरे जीवन की यह एक महत्वपूर्ण घटना थी और बहुत महत्वपूर्ण समय था। मेरे लिए यह एक अविस्मरणीय दिन भी है मुझे इस दिन का उत्सुकता से इंतजार था। 2 अक्टूबर 2020 गांधी जयंती के दिन अपने विघालय से स्थानांतरण प्रमाण पत्र तथा चरित्र प्रमाण पत्र लेने के बाद मैंने स्थानीय कॉलेज में दाखिला लिया, जो हुकुम सिंह बोरा राजकीय महाविघालय के

नाम से जाना जाता है। हुकुम सिंह बोरा सोमेश्वर के एक महान स्वतंत्रता

संग्राम सेनानी रहे हैं। सुंदर वातावरण तथा घने वृक्षों के बीच स्थापित यह महाविघालय दूर से ही अपनी ओर आकर्षित करता है। कालेज के पहले दिन कुछ घबराहट थी और उत्सुकता भी। इसलिए यह दिन मेरे लिए कुछ अजीब सा था, बहुत हलचल भरा, शोर-शराबे वाला, नए दोस्तों और नए अध्यापकों वाला। किंतु यह नया-नया कब मुझमें समाता चला गया और कब मैं इसमें घुल- मिल गई इसका पता ही नहीं चला।

नाम-रुपाली रावत

कक्षा-बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

मेरी क्लास

बी.ए.फर्स्ट ईयर का अंदाज निराला है,

मस्ती मौज यह हम सब का नारा है।

लड़ते झगड़ते हैं पर दोस्त भी पक्के हैं,

ऐसे ही हम सब फर्स्ट ईयर के बच्चे हैं।

विपिन-धीरज-रवि की अलग टोली है,

मोनू,नीरज क्रिकेट प्लेयर,ज्योति भोली है।

राना केमिस्ट्री स्टार, भगवती फुटबॉलर कमाल है,

पवन हेड ब्वॉय,सौम्या के क्वेश्चन हजार हैं।

विनीता,हेमा गुड गर्ल, मनीषा को नींद का खुमार है।।

काजोल-अंकिता हैं सबके साथ हर पल,

कविता के पास एक स्माइल हर बार है ।

हीरा का लंच पाने के लिए होती फाइट है,

मेरा इन दोनों से बाण्ड बहुत ही टाइट है।

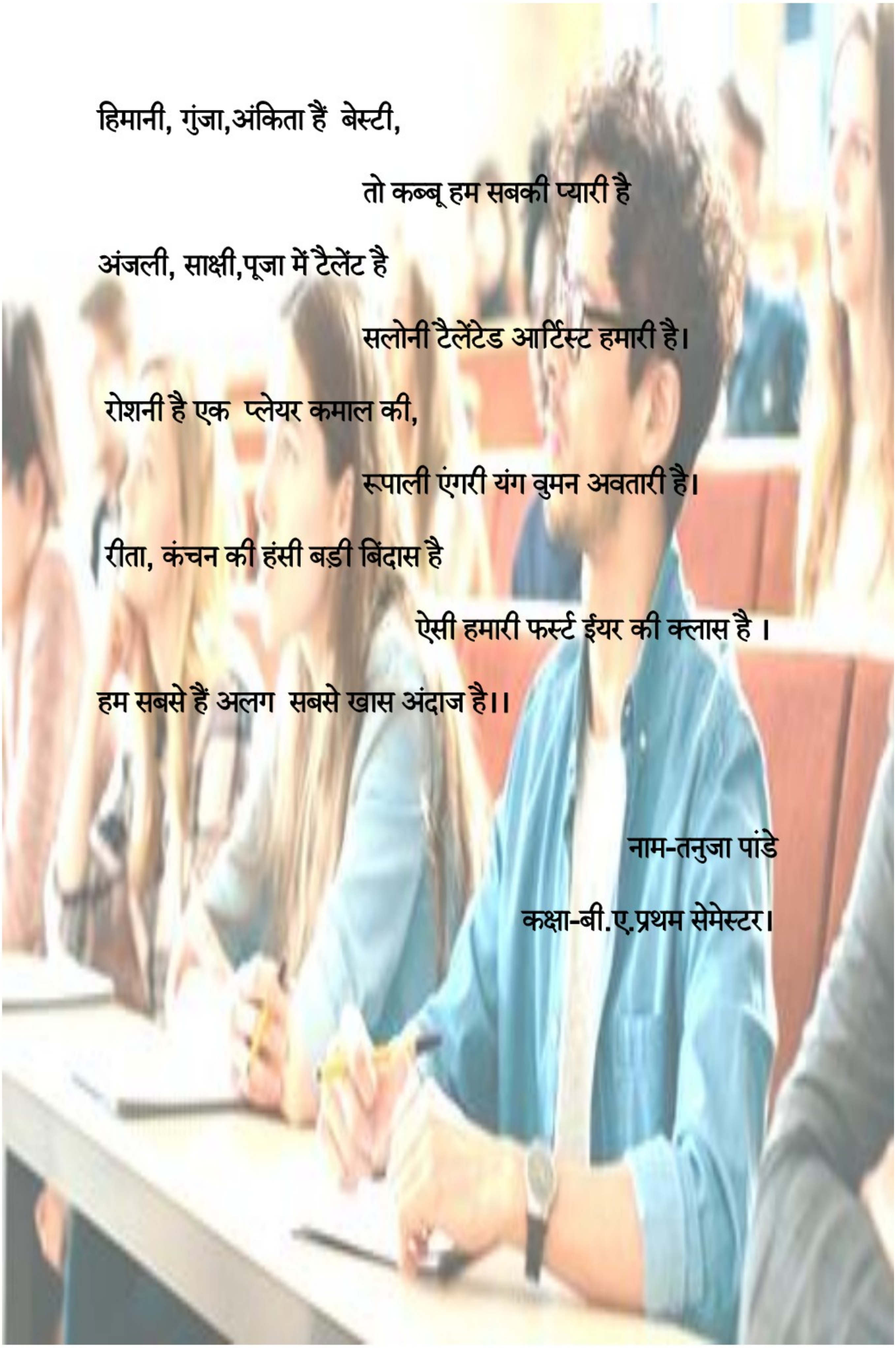

हिमानी, गुंजा,अंकिता हैं बेस्टी,

तो कब्बू हम सबकी प्यारी है

अंजली, साक्षी,पूजा में टैलेंट है

सलोनी टैलेंटेड आर्टिस्ट हमारी है।

रोशनी है एक प्लेयर कमाल की,

रूपाली एंगरी यंग वुमन अवतारी है।

रीता, कंचन की हंसी बड़ी बिंदास है

ऐसी हमारी फर्स्ट ईयर की क्लास है ।

हम सबसे हैं अलग सबसे खास अंदाज है।।

नाम-तनुजा पांडे

कक्षा-बी.ए.प्रथम सेमेस्टर।

पर्यावरण संरक्षण का संदेश देता लोक पर्व हरेला

हरेले का पर्व ऋतु परिवर्तन का सूचक है। सामाजिक, धार्मिक और पारिवारिक महत्व के इस पर्व को पर्यावरण संरक्षण के रूप में मनाया जाता है। बैसाखी और होली की तरह ही यह भी एक कृषि प्रधान त्यौहार है।

हरेले से नौ दिन पूर्व घर में स्थित पूजा स्थल पर छोटी-छोटी डलियों में मिट्टी डालकर सात बीजों को बोया जाता है, जिसमें गेहूं ,जौ, बाजरा, भट्ट, गहत, रैंस मक्का आदि प्रमुख अनाज होते हैं। दसवें दिन अर्थात् हरेले के दिन इस हरेले को काटकर भगवान था घर के मुख्य द्वार की देहली पर चढ़ाकर परिवार की समृद्धि की कामना की जाती है। सावन के महीने में मनाया जाने वाला यह त्यौहार मुख्यतः भगवान शिव को समर्पित है। यहां के लोगों का यह पूर्ण विश्वास है कि भगवान शिव का निवास यहीं देवभूमि है। इसलिए श्रावण मास को हरेले में भगवान शिव के परिवार की पूजा अर्चना की जाती है। भगवान शिव, माता पार्वती और भगवान गणेश की मूर्तियां जिन्हें 'डिकारे' कहा जाता है, शुद्ध मिट्टी से बना कर प्राकृतिक रंगों से सजाई संवारी जाती हैं।

हरेला पर्व फसल चक्र का सूचक भी माना जाता है। हरेला प्रकृति के साथ एक संतुलन साधने वाले त्योहारों में से एक है। पहाड़ों में ऐसा माना जाता है कि जिसका हरेला सबसे बड़ा होता है और सबसे हरा होता है उसे उस

साल कृषि में उतना अधिक फायदा होगा। कहा जाता है कि इसी अंदाज में पुराने लोग अपने फसलों की भविष्यवाणी कर लिया करते थे। पौराणिक रूप से ही नहीं हरेले का महत्व वैज्ञानिक दृष्टि से भी है। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग की समस्या से दुनिया भर के देश परेशान हैं। इसके असर को कम करने के लिए सभी जरूरी प्रयास तलाश किए जा रहे हैं। उत्तराखंड का लोक पर्व हरेला पर्यावरण संरक्षण की दिशा में हमारे पूर्वजों द्वारा उठाया हुआ एक समझदारी भरा व महत्वपूर्ण कदम है। हरेले में बोये जाने वाले बीज और उगने वाले पौधे न सिर्फ परिवार की खुशहाली को बताते हैं, बल्कि इस धरती की सुख समृद्धि की कामना भी करते हैं। हरेली में जो पौधे उगाए जाते हैं वे प्राकृतिक संतुलन को बनाए रखने में मददगार साबित होते हैं। इसलिए आज आवश्यकता है कि इस लोकपर्व को विश्व पर्व के रूप में संरक्षित किया जाए और इसके महत्व को समझते हुए इसे विश्व पर्व के रूप में मनाया जाए। उत्तराखंड में हरेला पर्व

मुख्यतः चैत्र, सावन व आश्विन मास में बोया जाता है। तीनों समय पर बोये जाने वाले हरेले जहाँ एक ओर मौसम के बदलाव के सूचक हैं, वहीं पर्यावरण के प्रति उत्तराखंड वासियों के लगाव और उसके संरक्षण के लिए उनकी चिंता का भी सूचक है।

नाम-सूरज सिंह नयाल कक्षा-बीए प्रथम सेमेस्टर

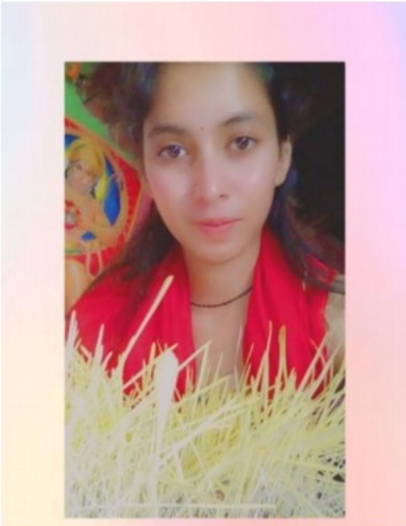

सोमेश्वर

राजकीय महाविद्यालय सोमेश्वर में हरेला पर्व पर पौधरोपण किया गया। इस क्रम में अब महाविद्यालय में निबंध, पोस्टर और हरियाली तीज सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं और कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम में प्राचार्य प्रो. योगेश कुमार शर्मा, राष्ट्रीय सेवा योजना के संयोजक डॉ. सीपी वर्मा, डॉ. बलदेव राम, जगदीश प्रसाद आदि थे।

महिला सशक्तिकरण एवं विभिन्न योजनाएं

केंद्र सरकार द्वारा देश की प्रत्येक महिला के लिए कुछ महत्वपूर्ण योजनाएं चलाई जा रही हैं जिनका लक्ष्य हर स्त्री को सशक्त करना है। आज हमारे देश में हर क्षेत्र में महिलाएं किसी न किसी भूमिका में नजर आ रहीं हैं।समाज के उत्थान में इनकी भागीदारी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है ।आज हर महिला पुरूष से कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है। प्राचीन समय में जिन महिलाओं को घर से बाहर नहीं निकलने दिया जाता था वही आज जीवन के हर क्षेत्र में सबसे आगे नजर आ रही हैं। यह सब संभव हुआ है संविधान के प्रावधानों एवं सरकार के प्रयासों के कारण।

" जिम्मेदारी संग नारी

भर रही है उड़ान

ना कोई शिकायत

ना कोई थकान।"

सरकार द्वारा नारी सशक्तिकरण के लिए वर्तमान में विभिन्न योजनाएं चलाई जा रहीं हैं। हम सभी इनसे परिचित हों और इनका लाभ स्वयं उठाते हुए ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं तक इनकी समुचित जानकारी पहुंचा सके इसी उद्देश्य से यह आलेख है-

1- प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना- मोदी सरकार द्वारा चलाई गई यह सफल योजना है। प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना मई 2016 को शुरू हुई थी। इस योजना के तहत गृहणियों को रसोई गैस सिलेंडर उपलब्ध कराए गये। सरकार तेल कंपनियों को हर एक कनेक्शन पर 1600₹ की सब्सिडी देती है। जिन परिवारों के पास बीपीएल कार्ड हैं वह इसका लाभ उठा सकते हैं।

2- बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना -

यह योजना संपूर्ण भारतवर्ष में लागू है। यह योजना उन

महिलाओं की मदद करती है जो घरेलू हिंसा या किसी भी प्रकार की हिंसा का शिकार होती हैं। उसे पुलिस,कानूनी एवं चिकित्सीय सेवाएं प्रदान की जाती हैं। पीड़ित महिला टोल फ्री नंबर 181 पर कॉल करके यह सुविधा ले सकती है।

3- सुरक्षित मातृत्व आश्वासन सुमन योजना-

इसकी शुरूआत अक्टूबर 2019 को हुई थी। इस योजना के अंतर्गत महिलाओं एवं शिशुओं की जीवन सुरक्षा के लिए निशुल्क स्वास्थ्य सेवाएं सरकार द्वारा प्रदान की जाती हैं। इस योजना का महत्वपूर्ण उद्देश्य माता और नवजात शिशुओं की मृत्यु दर को कम करना है।

4- फ्री सिलाई मशीन योजना-जो महिलाएं सिलाई कढ़ाई में रूचि रखती हैं ,उनके लिए भारत सरकार द्वारा फ्री सिलाई मशीन योजना चलाई गई है। सरकार की तरफ से हर राज्य में 50 हजार से अधिक महिलाओं को निशुल्क सिलाई मशीन प्रदान करने की बात इसमें कही गई है। इसके अंतर्गत 20 से 40 वर्ष की महिलाएं आवेदन कर सकती हैं। 5-महिला शक्ति केंद्र योजना- यह योजना महिलाओं को सशक्त अनुभव कराने के लिए चलाई गई है। 2017 से यह योजना राष्ट्रीय, राज्य और जिला स्तर पर संचालित हो रही है।

6- सुकन्या समृद्धि योजना-

22 जनवरी 2015 से सुकन्या समृद्धि योजना की शुरूआत की गई थी। इसके तहत 10 साल से कम उम्र की बालिकाओं के लिए एक सावधि जमा खाता की योजना है, जिस पर पीपीएफ की भांति ब्याज दिया जाता है।

नाम-तनुजा पांडे

कक्षा- बी.ए.प्रथम सेमेस्टर

Creativity and Career Guidance

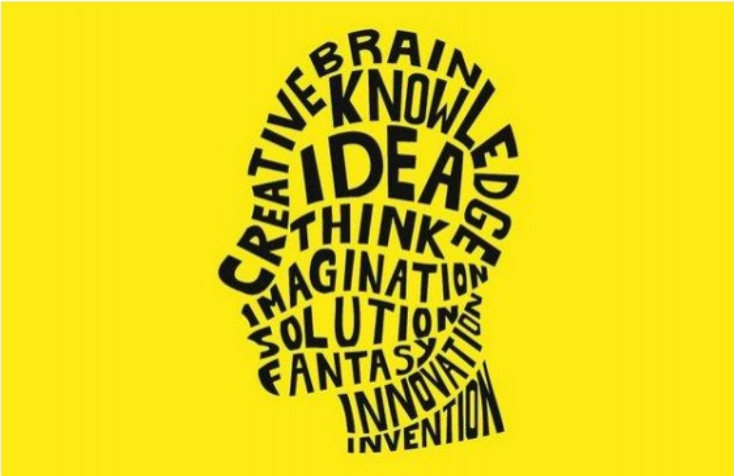

Today's education system weights uniqueness in thoughts and actions. It agrees the present generation to revelation their opinion in various ways. This makes it very noticeable that our youths need to work on the quality called "CREATIVITY". Creativity sounds like an abstract thought process and one that is very natural to conclude is inherited and cannot be inculcated. However, the good news is that Originality can be adopted and nurtured. There is a desideratum of fostering ingeniousness among our children.

What is creativity?

Creativity is a thought, an idea or an action that is accomplished differently and has a positive impact. This emerging Articles

formation or action might not be intentional or set in advance, and it just tints within a person.

In the present scenario, we often see job advertisements looking for people who think out of the box and know how to handle situations in a smart way. So when and where do our young generation learn these 21st-century skills?

Our education system to some degree is giving opportunities in this field. Presentations, Public Speaking, and projects are added to the curriculum. Students have the freedom to express themselves in more than one way. However, not every student shows similarity in thinking. Some shower random thoughts while others need a lot of time to shape and present their ideas.

There are also some children for whom anything that needs innovation and imagination becomes very difficult. These students are satisfied with the knowledge they are provided with and they prefer to move ahead with that limited input. For these students, the good news

is that Inspiration can be cultivated.

Some of the ways to substitute Creativity are- Don't guess; let the creator tell you.Each child has his way of bringing up the conception. It is wise to listen to the child's idea rather than interpreting, by doing guesswork.

Highlight on the process not the result

Tactics to the same assignment can be different. As far as the process is veridical, there is a chance that the result will be fair. Children take the risk of creating something new; we must appreciate the effort and the learning involved in the process. If not a great result; the child will get involved in a lot of learning during the process.

Comparison

Comparison is a very old theory that every child is unique and should not be compared to another child.

Comparing two students does not help much. On the other side encouraging and giving ideas and tips wherever required fosters creativity. However; as adults, we can help children develop creativity by giving some clues or prompting them with some ways to reach the result.

All the above theories of articles look very simple and many of us might ken them. What makes it arduous is to practice them. We as adults are acclimated to visually perceive things in a structured way. We find it difficult to accept new ways of doing things. The day we start looking at things with a different perspective and encourage out of the box thinking; creativity will flourish.

As education systems are diversifying and expanding, the creation of new jobs and opportunities are changing the way individuals make their career choices.

With such changes in place, career planning has become more complex and confusing.

What is CareerGuidance?

Career guidance is the process of helping individuals (school/college students or professionals) in making adequate educational and occupational choices and in taking career decisions based on the demand and requirements of the future of work.

Career guidance helps individuals make a shift from the general understanding of life and work to a more specific understanding of the realistic and practical career options that are available to them.We as mentors should take the accountability to stimulate great minds and take the society at least one imaginative step ahead.

Dr Rakesh Pandey
Assistant Professor,
Dept.Mathematics

Days of my Childhood,

Are still fresh in the ambers of memories.
It was the happy time
And mischieves were at their prime
How funny were the fights!
How attractive were the fairytales and dreams.

How tasty were chocolates and ice-creams.
Time is swift, it has to pass
Those moments can not come back, alas!

Deepak Singh Bajeli
Bsc 1st semester

Quantum Computing

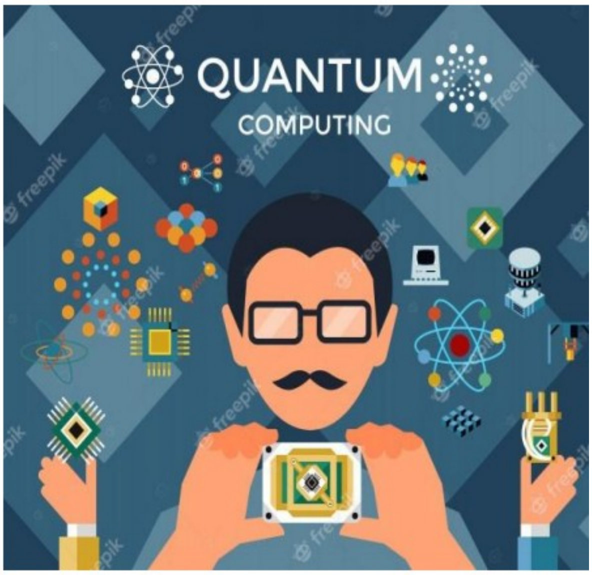

Quantum theory is the branch of physics that deals with theworld of atoms and the smaller (subatomic) particles inside them. You might think atoms behave the same way as everything else in the world, in their own tiny little way—but that's not true: on the atomic scale, the rules change and the "classical" laws of physics we take for granted in our everyday world no longer automatically apply. As **Richard P. Feynman**, one of the greatest physicists of the 20th century once put it: *"Things on a very small scale behave like nothing you have any direct experience about... or like anything that you have ever seen."*

Quantum computing began in 1980 when physicist PaulBenioff proposed a quantum mechanical model of the Turing machine. Richard Feynman and Yuri Manin later suggested that a quantum computer had the potential to simulate things a classical computer could not feasibly do. In 1994, however, interest in quantum computing rose dramatically when mathematician Peter Shor developed a quantum algorithm, which could find

the prime factors of large numbers beyond the capability of state-of-the-art classical algorithms. In recent years, investment in quantum computing research has increased in the public and private sectors. On 23 October 2019, Google AI, in partnership with the U.S. National Aeronautics and Space Administration (NASA), claimed to have performed a quantum computation that was infeasible on any classical computer. Classical

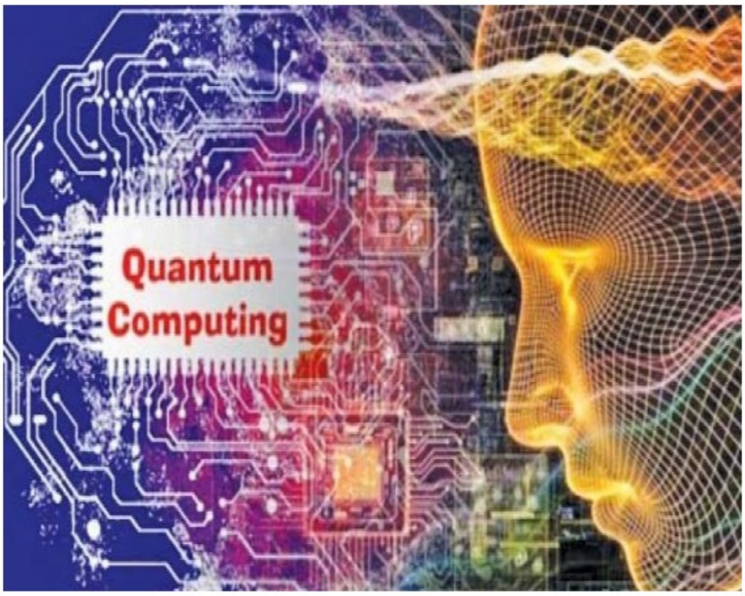

computers, which includesmart phones and laptops, encode information in binary “bits” that can either be 0s or 1s. In a quantum computer, the basic unit of memory is a quantum bit or qubit. Qubits

are made using physical systems, such as the spin of an electron or the orientation of a photon. Where a bit can store either a zero or a 1, a qubit can store a zero, a one, both zero and one, or an infinite number of values in between—and be in multiple states (store multiple values) at the same time. These systems can be in many different arrangements all at once, a property known as quantum superposition. If you blow on something like a flute, the pipe fills up with a standing wave: a wave made up of a fundamental frequency and lots of overtones or harmonics. The wave inside the pipe contains all these waves simultaneously: they're added together to make a combined wave that includes them all. Qubits use superposition to represent multiple states (multiple numeric values) simultaneously in a similar way. Just as a quantum computer can store multiple numbers at once, so it can process them simultaneously. Instead of working in serial (doing a series of things one at a time in a sequence), it can work in parallel (doing multiple things at the same time). Although people

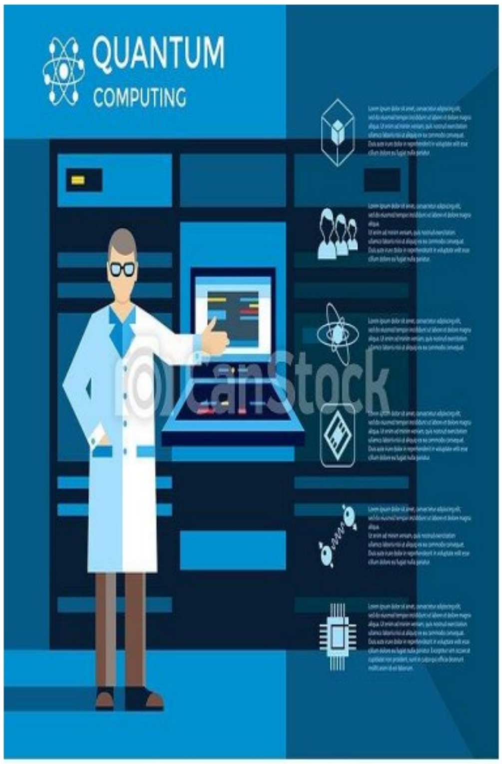

© CanStockPhoto.com - csp58797008

often assume that quantum computers must automatically be better than conventional ones, that's by no means certain. So far, just about the only thing we know for certain that a quantum computer could do better than a normal one is factorisation: finding two unknown prime numbers that, when multiplied together, give a third, known number. In 1994, while working at Bell Laboratories, mathematician Peter Shor demonstrated an algorithm that a quantum computer could follow to find the "prime factors" of a large number, which would speed up the problem enormously. Shor's algorithm really excited interest in quantum computing because virtually every modern computer (and every secure, online shopping and banking website) uses public-key encryption technology based on the virtual impossibility of finding prime factors quickly (it is, in other words, essentially an "intractable" computer problem). If quantum computers could indeed factor large numbers quickly, today's online security could be rendered obsolete at a stroke. But what goes around comes around, and some researchers believe quantum technology will lead to much stronger forms of encryption. In 2017, Chinese researchers demonstrated for the first time how quantum encryption could be used to make a very secure video call from Beijing to Vienna. Does that mean

quantum computers are better than conventional ones? Not exactly. Apart from Shor's algorithm, and a search method called Grover's algorithm, hardly any other algorithms have been discovered that would be better performed by quantum methods. Given enough time and computing power, conventional computers should still be able to solve any problem that quantum computers could solve, eventually. In other words, it remains to be proven that quantum computers are generally superior to conventional ones, especially given the difficulties of actually building them.

Dr. Aanchal Sati

Assistant Professor

Department of Physics

Books Are Our Best Friends

Life is not easy to live without friends.
When it comes to Books,
They can be our best friends.
Good books enrich our mind
With good thoughts and console
Just like good friends.
We learn a lot while reading book,
When alone, just pick a book
And start to feel relax.
Books are our best friends
They can be good or bad,
But it is our responsibility
To pick out of the flackes.
Friendship with good books
Make you a good person.
And help you many ways.

Rupali Rawat

B.A. First Sem.

RELEVANCY OF SWAMI VIVEKANANDA IDEOLOGY FOR YOUTH IN MODERN INDIA

Swami Vivekanada was an Indian Hindu monk and a disciple of the famous mystic Ramakrishna Paramhansa, his name was recognized in Bengal for his enlightenment and as a patriotic saint, he emerged as an international fame at the world parliament religion at Chicago on 11 September,1893 where he gave a glorious speech which made him celestial being.

The parliament of religion opened on 11 September 1893 in Chicago, nearly 7000 people representing different religions and so many countries attended the conference. Swamiji addressed the audience with the words *"Sisters and brothers of America",* which made a remarkable impression on the listeners. Angararika Dharmpala the General Secretary of Mahabodhi Society who was also present in the Parliament of Religion said:

"Our good brother swami Vivekananda has done a great and inestimable service not only in bringing forward the pure doctrine of Hindu philosophy but has succeeded in convincing the intelligent and enlightened portion of the America public of the fact

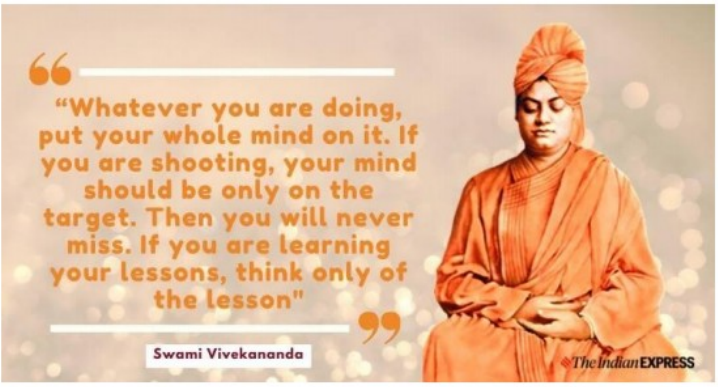

that India is the mother and seat of all true philosophy and metaphysics"

Swamiji became a global celebrity overnight. He came to be seemed as a true representative of Indian Civilization. Vivekananda is an epochal Character in modern Indian history ranking with the greatest. He has motivated countless generations of India by

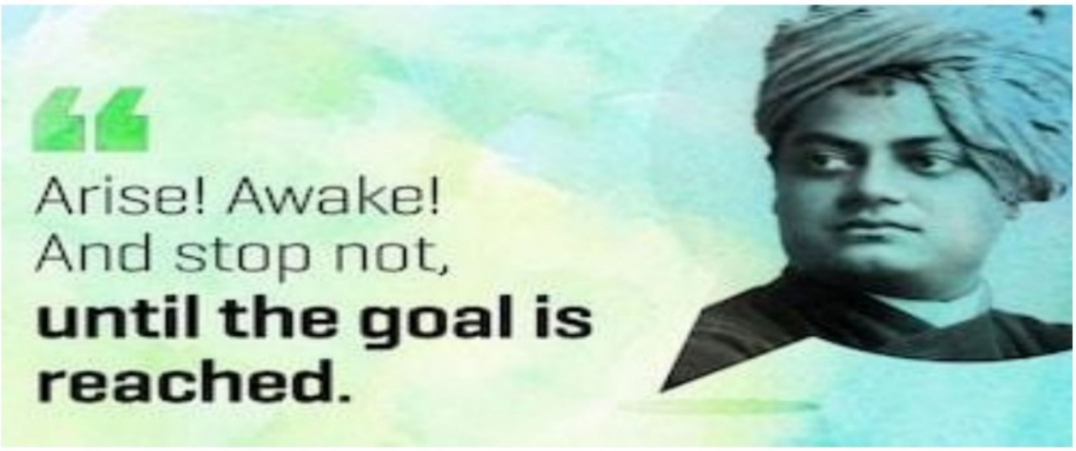

inspiring them. It is remarkable that for what one

needed many more years to do swamiji did it in a very short period of time, only in 38 years of his life span.

He was much influenced by the city Almora in the Kumaun region of Uttarakhand which also had a special place in the lives of other great personalities like Rabindranath Tagore, Mahatma Gandhi, Sri Aurbindo, Pandit Jawaharlal Nehru and Uday

Shankar. Swami Vivekananda made several visits to Almora. He travelled throughout India after passing away of his Guru Ramakrishna, there he keeps on teaching Vedanta and Philosophies, and in 1890 he had walked from Nainital to Almora. He spent several days meditating in a cave on a hill close to the Kasar Devi temple. He had strong faith in the youth of India as he knew that the future of the country was in the hands of the youngsters and he quoted for them:

"My faith is in the younger generation, the modern generation out of them will come my workers. They will work out the whole problem like lions. "

His ideas about the youth are over relevant today when we are feeling our youth weakens and diverted from the exact track. Our youth is attracting towards a false world due to which their will power also declines. Swamiji was aware of the compilations which we are facing today. He was able to imagine hundred years earlier about the upcoming situations. He said: *"Anything that makes you weak physically, intellectually and spiritually, reject as poison".*

He designed a road map of success which should be followed by every youth and for this he appealed, *"Do not lower your goals to level of your abilities*

instead raise your abilities to the height of your goals"

According to swamiji the external world is simply a suggestion, the occasion, which sets you to study your own mind, but the object of study is always your own mind. All knowledge therefore secular or spiritual is in the human mind. He said: *"If you can think that infinite power, infinite knowledge and indomitable energy lie within you, and if you can bring out that power, you can also become like me"*.

Swamiji discussed the concept of Karma in the Bhagvad Gita. He describe Karma yoga as a mental discipline that allows a person to carry out his/her duties as a service to the entire world, as a path to enlightenment. The Gita provides four paths for achieving the goal. **Bhakti-yoga:** the path of unattached action, **Karma-yoga:** the path of true knowledge, **Jhana-yoga** and **Dhana-yoga** the path of meditation. Also he gave the key to success. *"Take up one idea, make that idea your life-think of it, dream of it, and live on that idea. Let the brain, muscle, nerves, every part of your body, be full of that idea, and just leave every other idea alone. This is the way to success"*.

How India can achieve true progress: He was aware that India will be fragmented and divided and this will become stumbling block in the progress of India. He convinced that India should end her fragmentation and stay united. *"For our national welfare India must gather up of its scattered spiritual forces. India must be a union of those whose hearts beat to*

the same spiritual tone How will the task of regeneration of India are achieved. He gave a roadmap and affirmed the importance of education and spirituality. He was also assertive that women must be educated, for he believed that it is the women who mould the next generation and hence the destiny of the country. He had an immense faith in the capabilities of women for that he said: *"Women must be put in the portion to solve their*

own problems in their own way. No one can or ought to do this for them and our Indian women are as capable of doing it as any in the world".

Swamiji spoke about rejuvenation of India; India needs another round of rejuvenation. India should have material wealth and physical power; no one takes meek and weak seriously. But India's confidence must come from its ancient civilization

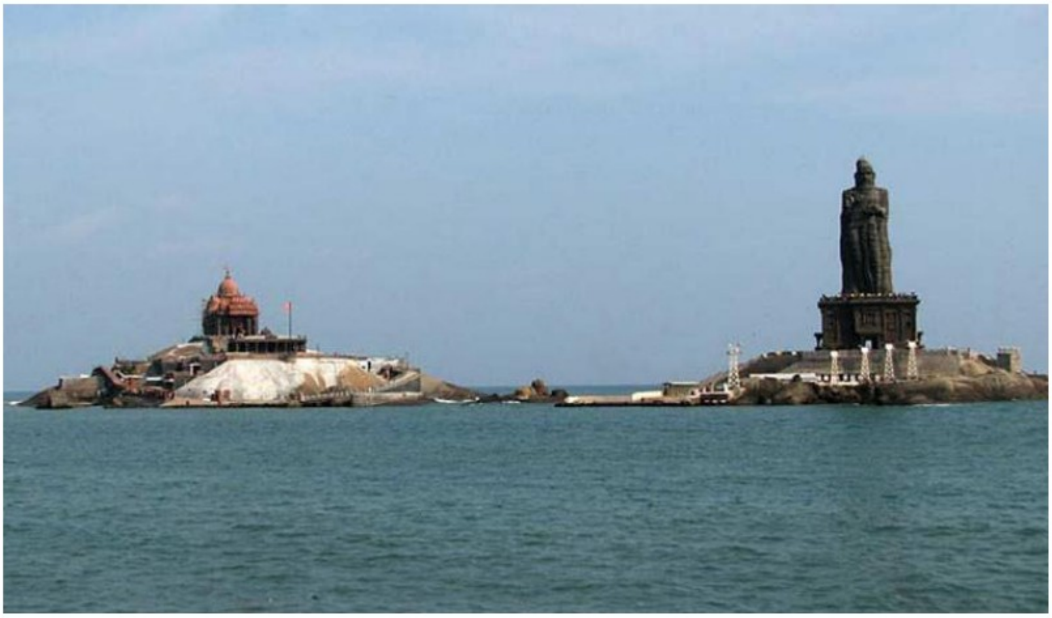

and deep spirituality.In Swamiji messages lies the secret of character building and nation building. They are as relevant today as they were in his lifetime. They were not esoteric and unintelligible. He laid down the essential of success,

"Purity, patience and perseverance are the three essentials to success and above all love"

He believes in the power of spirituality and education therefore quoted: *"I am a Dharmic Universalist, not a Hindu Nationalist".*

It is very difficult to explain or discuss Swami Vivekanada ideology in few words. Swamiji is not only an ideology but he is a history in himself. We the people of India are very likely that we are born in a country like this where Swami Vivekanada was born and enlightened the whole world by his excellence. Today the time has arrived where we have not only to discuss the Swamiji's message but we should encourage the people to follow the path which he shown to the betterment of India is moving towards a refined version and definitely one day we will able to fulfill the dream of Vivekananda.

Himadri Arya

(Department of English)

IMAGINATION

You should imagine things
To build your future
And your concentration,
So keep on thinking.
Imagine about fairies sometimes
And about your future.
Imagry is the game of mind
Helps your dreams come true
And also helps you to shine.
Imagination is mind's purification
Helps in achieving social position.
With the help of Imagination
Directors get fame
And writers get recognition.
You can also achieve the same.
So keep on fancying
Until turns into reality.

Deepak Singh Bajeli
Bsc 1st semester

INSECT AS A POLLINATOR

A pollinator is anything that helps carry pollen

from the male part of the flower (stamen) to the female part of the same or another flower (stigma).Insect pollination maintains genetic diversity in plant populations (Kearns et al., 1998), and provides advantages such as increased fruit quality and quantity, and seed production and fertility, leading to greater vigour of the next generation (Albrecht et al., 2012). The movement of pollen must occur for the plant to become fertilized and produce fruits, seeds, and young plants. Some plants are self-pollinating, while others may be fertilized by pollen carried by wind or water. Still, other flowers are pollinated by insects and animals - such as bees, wasps, moths, butterflies, birds, flies and small mammals, including bats.Three-fourths of the world's flowering plants and about 35 percent of the world's food crops depend on animal pollinators to reproduce. More than 3,500 species of native bees help increase crop yields. Some scientists estimate that one out of every three bites of food we eat exists because of animal pollinators like bees, butterflies and moths, birds and bats, and beetles and other insects.

Pollinators visit flowers in their search for food (nectar and pollen). During a flower visit, a pollinator may accidentally brush against the flower's reproductive parts, unknowingly depositing pollen from a different flower. The plant then uses the pollen to produce a fruit or seed. Many plants cannot reproduce without pollen carried to them by foraging pollinators

Insect pollinators are essential for foodproduction, improving the yield and quality of crops. Changing farm land use, diseases, intensive agricultural management practices, environment pollution, invasive alien species, climate change and agrochemicals threaten pollinator populations and the pollination service they provide. This has certainly resulted in declining abundance and species richness in both managed and wild pollinator population services. As with The passing time the demand of food increases with the main motto of securing food demand, here is a huge need of conserving and managing insect pollinators

Dr.Prachi Tamta

AssistantProfessor

Departmentof Zoology

Positive Life

- Yesterday is gone , tomorrow has not yet come we have only today , Get it begin!!
- Always hope for the best..!!
- The happiness of your life depends upon the quality of your thoughts
- Think good and it will be good..!!
- Never stop learning because life never stop teaching
- What hurts you today
  Make you stronger tomorrow
- Life is like a mirror smile at it and it smiles back at you
- Never lose today's happiness by thinking about yesterday's pain
- Sit alone, You will find all answers
- Don't compare yourself to anyone , Be unique.

Kanchan Bhakuni

B.Sc. II sem

"बच्चों का रचनासंसार"

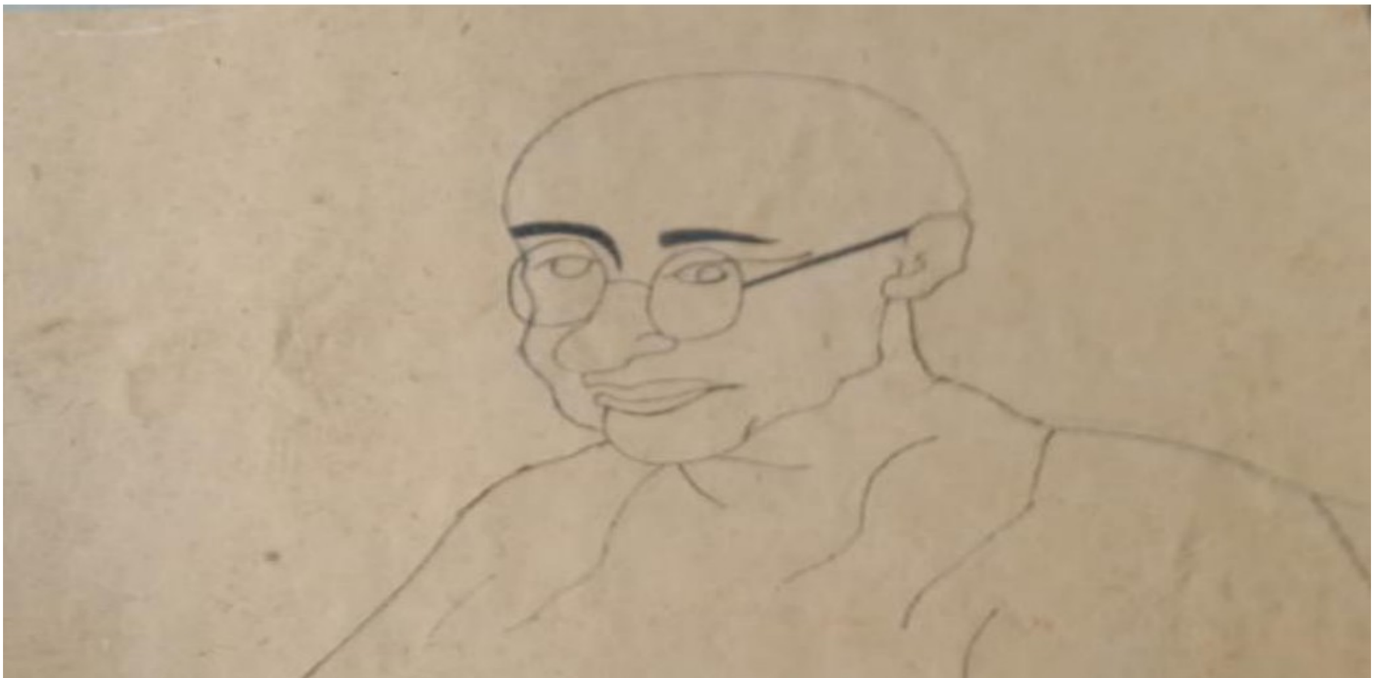

लीला राना, कक्षा-एम ए. चतुर्थ सत्रार्ध

वृक्ष है सोना, इसे न खोना।
एक पेड़ सौ पुत्र बराबर
पेड़ बचाओ
SAVE TREE SAVE
वृक्ष धरा का भूषण दूर करे प्रदूषण
अगर हम वृक्ष लगाएंगे तब ये हमारे काम आएंगे।
OXYGEN DONATION

मुंशी प्रेमचंद

कक्षा MA II sem
मो॰नं॰ 7579173565
gmail - amitabst92@gmail.com.

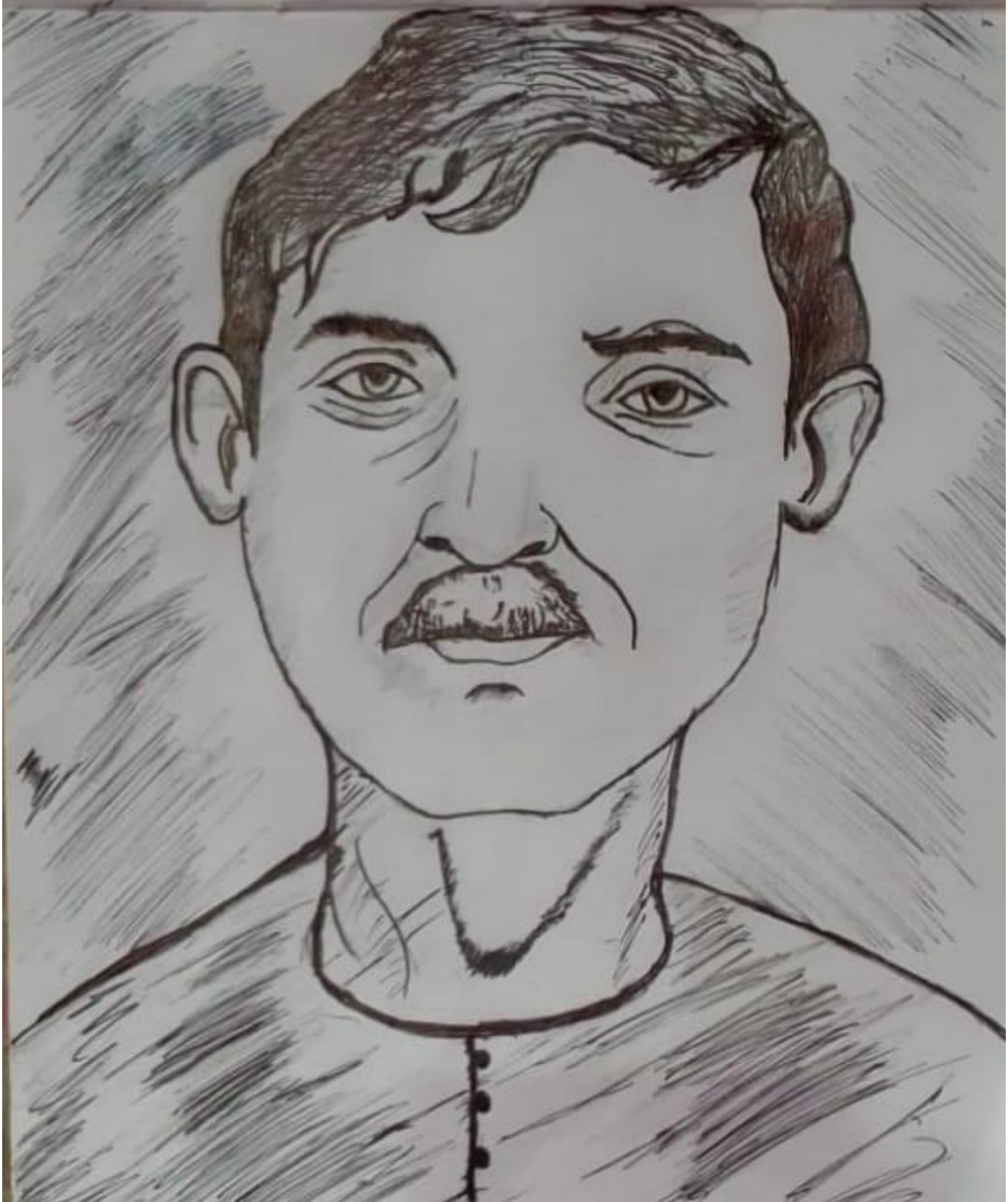

Triple Camera
Galaxy A30s

लोकार्पण
हुकुम सिंह बोरा राजकीय महाविद्यालय
सोमेश्वर (अल्मोड़ा)

आजादी का अमृत

Samsung Triple Came
Shot with my Galaxy A30s

हुकुम

HUKUM SINGH BORA
RNMENT DEGREE COLLEGE, SOMESHWAR (ALMORA

STATE LEVEL POSTER COMPETITION
ON
WORLD ENVIRONMENT DAY
(05 JUNE 2021)
Organized By
Department of Botany
&
Department of Chemistry
H.S.B.Govt.Degree College Someshwar
Almora (Uttarakhand)
उत्तराखण्ड राज्य
Poster Theme – "Ecosystem Restoration"
Date 05 June 2021
Time 09.00AM TO 05.30 PM
About Competition Rules
1. Participants should be regular students of the UG/PG College/ University of Uttarakhand State Only
2. Registration is Compulsory
3. It is Mandatory to Upload college/University Id of student On the registration form
4. Decision of Judges will be Final
5. Upload your entries in the registration form between 09.00 AM to 05.30 PM. Registration will remain active in the given time slot only
6. E-certificate will be provided to the top three Participants
7. Result will be Declared on 25 June 2021 on the whats app group
8. Student can use A4/A3 size of paper for making Poster on Required theme only.
Organizing Comittee
Convener
Mr. Sanju
Assistant Professor
Department ofBotany
H.S.B.Govt.Degree CollegeSomeshwar
Almora (Uttarakhand)
Co-Convener
Mr. Jagdish Prasad
Assistant Professor
Department of Chemistry
H.S.B.Govt.Degree College Someshwar
Almora (Uttarakhand)
Patron
Dr. Y.K.Sharma
Principal
H.S.B.Govt.Degree College Someshwar
Almora (Uttarakhand)
For query Cotact Mob. 8449719712, 9456309163

HUKUM SINGH BORA GOVERNMENT DEGREE COLLEGE, Someshwar (Almora)
हुकुम सिंह बोरा राजकीय महाविद्यालय, सोमेश्वर (अल्मोड़ा)
एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार
शिक्षा के बदलते प्रतिमान: चुनौतियाँ एवं सम्भावनाएं
दिनांक : मंगलवार, ०८ जून २०२१
गूगल मीट लिंक :
मुख्य वक्तागण
आयोजक: हिंदी विभाग ,हुकुम सिंह बोरा रा० महा० सोमेश्वर, अल्मोड़ा

HUKUM SINGH BORA
GOVERNMENT DEGREE COLLEGE,SOMESHWAR(ALMORA)
ORGANIZES
NATIONAL WEBINAR
ON THE OCASSION OF
7TH INTERNATIONAL DAY OF YOGA
(21stJUNE,2021)
"करो योग - रहो निरोग"
CHEIF GUEST
Prof. Narendra Singh Bhandari
Vice- Chancellor
Soban Singh Jeena University Almora, Uttarakahnd
INAUGURAL ADDERESS
Prof.(Dr.)Yogesh Kumar Sharma
Principal
KEYNOTE SPEAKER
Dr. Naveen Chandra Bhatt
HOD, Department of Yoga
Soban Singh Jeena
University, Almora
RESOURCE PERSONS:
Dr. D.N.Sharma
Vice President: International Naturopathy Organization
Member,Scientific Advisory Committee
Ministry of Ayush,Govt. of India
Dr. Seema Chauhan (Assistant Professor)
Department of Yogic Science
D.S.B Campus, Kumaun University Nainital
No Registration Fee
Click here to start your Registration
https://forms.gle/LuWUDvCuBv3ps1MJ8
To Join Webinar: All participants will get Google meet link on their Email ID / WhatsApp group
To Join group click here WhatsApp group
NOTE: E- Certificate will be provided to all the participants
Dr.Pushpa Bhatt
Assistant Professor
Dept. of Sociology
Co-Organizing Secretary
Aparna Singh
Assistant Professor
Dept. of History
Organizing Secretary
Dr. Archana Joshi
Assistant Professor
Dept. of History
Co- Convener
Puja
Assistant Professor
Dept. of Commerce
Convener

Webinar
on
GIS Applications & Career Opportunities
Organized By
Geography Department
Hukum Singh Bora Govt. Degree College,
Someshwar, Almora
In Collaboration with
NIGMT Foundation, New Delhi
Chief Patron
Dr. Kumkum Rautela
Director of Higher Education
Government of Uttarakhand
Patron
Dr. Y.K Sharma
Principal
Hukum Singh Bora Govt.
Degree College
Someshwar, Almora
Chief Guest
Dr. J.S. Rawat
Keynote Speaker
Mr. Ravindra Nath Tiwari
HOD, Geoinformatics
NIGMT Foundation
Dwarka, New Delhi
Convenor
Dr. C.P Verma
HOD, Geography Department
Hukum Singh Bora Govt.
Degree College
Someshwar, Almora
Dr. Rakesh Pandey
Assistant Professor
Date - 27th July, 2021 | Time - 02:00 pm
www.nigmt.org
info@nigmt.org

RUSA INSPECTION

उत्तराखंड | लेटेस्ट न्यूज़ | शिक्षा-

महाविद्यालय में रूसा फेज वन के कार्यों का किया निरीक्षण

August 21, 2021 · 1 min read

रेनबो न्यूज़ इंडिया * 21 अगस्त 2021

सोमेस्वर (अल्मोड़ा)। हुकुम सिंह बोरा राजकीय महाविद्यालय में रूसा के नोडल ऑफिसर डॉ० आनंद सिंह उनियाल द्वारा महाविद्यालय में फेज वन के तहत हुए कार्यों का निरीक्षण किया गया। इसके साथ उच्चीकरण के तहत हो रहे हैं कार्यों का भी निरीक्षण एवं अनुश्रवण उन्होंने किया। उन्होंने अब तक हुए समस्त कार्यों से संतुष्टि जताते हुए आगे के कार्यों के लिए आवश्यक दिशा निर्देश भी दिए।

प्राध्यापकों को निष्ठा एवं लगन से दूरस्थ और ग्रामीण क्षेत्रों के महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के प्रति अपने कर्तव्य निर्वहन के लिए उद्बोधित किया।

इस अवसर पर डॉ० बलदेव राम, डॉ० सी पी वर्मा, महाविद्यालय में रूसा के नोडल अधिकारी संजू, डॉ० राकेश पांडे, डॉ० अमिता प्रकाश एवं अपर्णा सिंह ने भी विचार रखे। बाद में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ० योगेश कुमार शर्मा ने आगंतुक अतिथियों का शॉल उड़ा कर एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर सभी का आभार व्यक्त किया।

सीएनई रिपोर्टर, सोमेश्वर/ अल्मोड़ा

हुकुम सिंह बोरा राजकीय महाविद्यालय सोमेश्वर (अल्मोड़ा) का राष्ट्रीय सेवा योजना का सात दिवसीय विशेष शिविर प्रारंभ हो गया है। इस मौके पर अतिथियों ने शिविरार्थियों को एनएसएस का महत्व समझाते हुए समाज सेवा के लिए प्रेरित किया।

महाविद्यालय में आयोजित शिविर का शुभारंभ खीराकोट के ग्राम प्रधान पवन जोशी एवं महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य बलदेव राम ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। मुख्य अतिथि प्रधान पवन जोशी ने शिविर का महत्व समझाते हुए शिविरार्थियों को अनुशासन की महत्ता समझाई। उन्होंने यह समझाने का प्रयास किया कि किस तरह समाज की सेवा कर सकते हैं। प्रभारी प्राचार्य बलदेव ने शिविरार्थियों को एनएसएस का महत्व समझाया। छात्रसंघ अध्यक्ष राहुल जलाल ने स्वच्छता के महत्व पर प्रकाश डालते हुए समाज सेवा में भागीदारी के लिए शिविरार्थियों को प्रेरित किया। कार्यक्रम अधिकारी डा. सीपी वर्मा ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए राष्ट्रीय सेवा योजना के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन छात्रा रूपाली रावत ने किया। उद्घाटन अवसर पर वंदना, स्वागत गीत भी प्रस्तुत किए गए। इस मौके पर नारायण बोरा, डा. आंचल सती, डा. प्राची टम्टा, डा. राकेश पांडे, कंचन भाकुनी, हिमानी बोरा, पवन पांडे, मनोज कुमार, विनीता गोस्वामी, निशा बोरा, रवींद्र कुमार, रीता नयाल, तनुजा पांडे, रूचि भट्ट, महेंद्र सिंह, शिवानी बोरा व गुंजन मिराल आदि कई शिविरार्थी मौजूद रहे।

ALMORA NEWS: शिविरार्थियों में भरी समाज सेवा की प्रेरणा, सोमेश्वर महाविद्यालय का सात दिवसीय एनएसएस विशेष शिविर शुरू

महाविद्यालय समाचारों के झरोखे से

सोमेश्वर में शुक्रवार को हुकुम सिंह बोरा राजकीय महाविद्यालय में स्वतंत्रता के 75 वीं वर्षगांठ पर अमृत महोत्सव के कार्यक्रम में मौजूद छात्राएं।

कर्नाटक, कविता पांडे, डा. विद्या कर्नाटक, अखिलेश थापा, एनसी जोशी, नवीन बिष्ट, गिरीश चंद्र पांडे, गौरव अवस्थी, मनीष तिवारी, शुभम जोशी, पूजा बगड़वाल, अंजलि राठौर, बृजेश पांडे, कंचन पांडे आदि मौजूद रहे।

की चौपाल आयोजित की। उन्होंने कहा कि केंद्र और राज्य सरकार स्वास्थ्य सुविधाओं को लेकर काफी प्रयासरत है। आक्सीमीटर, थर्मल स्कैनर, पीपीई किट आदि भी ग्राम प्रधानों को उपलब्ध कराए गए हैं। इसके अलावा 20 हजार रुपये

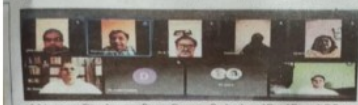

सोमेश्वर हुकुम सिंह बोरा राजकीय महाविद्यालय की ओर से आयोजित वेबिनार में विभिन्न राज्यों से विषय विशेषज्ञों ने हिस्सा लिया • जागरण

ऑनलाइन शिक्षण भविष्य की आवश्यकता

संस, सोमेश्वर : हुकुम सिंह बोरा राजकीय महाविद्यालय के हिंदी विभाग के तत्वावधान में शिक्षा के बदलते प्रतिमान : चुनौतियां एवं संभावनाएं, विषय पर वेबिनार हुआ। इसमें विभिन्न राज्य व क्षेत्रों के विषय विशेषज्ञों ने हिस्सा लिया। मुख्य अतिथि के रूप में संयुक्त निदेशक, उच्च शिक्षा डा. पीके पाठक ने उच्च शिक्षा एवं विभिन्न शिक्षा संबंधी सरकारी एवं प्रशासनिक पक्षों पर विचार रखे। मुख्य वक्ता प्रो. विनय विद्यालंकार ने विद्या एवं शिक्षा के अंतर को स्पष्ट करने के साथ इस वैश्विक महामारी के दौर में आ रही चुनौतियों और संभावनाओं पर विचार रखे। दूसरे वक्ता डॉ. जितेंद्र डी सोनी ने ऑनलाइन शिक्षण को भविष्य की आवश्यकता मानते हुए इससे जुड़ी तकनीकि जरूरतों को पूर्ण करने की बात कही। इससे पूर्व कार्यक्रम का शुभारंभ महाविद्यालय के प्राचार्य

मांगपत्र पर स... अनशन खत्म

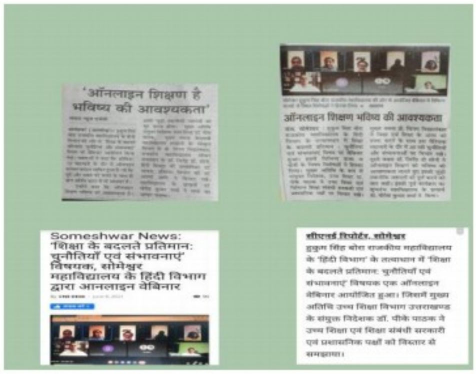

Higher Education Uttarakhand · 18 Jul ···

प्रकृति से जुड़े त्योहार हरेले के अवसर पर हुकुम सिंह बोरा राजकीय महाविद्यालय सोमेश्वर में दिनांक 16 जुलाई को ऑनलाइन माध्यम से प्राचार्य डॉ योगेश कुमार शर्मा के निर्देशन में इतिहास विभाग द्वारा छात्र छात्राओं हेतु वृक्षारोपण अभियान एवं विभिन्न प्रतियोगिता का आयोजन किया गया ।

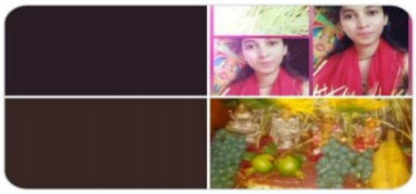

हिन्दुस्तान | शहर चुनें | Offer ई-पेपर

होम | फोटो | वीडियो | देश | राज्य | मनोरंजन

हुकुम सिंह बोरा राजकीय महाविद्यालय सोमेश्वर में हरेले के मौके पर ऑनलाइन प्रतियोगिता की गई। प्राचार्य डॉ. योगेश कुमार शर्मा ने इतिहास विभाग के संयोजन में हुए आयोजन का शुभारंभ [ऐप पर पढ़ें] उन्होंने अपने संबोधन में हरेले का सांस्कृतिक व सामाजिक महत्व बताया। उन्होंने पौधरोपण के साथ ही इसको सहेजने पर बल दिया। इसके अंतर्गत मेरा हरेला मेरी पहचान फोटो प्रतियोगिता के स्नातक वर्ग में कविता नेगी, माया व कंचन तिवारी तथा स्नातकोत्तर में ललिता नेगी, पूजा व

#सफलतापूर्वक #संचालित #राष्ट्रीय #वेबिनार #जियोइनफॉर्मेटिक्स #एप्लिकेशन और #कैरियर #अवसरों पर डॉ के साथ #JS #Rawat #National #Geospatial चेयर पर्सन #DST के तहत । #सरकार । #भारत और प्राचार्य डॉ. वी. के शर्मा, हुकुम सिंह बोरा सरकार #डिग्री #कॉलेज सोमेश्वर, #अल्मोड़ा, डॉ. सी. पी. वर्मा । #HOD. #भूगोल #विभाग । डॉ. राकेश पाण्डेय. #रिसर्चस्कोलर और #छात्र इस आयोजन को सफल बनाने के लिए सभी को धन्यवाद ।

Rate this translation

उत्तराखंड लेटेस्ट न्यूज़ शिक्षा-

महाविद्यालय सोमेश्वर में प्रेमचंद जयंती पर कथा सम्राट का भावपूर्ण स्मरण

सोमेश्वर (अल्मोड़ा) – 31 जुलाई को हुकुम सिंह बोरा राजकीय महाविद्यालय सोमेश्वर में प्रेमचंद की 141वीं जयंती मनाई गयी। युग प्रवर्तक कथाकार की जयंती के इस अवसर पर हिंदी विभाग द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद के साहित्यिक योगदान को स्मरण करते हुए वक्ताओं ने उन्हें न केवल एक महान साहित्यकार अपितु युग दृष्टा और युगसृष्टा लेखक कहा। इस अवसर पर हिंदी विभाग द्वारा कविता, निबंध, पोस्टर, तथा कथा वाचन का ऑनलाइन आयोजन किया गया।

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉक्टर योगेश कुमार शर्मा के मार्गदर्शन व निर्देशन में विविध प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। कार्यक्रम के अध्यक्ष प्राचार्य डॉ० शर्मा ने अपने संबोधन में कहा कि प्रेमचंद जैसे कथाकार शताब्दियों में एक ही होते हैं। अपनी मुफलिसी में भी प्रेमचंद ने समाज को एक अतुलनीय खजाना दिया है।

आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य महाविद्यालय में प्रतियोगिताएं आयोजित की गई

August 18, 2021 1 min read

आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में हुकुम सिंह बोरा राजकीय महाविद्यालय सोमेश्वर में 1857 से लेकर 1947 तक के स्वतंत्रता संग्राम की महत्वपूर्ण घटनाओं पर आधारित एक ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन महाविद्यालय के हिंदी विभाग के तत्वाधान में किया गया।

महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर योगेश कुमार शर्मा के निर्देशन में हुए इस कार्यक्रम में प्रश्नोत्तरी के अतिरिक्त महापुरुषों, क्रांतिकारियों एवं स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी नेताओं के जीवन पर आधारित स्लोगन लेखन की प्रतियोगिता, राष्ट्रगान तथा राष्ट्रगीत गायन प्रतियोगिता का भी आयोजन हुआ।

कार्यक्रम की संयोजक डॉक्टर अमिता प्रकाश ने बताया की महाविद्यालय के समस्त छात्र-छात्राओं ने आयोजित प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। साथ ही आजादी के प्रति अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति दी।

राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी क्लब का सदस्य बना महाविद्यालय सोमेश्वर

सोमेश्वर डिग्री कॉलेज डिजिटल लाइब्रेरी से जुड़ा

सोमेश्वर | संवाददाता

हुकुम सिंह बोरा राजकीय महाविद्यालय सोमेश्वर राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी क्लब का सदस्य बन गया है। महाविद्यालय प्रशासन का कहना है कि प्रदेश में क्लब का सदस्य बनने वाला यह पहला विद्यालय है। प्राचार्य प्रो. योगेश कुमार शर्मा ने यह जानकारी दी है। उन्होंने बताया है कि महाविद्यालय ने राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी क्लब की सदस्यता प्राप्त कर ली है। जो एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

यह भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अधीन एक प्रोजेक्ट है। जिसे आईआईटी खड़कपुर द्वारा संचालित किया गया है। इस लाइब्रेरी में पांच लाख से अधिक पुस्तकें एक ही प्लेटफार्म पर उपलब्ध हैं।

क्लब की सदस्यता में अद्यतन 100 सदस्यों का पंजीकरण सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष रजनीश कुमार के स्तर से किया गया है।

इस डिजिटल लाइब्रेरी के क्लब की सदस्यता ग्रहण करने के पश्चात अब प्राध्यापक और छात्र छात्राएं राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर की पुस्तकों का अध्ययन घर बैठे कर सकेंगे।

यह क्लब छात्र-छात्राओं को विभिन्न एक्टिविटीज के माध्यम से सीखने का अवसर प्रदान करता है। महाविद्यालय स्तर पर इस समिति के संरक्षक प्राचार्य प्रोफेसर योगेश कुमार शर्मा, डॉ. बलदेव राम, रजनीश कुमार, डॉ. आंचल सती हैं।

संचालन

- प्रदेश में खास सुविधा वाला पहला डिग्री कॉलेज बना
- आईआईटी खड़कपुर से है संचालित यह लाइब्रेरी

छपते-छपते

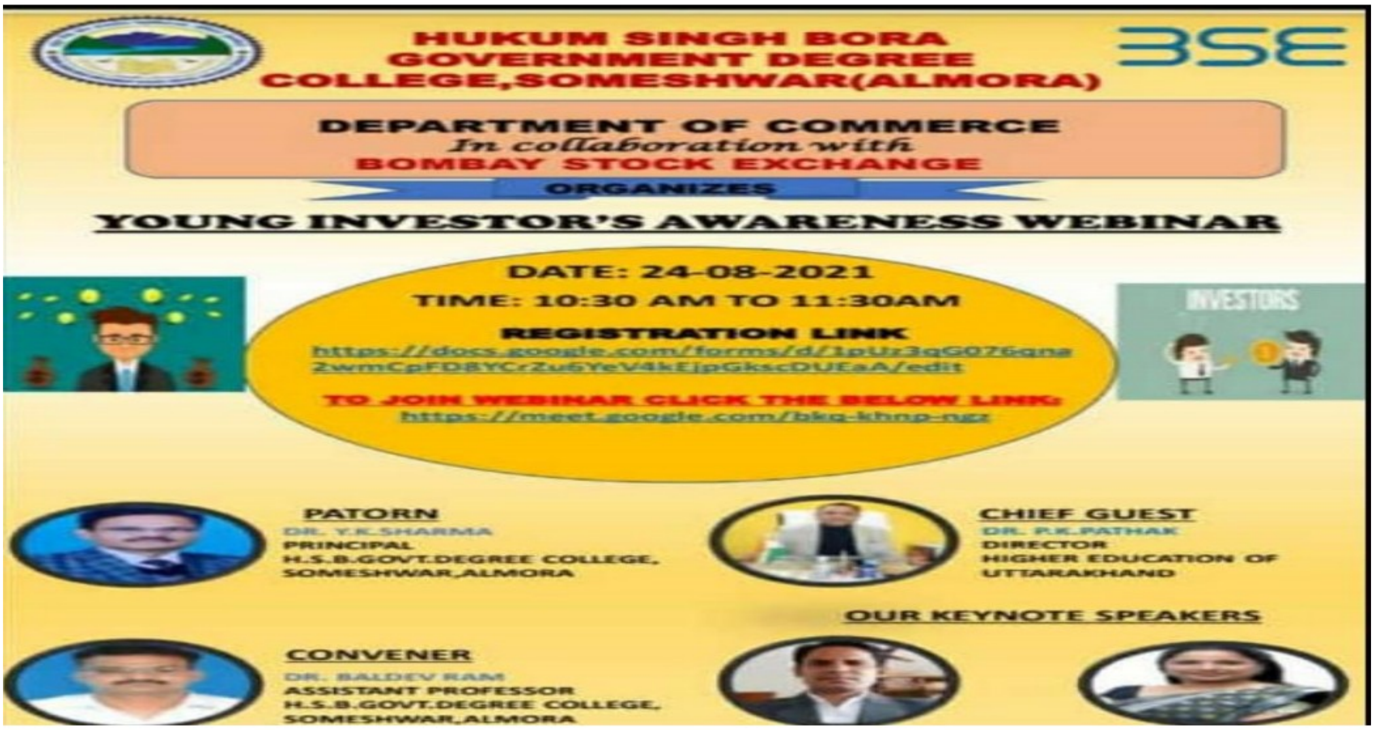

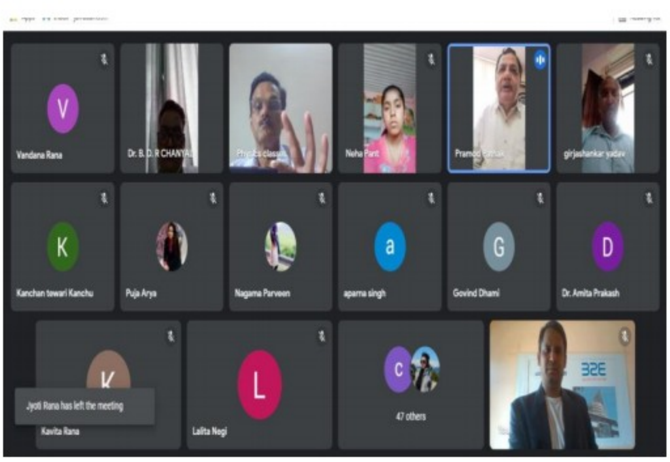

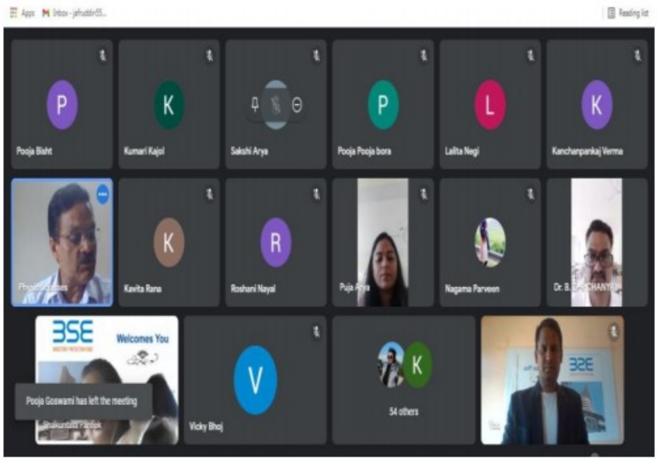

छोटे-छोटे निवेश से भविष्य करें सुरक्षित

सोमेश्वर (अल्मोड़ा)। राजकीय महाविद्यालय में वाणिज्य विभाग और मुंबई स्टॉक एक्सचेंज की ओर से युवा निवेशक जागरूकता विषय पर वेबिनार आयोजित किया गया। इसमें विशेषज्ञों ने छात्र-छात्राओं से कहा कि छोटे-छोटे निवेश कर भविष्य को सुरक्षित बनाया जा सकता है। उच्च शिक्षा निदेशक डॉ. पीके पाठक ने कहा कि सोच, समझ कर और पूर्ण जानकारी के साथ निवेश करना चाहिए। शकुंतला पारिक और जफरुद्दीन ने बचत और निवेश का अंतर बताया। प्राचार्य डॉ. योगेश कुमार शर्मा ने आभार जताया। संवाद

सीएनई रिपोर्टर, सोमेश्वर

हुकम सिंह बोरा राजकीय महाविद्यालय सोमेश्वर में वाणिज्य विभाग एवं मुंबई स्टॉक एक्सचेंज के संयुक्त तत्वाधान में एक दिनी वेबीनार आयोजित हुआ। जिसका विषय (YOUNG INVESTOR'S AWARENESS) 'युवा निवेशक जागरूकता' था।

वेबीनार में मुख्य अतिथि एवं उत्तराखंड उच्च शिक्षा निदेशक डॉ. पीके पाठक ने अपने व्याख्यान में निवेश के दौरान

उत्तराखण्ड टेली एजुकेशन नेटवर्क

एडुसैट

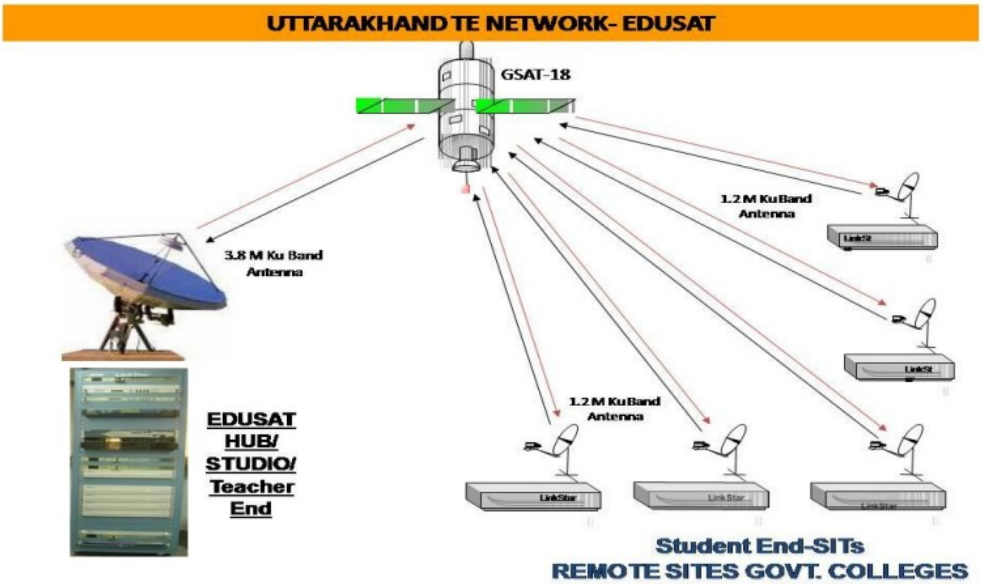

देश में प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा एडुसैट नेटवर्क कार्यक्रम विकसित किया गया था। इस प्रयोजन के लिए भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) द्वारा जीसैट–3 उपग्रह (EDUSAT) को 20 सितंबर 2004 को देश के सभी राज्यों में प्रौद्योगिक आधारित शिक्षा के अन्तर्गत कार्यक्रमों की प्रसारण जरूरतों को पूरा करने के लिए अन्तरिक्ष में स्थापित किया गया था। एडुसैट नेटवर्क उपग्रह संचार प्रणाली के अन्तर्गत कार्य करने वाली युक्ति है।

प्रदेश में वर्ष 2010 में डेकू इसरो, भारत सरकार, अहमदाबाद के सहयोग से उच्च शिक्षा विभाग उत्तराखण्ड हेतु स्थापित एडुसैट नेटवर्क के माध्यम से प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षा के अन्तर्गत दिसम्बर 2011 से विषय–विशेषज्ञों के विषय आधारित पाठ्यक्रमानुसार व्याख्यानों का प्रसारण कर प्रदेश के उच्च शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों को लाभान्वित किया जा रहा है। वर्तमान में प्रदेश के 47 राजकीय महाविद्यालयों में एडुसैट एस0आई0टी0 स्थापित हैं।

वर्ष 2020–21 से कोविड–19 के कारण एडुसैट नेटवर्क का उपयोग वर्चुअल क्लास रूम के रूप में सम्भव नही हो पाने के कारण उच्च शिक्षा के अध्ययनरत छात्र–छात्राओं को ऑनलाइन माध्यम से शैक्षणिक सामाग्री उपलब्ध कराये जाने हेतु **youtube** पर उच्च शिक्षा के प्रसार के लिए दिनांक 24.04.2020 से उच्च शिक्षा विभाग के **Uttarakhand Tele Education Network-EDUSAT** नामक चैनल का संचालन प्रारम्भ किया गया है। इस चैनल में अपलोड किये गए व्याख्यानों से उच्च शिक्षा के विद्यार्थी लाभान्वित हो रहे हैं।

(डॉ0 विनोद कुमार)
नोडल अधिकारी,एडुसैट

धन्यवाद